सोशल मीडिया से जुड़ें
DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 236, नई दिल्ली, रविवार 02 नवम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 'क्योंकि 2.0' से TIME100 तक, स्मृति ईरानी ने स्पार्क पहल से भारत...
06 भाषा बनाम भारतीयता
08 पर्यावरण पाठशाला : एक पेड़ हमें क्या सिखाता है?

क्या परिवहन विभाग द्वारा जनता से एडवांस में 15 साल का रोड टैक्स (कर) लेना और वाहन चोरी, जल जाने या किसी भी कारण से नष्ट होने पर रिफंड (वापिस) नहीं देना संविधान के अनुच्छेद 265 (केवल वैध कर वसूली) की भावना के खिलाफ नहीं है ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। भारत देश में किसी ने अपने लिए अपनी कार खरीदी और सरकार ने उस से कार/ वाहन पंजीकृत करने के समय 15 साल का रोड टैक्स (कर) एकमुश्त वसूल कर लिया और 5 साल या 15 साल से पहले ही कार / वाहन चोरी हो गया और पुलिस उसे बरामद नहीं कर सकी,

सवाल — जब गाड़ी ही नहीं है, तो बाकी 10 साल या बचे हुए समय का टैक्स सरकार क्यों रखे ?

कानूनी सच्चाई: भारत में अधिकांश राज्यों (जैसे उत्तर प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र आदि) में रोड टैक्स ₹लाइफ टाइम₹ यानी 15 साल के लिए एडवांस में लिया जाता है। इसके लिए सरकार का तर्क होता है कि वाहन को 15 साल तक रोड पर चलने का अधिकार दे दिया गया है, इसलिए पूरा टैक्स पहले ही लिया जाता है।"

लेकिन सवाल यह उठता हैं की क्या यह एक न्याय का असंतुलन नहीं है

1. अगर गाड़ी चोरी हो जाए या जल जाए या स्क्रैप हो जाए, तो वाहन मालिक द्वारा वाहन का उपयोग नहीं किया जा सका और जब वाहन मालिक द्वारा उस वाहन के द्वारा सड़को का प्रयोग किया ही नहीं तब उससे 15 साल के लिए लिया गया रोड टैक्स बाकी बचे हुए समय का वापस क्यों नहीं मिलता ?

2. सरकार रोड टैक्स एक मुश्त लेने के बाद क्या ₹सेवा के बदले कर' का सिद्धांत भूल जाती है, क्योंकि सेवा (रोड उपयोग) बंद हो गया है, पर उस पर सड़को का प्रयोग किए बिना भी उस वाहन का जो उपलब्ध ही नहीं का रोड टैक्स (कर) जारी है।

3. पुलिस रिपोर्ट के बाद भी आरटीओ या परिवहन विभाग रिफंड या टैक्स एडजस्टमेंट का कोई प्रावधान नहीं देता।

परिवहन विभाग को वाहन पंजीकृत करते समय

1. रोड टैक्स ₹प्रयोग के अनुसार₹ (Road Tax "Use-Based") वाहन मालिकों से लेना (चार्ज) करना चाहिए, ना की वाहन की आयु सीमा ("Age-Based") के अनुसार। जैसे बिजली या पानी का बिल — जितना उपयोग, उतना कर।

2. अगर गाड़ी चोरी हो जाए, तो आरटीओ (RTO) को टैक्स रिफंड या ऐडजस्ट नियम (Adjustment Policy) देनी / लागू करनी चाहिए

3. इससे जनता को न्याय मिलेगा और सरकार पर भरोसा बढ़ेगा।

4. अभी यह नीति जनविरोधी और असमान है क्योंकि यह "बिना उपयोग के कर" वसूलती है।

सुधार का सुझाव: इस पर दो प्रमुख सुधार मांगे जा सकते हैं:

1. रोड टैक्स = वाहन जांच प्रमाण पत्र (Road Tax = Vehicle Fitness) या वाहन द्वारा सड़को के प्रयोग (Actual Usage) के आधार पर लिया जाए।

2. चोरी/नष्ट/स्क्रैप गाड़ियों के लिए टैक्स रिफंड नीति बनाई जाए

निष्कर्ष: जिस वाहन का उपयोग नहीं हो रहा, उस पर टैक्स वसूलना अन्याय है। सरकार को चाहिए कि वह लाइफ टाइम एकमुश्त कर ("Lifetime Tax") की जगह सड़को के प्रयोग ("Pay-As-You-Use") सिस्टम लाए। जनता से एडवांस में 15 साल का कर लेना और वाहन चोरी या नष्ट होने पर रिफंड न देना संविधान के अनुच्छेद 265 (केवल वैध कर वसूली) की भावना के खिलाफ है।

दिल्ली में डीजल के वाहनों के पंजीकरण का शुल्क अन्य राज्यों से अधिक और रोड टैक्स (एकमुश्त लाइफ टाइम) 15 साल का क्यों?

संजय बाटला

दिल्ली परिवहन विभाग किस आधार पर दिल्ली में पंजीकृत डीजल वाहनों को जिन पर एनजीटी / सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सिर्फ दिल्ली की सड़को पर 10 साल के बाद चलने से पाबंदी लगा रखी है को डी रजिस्टर कर रहे हैं और कार के अन्य राज्यों की सड़को जहां उनको चलने की इजाजत है पर चलने या चलाने से किस नियम अधिनियम या रुल के अंतर्गत बाधित/रोक लगा रहा हैं, वह भी उन वाहनों से रोड टैक्स (एकमुश्त लाइफ टाइम) 15 साल का वसूल कर ?

दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट / एनजीटी के आदेश के तहत डीजल वाहनों को दिल्ली की सड़को पर चलने की अनुमति 15 साल की जगह 10 साल, फिर भी दिल्ली परिवहन विभाग डीजल वाहनो के पंजीकरण के लिए शुल्क अन्य राज्यों से अधिक चार्ज कर रहा है और साथ ही इन डीजल वाहनों से रोड टैक्स (एकमुश्त लाइफ टाइम) 15 साल के लिए सड़को पर चलने वाले वाहनों से लेना चाहिए वे वसूल रहा है आखिर क्यों ?

दिल्ली सरकार द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका के अनुसार दिल्ली सरकार दिल्ली में समय सीमा समाप्त कर चुके वाहनों को निरस्त करने के लिए वाहनों की आयु की जगह वाहनों द्वारा निकलने वाले प्रदूषण के आधार पर निरस्त करने की अपनी मांग बता चुकी है और उसी के तहत माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा लगी बंदिश को हटाने की मांग भी कर चुकी है।

अब प्रश्न यह उठता हैं की भारत सरकार के सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा डीजल वाहनों की आयु 15 साल निर्धारित है फिर दिल्ली में पंजीकृत डीजल वाहन की 10 साल कैसी और किस नियम, अधिनियम के अंतर्गत है संभव ?

दूसरा सवाल यह उठता हैं की जब दिल्ली की सड़को पर चलाने कि इजाजत डीजल वाहनों को 10 साल तो भी किस नियम अधिनियम के अंतर्गत दिल्ली परिवहन विभाग उनको डी रजिस्टर कर सकता है क्योंकि अन्य राज्यों में दिल्ली में पंजीकृत डीजल वाहनों के 15 साल तक चलाने पर कोई रोक नहीं लगाई गई है ? जब भारत सरकार द्वारा डीजल वाहनों की आयु सीमा 15 साल सुनिश्चित है तो 15 साल पूरे होने से पूर्व दिल्ली परिवहन विभाग किस आधार पर उन्हें डी रजिस्टर कर रहा है ?

यहां यह जानने योग्य बात है की कानून के अनुसार दिल्ली में पंजीकृत डीजल वाहनों की आयु सीमा भी 15 साल ही है और एक राज्य की सड़को पर चलने से लगी रोक पर आयु सीमा बचे वाहनों को दिल्ली परिवहन विभाग डी रजिस्टर कर अन्य राज्यों में चलने से किस आधार पर रोक सकता है ?

कुल मिलाकर दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग दिल्ली की जनता जिन्होंने अपने लिए डीजल वाहन खरीद कर दिल्ली से पंजीकरण करवाए हैं उन्हें गैर कानूनी तरीके से परेशान कर रहे हैं।

दिल्ली परिवहन विभाग को जनता के समक्ष इस बात का जवाब देना चाहिए की किस आधार पर सिर्फ दिल्ली की सड़को पर चलने से लगी पाबंदी पर अन्य राज्यों की सड़को पर डी रजिस्टर कर के वह चलने से रोक रहे हैं वो भी रोड टैक्स 15 साल का वसूल कर ?

क्या स्लीपर बस संचालकों के दबाव के आगे झुकेगी राजस्थान सरकार और परिवहन विभाग- जयपुर में बंद हुआ स्लीपर बसों का संचालन

संजय बाटला

शादियों के सीजन की शुरुआत से एक दिन पहले राजस्थान में 8000 स्लीपर बसों का संचालन बंद हो गया। दावा है 1 नवंबर से जयपुर सहित प्रदेशभर में बंद हुई बसों के कारण 3 लाख लोगों को परेशान होना पड़ रहा है। लोग बसों के इंतजार में जगह-जगह फंस गए हैं। शुक्रवार को 7000 बसों का संचालन बंद हुआ था, लेकिन जयपुर से बसें चल रही थीं, लेकिन अब शनिवार से जयपुर से भी बसें बंद हो गई हैं। ऑनलाइन बुकिंग भी शनिवार से नहीं हो रही है।

हालांकि, हड़ताल को लेकर बस ऑपरेटर्स एसोसिएशन में विरोध भी सामने आया है।

जैसलमेर और मनोहरपुर में हुए हादसों के बाद परिवहन विभाग सख्त हो गया है। जैसलमेर में हुए हादसे में स्लीपर बस में जलकर करीब 20 से 22 लोगों की मौत हो गई थी। इस हादसे का कारण बस का डिजाइन बताया जा रहा था, जिसके चलते प्रशासन ने सख्त कदम उठाते हुए अवैध बस संचालन और बॉडी डिजाइन सहित अन्य खामियों को लेकर चालान काटने शुरु कर दिए हैं। कई जगह बसों को सीज भी किया गया है। ज्यादातर कार्रवाई स्टेट से बाहर से ऑपरेट होने वाली स्लीपर बसों पर हो रही है। इसके विरोध में अखिल राजस्थान कांटेक्ट कैरिज बस एसोसिएशन ने शुक्रवार को हड़ताल का ऐलान किया था।

प्राइवेट बस ऑपरेटर एसोसिएशन (स्टेज कैरिज), जयपुर के अध्यक्ष कैलाश चंद शर्मा ने कहा कि परिवहन विभाग की ओर से सुरक्षा मानकों को देखते हुए जो कार्रवाई की जा रही है। वह सही है, ऐसे में स्टेज कैरिज बसें हड़ताल में शामिल नहीं है और होगी भी नहीं। जब की ऑल राजस्थान कांटेक्ट कैरिज बस आपरेटर एसोसिएशन के अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा ने कहा कि स्टेज कैरिज बसे भी दो दिन बाद हड़ताल में शामिल होगी। राजस्थान बस ऑपरेटर एसोसिएशन के अध्यक्ष सत्यनारायण साहू ने बताया कि स्टेज कैरिज की बसें 3 नवंबर से हड़ताल पर जा सकती हैं। इसमें कोई दो फाड़ नहीं है।

दिल्ली में सार्वजनिक सवारी सेवा और भी चरमराई, आखिर कौन है जिम्मेदार ?

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली भारत देश की राजधानी जहां सार्वजनिक सवारी सेवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की उपलब्ध होनी चाहिए पर पूर्व में रही आम आदमी पार्टी सरकार ने दिल्ली में सार्वजनिक सवारी सेवा के लिए अपने पूरे कार्यकाल में एक भी बस ना तो खरीद कर दी और ना ही दिल्ली को सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध करवाने वाले दिल्ली परिवहन निगम को खरीदने दी। कारण जो भी रहा हो पर दिल्ली में जनता को सुरक्षित, समयानुसार सेवा से वंचित कर दिया। दिल्ली में पूर्व से जनता को सुरक्षित समयानुसार सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध करवाने के लिए दिल्ली की सड़को पर प्राइवेट स्टेज कैरीज परमिट बसे (ब्लू लाइन), मिनी बस में आर टी वी और मेट्रो फीडर के साथ दिल्ली परिवहन निगम की बसे चलती थी। बाद मे जनता को सुरक्षित समयानुसार सार्वजनिक सेवा के लिए दिल्ली में ब्लू लाइन की जगह कलस्टर बसे, मिनी बस में आर टी वी और मेट्रो फीडर के साथ दिल्ली परिवहन निगम की बसे चलती रही।

आज की तारीख़ में दिल्ली में जनता को सुरक्षित समयानुसार सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध करवाने के लिए ना तो कलस्टर बसे, ना ही मिनी बस में आर टी वी और मेट्रो फीडर और ना ही दिल्ली परिवहन निगम की बसे चलती है।

अब आप स्वयं फैसला करे की दिल्ली की जनता को सुरक्षित समयानुसार सार्वजनिक सवारी सेवा कैसे प्राप्त हो सकती है और दिल्ली की जनता को मजबूर हो कर आखिर किसके कारण गैर कानूनी तरीके से चलने वाले वाहनों में सफर करने के लिए मजबूर कर रखा है।

दिल्ली में सार्वजनिक सवारी सेवा वाहनों में होने वाले महिला उत्पीड़न, लूटमार और जेब तराशी की बढ़ती घटनाओं का जिम्मेदार कौन, बड़ा सवाल ?

दिल्ली में गैर कानूनी) अवैध तरीके से वाहनों को चलवाने का जिम्मेदार कौन ?

क्या भारत की राजधानी में दिल्ली सरकार और भारत सरकार का मिश्रित दायित्व नहीं बनता की दिल्ली में 24 घंटे सार्वजनिक सवारी सेवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की वह भी सुरक्षित और समयानुसार उपलब्ध रहे ?

भारत टैक्सी ऑपरेशनल का शुभारंभ – हवन एवं पूजा के साथ हुआ कार्यक्रम का प्रथम दिन

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली एनसीआर। शनिार का दिन दिल्ली-एनसीआर के लाखों ड्राइवर भाइयों के लिए ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण रहा। "भारत टैक्सी ऑपरेशनल" का शुभारंभ आज विधिवत हवन एवं पूजा के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर क्षेत्र के सैकड़ों ड्राइवरों ने एकजुट होकर पूजा में भाग लिया और परमपिता परमेश्वर से अपने रोजगार की उन्नति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित रहे —

करनाल हिमांशु जी, कुलदीप सिंगर जी, रवि राठौर जी, सुमेर अम्बावता जी, सोनू जी, वल्लभ जी, चंडीगढ़ से साहिल जी, तथा दिल्ली-एनसीआर एवं आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में चालक भाई शामिल हुए।

यह आयोजन ड्राइवर समुदाय की एकता और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक नई शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है।

सभी उपस्थित सदस्यों ने यह संकल्प लिया कि आने वाले समय में ड्राइवर समाज के सम्मान, अधिकार और सुरक्षित भविष्य हेतु मिलजुलकर कार्य किया जाएगा और भारत टैक्सी को सफल बनाने के लिए एकजुट होकर कार्य किया जाए।

सीएनजी को एक स्वच्छ और किफायती ईंधन माना जाता है, लेकिन सुरक्षा उपायों की अनदेखी इसे एक गंभीर खतरे में बदल सकती है

संजय बाटला

गैस का एक छोटा सा रिसाव, ढीली फिटिंग या खराब रखरखाव भी विनाशकारी परिणाम दे सकता है - जान, संपत्ति और सार्वजनिक सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है।

संपीड़ित प्राकृतिक गैस (सीएनजी) के इस्तेमाल में हर समय अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए।

पालन करने योग्य प्रमुख सुरक्षा नियम

1. सीएनजी सिलेंडर और फिटिंग का नियमित निरीक्षण करें

2. हर यात्रा से पहले रिसाव का पता लगाएँ

3. ड्राइवरों और रखरखाव कर्मियों के लिए उचित प्रशिक्षण सुनिश्चित करें

4. सख्त निवारक रखरखाव और सुरक्षा मानकों का पालन करें

सुरक्षा सबकी ज़िम्मेदारी है छोटे-छोटे सुरक्षा उपायों की अनदेखी बड़ी आपदाओं का कारण बन सकती है। एक ऐसी संस्कृति बनाने के लिए मिलकर काम करें जहाँ प्रतिक्रिया से पहले रोकथाम को प्राथमिकता दी जाए। सतर्क रहें, सुरक्षित रहें और सुरक्षा को हमेशा अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाएँ।

रोज सुबह खाली पेट पपीता खाने से सेहत में दिखाई देंगे कई हैरतअंगेज बदलाव

पपीता विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर का बेहतरीन सोर्स होता है। इसलिए रोजाना पपीता खाने से आपको कई गंभीर बीमारियों से बचाव में मदद मिल सकती है। पपीता सिर्फ अपने मीठे स्वाद के लिए ही नहीं, बल्कि अपने हैरान करने वाले फायदों के लिए भी जाना जाता है। यह कई विटामिन, मिनरल्स और फाइबर का बेहतरीन सोर्स होता है। इसलिए पपीते को अपनी डाइट का हिस्सा बनाना आपके लिए काफी फायदेमंद (Health Benefits of Papaya) साबित हो सकता है।

1. पाचन तंत्र के लिए वरदान पपीता पाचन तंत्र के लिए एक वरदान माना जाता है। इसमें पपैन एंजाइम पाया जाता है, जो प्रोटीन को पचाने में मदद करता है। इसके अलावा, पपीता में मौजूद फाइबर कब्ज की समस्या को दूर करने में मददगार होता है। रोजाना पपीता खाने से पेट संबंधी समस्याएं जैसे अपच, गैस और एसिडिटी से छुटकारा मिलता है।

2. इम्युनिटी को बढ़ाए पपीता विटामिन-सी का बेहतरीन सोर्स है। एक मध्यम आकार के पपीते में संतरे से तीन गुना ज्यादा विटामिन-सी पाया जाता है। विटामिन-सी शरीर की बीमारियों से लड़ने की क्षमता को मजबूत बनाता है, जिससे सर्दी-जुकाम और इन्फेक्शन से लड़ने में मदद मिलती है।

3. आंखों के लिए फायदेमंद पपीता में विटामिन-ए और बीटा-कैरोटीन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो आंखों की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है। यह मोतियाबिंद और उम्र बढ़ने के साथ होने वाले विजन लॉस के जोखिम को कम करने में मददगार साबित होता है।

4. त्वचा में निखार लाए पपीता में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिन-सी त्वचा के लिए बेहद फायदेमंद होते हैं। यह झुर्रियों को कम करने, त्वचा में कसावट लाने और रंगत निखारने में सहायक है। पपीते का फेस पैक लगाने से भी त्वचा में चमक आती है।

5. वजन घटाने में सहायक कम कैलोरी और ज्यादा फाइबर के कारण पपीता वजन घटाने में काफी मददगार साबित हो सकता है। यह पेट को लंबे समय तक भरा रखता है और अनहेल्दी स्नैकिंग से बचाता है।

6. दिल के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक पपीता में मौजूद फाइबर, पोटैशियम और विटामिन्स दिल के स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करते हैं। यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कंट्रोल करने और ब्लड प्रेशर कम करने में सहायक है, जिससे दिल की बीमारियों का खतरा कम होता है।

7. सूजन कम होती है पपीता में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं, जो शरीर में सूजन को कम करने में मदद करते हैं। यह आर्थराइटिस और सूजन से जुड़ी अन्य बीमारियों से पीड़ित लोगों के लिए खासतौर से फायदेमंद है।

8. कैंसर से बचाव पपीता में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर में फ्री रेडिकल्स से लड़ते हैं और कैंसर के खतरे को कम करने में मददगार साबित हो सकते हैं।

9. डायबिटीज के मरीजों के लिए फायदेमंद हालांकि मीठा होने के बावजूद, पपीता डायबिटीज के मरीजों के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है, क्योंकि इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है। लेकिन डायबिटीज के मरीजों को इसे सीमित मात्रा में ही और डॉक्टर की सलाह लेकर ही खाना चाहिए।

त्रिकटु + त्रिफला मिश्रण : रोगों का सर्वनाशक अमृत योग

आयुर्वेद में त्रिकटु (सौंठ, पिपली, मरीच) और त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आंवला) दोनों ही अत्यंत प्रसिद्ध औषधियाँ हैं। जब इन्हें मिलाकर सेवन किया जाता है, तो यह

1. शरीर के अंदर से विषैले तत्वों को बाहर निकालता है,
2. पाचन को मजबूत करता है, चर्बी गलाता है, और रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है।

इसी कारण इसे आयुर्वेद में "सर्वरोगनिवारक चूर्ण" कहा गया है।

संक्षिप्त परिचय

1. त्रिकटु = सौंठ + पिपली + काली मिर्च
2. त्रिफला = हरड़ + बहेड़ा + आंवला

दोनों का संयोजन शरीर के आम (toxins) को जलाता है और त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) को संतुलित करता है।

मुख्य लाभ

1. पाचन और गैस की समस्या में अमृत समान :- यह भोजन को जल्दी पचाता है, गैस, अपच, डकार और पेट दर्द को मिटाता है।
2. शरीर की चर्बी और मोटापा घटाता है:- यह मेटाबॉलिज्म को तेज करता है और अतिरिक्त चर्बी गलाने में मदद करता है।
3. रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) बढ़ाता है:- आंवला और पिपली के संयोजन से शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।
4. रक्त शुद्ध करता है और त्वचा को निखारता है :- त्रिफला का रक्तशोधक गुण त्वचा की चमक और दाग-धब्बे दूर करता है।
5. कब्ज और एसिडिटी में लाभकारी :- हरड़ और सौंठ मिलकर पेट को साफ रखते हैं और पित्त दोष को संतुलित करते हैं।
6. सर्दी-खांसी और कफ रोगों में उपयोगी:- त्रिकटु कफ को गलाकर सांस की नलियों को साफ करता है।
7. लीवर और आँतों की सफाई करता है:- यह यकृत (liver) को सक्रिय रखता है और शरीर में जमा विषैले पदार्थ बाहर निकालता है।

बनाने की विधि

सामग्री (Ingredients)

1. सौंठ (सूखी अदरक) – 50 ग्राम
2. काली मिर्च – 50 ग्राम
3. पिपली – 50 ग्राम
4. हरड़ – 50 ग्राम
5. बहेड़ा – 50 ग्राम
6. आंवला – 50 ग्राम

विधि (Preparation)

1. सभी औषधियों को अलग-अलग धोकर सुखा लें।
2. बारीक पीसकर बारीक छलनी से छान लें।
3. अब त्रिकटु चूर्ण (पहले तीन घटक) और त्रिफला चूर्ण (अगले तीन घटक) बराबर मात्रा में मिलाएँ।
4. इसे एयरटाइट शीशी में भरकर छायादार स्थान पर रखें।

सेवन विधि :- मात्रा* :- 1 चम्मच (लगभग 3–5 ग्राम), समय:- सुबह खाली पेट और रात को सोने से पहले

सहायक द्रव्य

1. गर्म पानी (पाचन या मोटापा के लिए)
2. शहद (खांसी, बलगम या इम्यूनिटी के लिए)

सावधानियाँ

1. अत्यधिक मात्रा में सेवन से जलन या पित्त बढ़ सकता है।
2. गर्भवती महिलाएँ और बहुत अधिक कमजोर लोग वैद्य की सलाह से ही लें।
3. गर्मी के मौसम में ठंडे प्रभाव वाले आहार (दूध, घी, फल) साथ में लें।

निष्कर्ष त्रिकटु + त्रिफला मिश्रण एक ऐसा संयोजन है जो शरीर को भीतर से शुद्ध कर देता है।

दवाई या औषधि के बिना ही स्वाभाविक रूप से नींद आनी चाहिए

यदि आपको सही समय पर भूख नहीं लगती और सही समय पर नींद नहीं आती, तो यह शरीर और मन दोनों में किसी असंतुलन का संकेत हो सकता है।

अच्छी और गहरी नींद केवल आराम नहीं देती, बल्कि यह मनुष्य के सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राकृतिक औषधि है। नींद के दौरान शरीर अपनी मरम्मत करता है, मस्तिष्क से विषैले तत्वों को निकालता है, और प्रतिरक्षा प्रणाली (Immunity System) को सशक्त बनाता है।

नवीनतम शोध बताते हैं कि — जो लोग नियमित और गहरी नींद लेते हैं, उनमें कैंसर, अल्ज़ाइमर, डिमेंशिया, हृदय रोग, मोटापा और

मधुमेह जैसी बीमारियों का खतरा काफी कम होता है।

नींद के अभाव से तनाव हार्मोन (Cortisol) बढ़ता है, जो शरीर में सूजन (Inflammation) बढ़ाकर कई रोगों की जड़ बन जाता है।

डीप स्लीप या स्लो-वेव स्लीप के दौरान मस्तिष्क की कोशिकाएँ (neurons) पुनर्जीवित होती हैं, जिससे स्मरण शक्ति और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती है।

इसलिए कहा गया है — "₹नींद प्रकृति की सबसे सुंदर दवा है, जो बिना कीमत के शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखती है।"

अतः दवाओं पर निर्भर हुए बिना, नियमित दिनचर्या, संतुलित आहार, शारीरिक गतिविधि, और मानसिक शांति के माध्यम से स्वाभाविक नींद प्राप्त करना ही दीर्घायु और स्वस्थ जीवन का सबसे सरल मार्ग है।

"छोटे-मोटे रोगों के लिए घर बैठे होम्योपैथिक राहत"

★ हर घर के होम्योपैथिक बॉक्स में होनी चाहिए ये ज़रूरी 5 दवाएँ

1. Arnica Montana 30 – चोट, मोच और दर्द का त्वरित इलाज

अगर गिरने या टकराने से शरीर में सूजन, नीला निशान या दर्द हो तो यह सबसे पहली दवा है।

लाभः रक्त प्रवाह ठीक करती है, सूजन घटाती है और घाव जल्दी भरती है।

सेवन विधिः 4 गोलियाँ दिन में 2 बार, या ज़रूरत पड़ने पर तुरंत।

2. Belladonna 30 – बुखार और गले के दर्द में राहत

अचानक तेज बुखार, सिर दर्द और चेहरा लाल हो जाए तो यह असरदार दवा है।

लाभः बुखार का तापमान सामान्य करती है, गले की सूजन घटाती है।

सेवन विधिः 4 गोलियाँ हर 3 घंटे में जब तक आराम न मिले।

3. Nux Vomica 30 – पेट दर्द, गैस और अपच के लिए सबसे उपयोगी

देर रात खाना, मसालेदार भोजन या शराब के बाद पेट में जलन या भारीपन हो तो ये कारगर है।

लाभः अपच, उल्टी, सिरदर्द और चिड़चिड़ापन कम करती है।

सेवन विधिः 4 गोलियाँ सुबह-शाम।

4. Rhus Toxicodendron 30 – सर्दी में दर्द और जकड़न का इलाज

ठंड लगने के बाद जोड़ों या मांसपेशियों में दर्द हो, ये दवा राहत देती है।

लाभः गठिया, मोच, या सुबह की जकड़न में बहुत असरदार।

सेवन विधिः 4 गोलियाँ दिन में दो बार।

5. Calendula Q (Mother Tincture) – घाव और संक्रमण का प्राकृतिक उपचार

चोट या कट लगने के बाद संक्रमण से बचाव और जल्दी भरने के लिए श्रेष्ठ।

लाभः एंटीसेप्टिक की तरह काम करती है, सूजन कम करती है।

सेवन विधिः 10 बूँदें पानी में मिलाकर घाव पर लगाएँ या धोएँ।

विशेष सलाहः

इन दवाओं को "होम्योपैथिक फर्स्ट एड बॉक्स" में रखें।

ये छोटी-छोटी तकलीफ़ों में तुरंत राहत देती हैं और डॉक्टर के पास जाने से पहले मददगार साबित होती हैं।

बार-बार बनती है पेट में गैस, एसिडिटी तो आपके लिए वरदान है ये घरेलू जादुई नुस्खा, चुटकियों में मिलेगा आराम

एसिडिटी, पेट की गैस और ब्लोटिंग परेशान करती है, तो आज हम आपको एक ऐसा ही जादुई घरेलू नुस्खा बताने जा रहे हैं, जो पेट की गैस और एसिडिटी को चुटकियों में दूर कर सकता है.

अक्सर पेट में एसिडिटी और गैस बनने से नींद-चैन सब हराम हो जाता है. एसिडिटी और गैस से पेट फूलना और दर्द भी हो सकता है. एसिडिटी के कारण और पेट में गैस बनने के कारण कई हैं. खानपान और तनाव के चलते पेट से जुड़ी समस्याएं आम हो गई हैं. खासकर गैस बनना, एसिडिटी, पेट में जलन, खट्टी डकारें और भारीपन जैसी परेशानियां हर उम्र के लोगों को झेलनी पड़ती हैं. कई लोग दवाइयों का सहारा लेते हैं, लेकिन बार-बार दवा लेना शरीर के लिए नुकसानदायक हो सकता है. ऐसे में अगर कोई घरेलू उपाय हो जो तुरंत राहत दे और बिना साइड इफेक्ट के काम करे, तो क्या बात है! आज हम आपको एक ऐसा ही जादुई घरेलू नुस्खा बताने जा रहे हैं, जो पेट की गैस और एसिडिटी को चुटकियों में दूर कर सकता है.

पेट की गैस और एसिडिटी से छुटकारा पाने का असरदार घरेलू नुस्खा

अजवाइन, काला नमक और नींबू

सामग्री:

1 चम्मच अजवाइन
आधा चम्मच काला नमक
1 नींबू का रस
1 गिलास गुनगुना पानी

बनाने का तरीका: अजवाइन को हल्का सा तवे पर भून लें, इसमें काला नमक मिलाएं और नींबू का रस और गुनगुना पानी डालकर अच्छे से मिलाएं। इस मिश्रण को खाली पेट या खाने के बाद पी लें.

कैसे करता है काम:

अजवाइन में थायमोल नामक तत्व होता है जो पाचन एंजाइम को सक्रिय करता है.
काला नमक गैस को बाहर निकालने में मदद करता है और पेट को शांत करता है.
नींबू एसिड को बैलेंस करता है और डिटॉक्स का काम करता है।

इस नुस्खे के फायदे:

गैस और एसिडिटी में तुरंत राहत: यह मिश्रण पेट में जमा गैस को बाहर निकालता है और एसिड को न्यूट्रल करता है.
पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है: नियमित सेवन से पाचन एंजाइम बेहतर काम करते हैं, जिससे खाना जल्दी और सही तरीके से पचता है.
भूख बढ़ाता है: अगर आपको भूख नहीं लगती या खाने में रुचि नहीं होती, तो यह नुस्खा आपकी भूख को बढ़ा सकता है.
पेट की जलन और भारीपन से राहत: नींबू और अजवाइन का कॉम्बिनेशन पेट की जलन को शांत करता है और भारीपन को दूर करता है.
100% प्राकृतिक और सुरक्षित: इसमें कोई केमिकल या दवा नहीं है, इसलिए इसे बिना डर के लिया जा सकता है।

इन बातों का रखें ध्यान:

1. यह नुस्खा खाली पेट या खाने के बाद लिया जा सकता है, लेकिन रात को सोने से पहले न लें.
२. गर्भवती महिलाएं या उच्च रक्तचाप वाले लोग डॉक्टर से सलाह लेकर ही इसका सेवन करें.
३. अगर आपको नींबू से एलर्जी है, तो नींबू की जगह हींग का इस्तेमाल किया जा सकता है.
4. गैस और एसिडिटी से बचने के लिए घरेलू उपाय
5. सौंफ और मिश्री का सेवन खाने के बाद सौंफ और मिश्री चबाने से पाचन बेहतर होता है.
6. गुनगुना पानी पीना दिनभर में ६–8 गिलास गुनगुना पानी पीने से पेट साफ रहता है.
7. तुलसी के पत्ते चबाना तुलसी में एंटी-एसिड गुण होते हैं जो पेट को शांत करते हैं.
8. दही और छाछ का सेवन प्रोबायोटिक्स से भरपूर दही और छाछ पेट के लिए फायदेमंद होते हैं.
9. हल्का व्यायाम और योग रोजाना २० मिनट का वॉक या योगासन जैसे पवनमुक्तासन, वज्रासन गैस की समस्या को दूर करते हैं.

गैस और एसिडिटी की समस्या को नजरअंदाज करना सही नहीं है. अगर आप बार-बार इस परेशानी से जूझते हैं, तो दवाइयों की बजाय घरेलू उपाय अपनाना ज्यादा सुरक्षित और असरदार है. अजवाइन, काला नमक और नींबू का यह नुस्खा न सिर्फ तुरंत राहत देता है, बल्कि आपके पाचन तंत्र को भी मजबूत बनाता है.

बस 1 मिनट हाथ की ऊँगलियों को रगड़ने से शरीर का दर्द गायब हो जाता है

संवेदनशीलता की प्राचीन जापानी कला के अनुसार, प्रत्येक ऊँगली विशेष बीमारी और भावनाओं के साथ जुड़ी होती हैं। हमारे हाथ की पाँचों ऊँगलियाँ शरीर के अलग अलग अंगों से जुड़ी होती हैं। इसका मतलब आप को दर्द नाशक दवाइयाँ खाने की बजाए इस आसान और प्रभावशाली तरीके का इस्तेमाल करना करना चाहिए। आज इस लेख के माध्यम से हम आपको जानेंगे, के शरीर के किसी हिस्से का दर्द सिर्फ हाथ की ऊँगली को रगड़ने से कैसे दूर होता है।

हमारे हाथ की अलग अलग ऊँगलियाँ अलग अलग बीमारियों और भावनाओं से जुड़ी होती हैं। शायद् आप को पता न हो, हमारे हाथ की ऊँगलियाँ, चिंता, डर और चिड़चिड़ापन तक दूर करने की क्षमता रखती है। ऊँगलियों पर धीरे से दबाव डालने से शरीर के कई अंगो पर प्रभाव पड़ेगा।

आइये हम ये जानने की कोशिश करते है, की, कैसे हाथ की ऊँगलियों को रगड़ने से, हो सकता है शरीर का दर्द दूर ?

1. अंगूठा- The Thumb – हाथ का अँगूठा हमारे फेफड़ों से जुड़ा होता है। अगर आप की दिल की धड़कन तेज है तो हलके हाथों से अँगूठे पर मसाज करें और हल्का सा खिचें। इससे आप को आराम मिलेगा

२. तर्जनी -The Index Finger – ये ऊँगली आँतों (gastro intestinal tract) से जुड़ी होती है। अगर आपके पेट में दर्द है, तो इस उंगली को हल्का सा रगड़े, दर्द कम हेता महसूस होगा।

३. बीच की ऊँगली -The Middle Finger- ये ऊँगली परिसंचरण तंत्र तथा circulation system से जुड़ी होती है। अगर आप को चक्कर या आपका जी घबरा रहा है तो इस ऊँगली पर मालिश करने से तुरंत रहत मिलेगी।

4. तीसरी ऊँगली – The Ring Finger- ये ऊँगली आपकी मनोदशा से जुड़ी होती है। अगर किसी कारण आपकी मनोदशा अच्छी नहीं है, या शाँति चाहते हैं तो इस ऊँगली को हल्का सा मसाज करें और खीचें, आपको जल्द ही इस के अच्छे नतीजे प्राप्त हो जायेंगे, आप का मन खिल उठेगा

5. छोटी उंगली – The Little Finger- छोटी ऊँगली का किडनी और सिर के साथ सम्बन्ध होता है।

अगर आप को सिर में दर्द है तो इस ऊँगली को हल्का सा दबाये और मसाज करे, आप का सिर दर्द गयब हो जायेगा। इसे मसाज करने से किडनी भी तंदूरुस्त रहती है और हम स्वस्थ रहते हैं।

इसके साथ-साथ आज में जीने की कोशिश करें कल अपने आप सुधरता जाएगा।

Physical Activities for Good Health - घर के काम-अच्छी सेहत का वरदान!

1. बर्तन धोना – हाथों का व्यायाम

बर्तन धोने से हाथ, कलाई और कंधों की अच्छी एक्सरसाइज़ होती है। यह एक लो-इम्पैक्ट फिजिकल एक्टिविटी है जो रोज़ाना करने से कैलोरीज़ बर्न होती हैं।

2. झाड़ू-पोंछा – पूरे शरीर की कसरत

झाड़ू और पोंछा लगाते समय शरीर झुकता है, घूमता है और मांसपेशियों पर खिंचाव आता है। यह लोअर बॉडी के लिए फायदेमंद है और एक कार्डियो वर्कआउट के समान काम करता है।

3. हाथ से कपड़े धोना – कोर मसल्स को मजबूती

कपड़े धोते समय हमारे हाथ, कंधे और पीठ की मांसपेशियाँ सक्रिय रहती हैं। यह घर बैठे शरीर को टोन करने का बेहतरीन तरीका है।

4. कपड़े सुखाना और तह करना – एकाग्रता और फुर्ती

कपड़े तह करते समय ध्यान, संतुलन और कोआर्डिनेशन की आवश्यकता होती है। साथ ही, यह छोटी लेकिन जरूरी मूवमेंट्स में मदद करता है।

5. घर की सफाई – एनर्जी बूस्टर

फर्नीचर, खिड़कियां, पंखे या अलमारी की सफाई से शरीर के ऊपरी हिस्से की अच्छी कसरत होती है। साथ ही मानसिक संतुष्टि भी मिलती है।

6. बागवानी – तन-मन दोनों को सुकून

पौधों को पानी देना, मिट्टी खोदना और पौधारोपण करना एक प्राकृतिक फुल-बॉडी एक्सरसाइज़ है। यह दिल-दिमाग को सुकून देता है।

7. सीढ़ियां चढ़ना – सबसे सरल कार्डियो

लिफ्ट की बजाय सीढ़ियों का इस्तेमाल करें। यह हार्ट रेट को नियंत्रित करता है और फैट बर्न करने में सहायक है।

निष्कर्षः

₹घरेलू कामों को बोझ न समझें, बल्कि एक स्वस्थ जीवनशैली की कुंजी मानें!₹

रोज़ाना ये छोटे-छोटे काम करने से न केवल घर साफ रहता है, बल्कि शरीर भी तंदुरुस्त बना रहता है।

सुझावः

दिन की शुरुआत 15 मिनट की घरेलू एक्टिविटी से करें और खुद को फिट बनाएँ — बिना जिम गए!

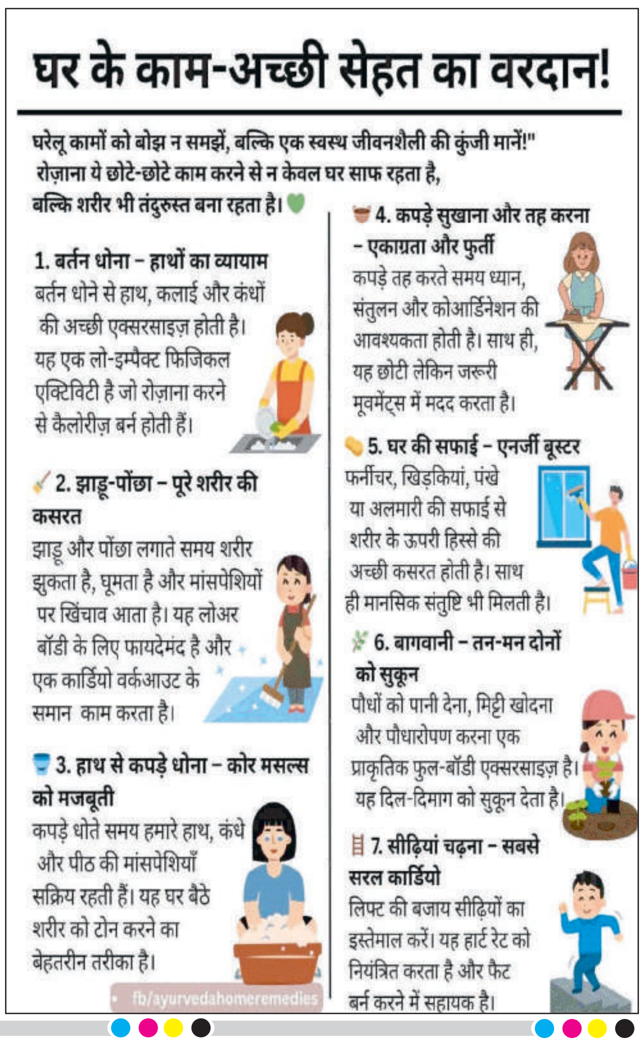

‘क्योंकि 2.0’ से TIME100 तक, स्मृति ईरानी ने स्पार्क पहल से भारत को दिया गौरव का पल !

परिवहन विशेष न्यूज

- TIME100 इवेंट में भारत की आवाज़ बनीं स्मृति ईरानी, ‘स्पार्क’ पहल से 1 लाख महिलाओं को जोड़ने का मिशन
- न्यूयॉर्क के TIME100 मंच पर गूंजी भारत की बेटी की आवाज, स्मृति ईरानी का लक्ष्य 300 शहरों की 1 लाख महिलाएं होंगी सशक्त !
- बिल गेट्स को ‘क्योंकि 2.0’ पर लाने से लेकर TIME100 इवेंट तक, अक्टूबर पूरी तरह है स्मृति ईरानी के नाम !

नई दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री और भारतीय टेलीविजन की एक अहम हस्ती स्मृति ईरानी इन दिनों सुर्खियों में हैं, अक्टूबर महीना उनके शानदार सफर की गवाही दे रहा है, जहां वो न सिर्फ खुलकर बात कर रही हैं और असली दुनिया में असर डाल रही हैं। हाल ही में स्मृति ईरानी ने अपने शो ‘क्योंकि 2.0’ में बिल गेट्स को बुलाया और फिर प्रतिष्ठित TIME100 इवेंट में भारत का नाम रोशन किया। शूटिंग के बीच भी उन्होंने वक्त निकालकर सबको प्रेरित किया। उनका इनिशिएटिव स्पार्क द 100k कलेक्टिव इस ग्लोबल फोरम का पार्टनर है, जिसके ज़रिए वो न्यूयॉर्क के स्टेज तक पहुंचीं।

TIME100 इवेंट में स्मृति ईरानी ने भारत और अपने प्रोजेक्ट स्पार्क द 100k कलेक्टिव की तरफ़ से बात की। इस प्रोजेक्ट का मकसद देश के 300 शहरों में 1 लाख महिलाओं को मज़बूत बनाना है ताकि वे अपना काम शुरू कर सकें। हाल ही में इसका एक इवेंट दिल्ली में हुआ था। स्पार्क प्रोजेक्ट छह हिस्सों में काम करता है, जो महिलाओं को ज़रूरी हुनर और सही मदद देने पर ध्यान देता है।

उनकी दमदार स्पीच और मेहनत टाइम फोरम पर सबको बहुत पसंद आया है। इस चीज ने लोगों को याद दिलाया है कि कैसे स्मृति ईरानी एक साधारण शुरुआत से आगे बढ़कर आज भारत की एक सबसे मजबूत आवाज बन गई हैं।

एक भावुक पल में, उन्होंने अपनी जड़ों को याद करते हुए कहा:

उन्होंने कहा, “कहते हैं ज़िंदगी एक पूरा चक्कर लगाती है, और आज रात मेरे लिए सच में ऐसा ही हुआ है। बयालीस साल पहले, नई दिल्ली की सड़कों पर मेरे पिता, जो एक किताब बेचने वाले थे, एक कबाड़ी से पुरानी Time मैगज़ीन खरीदकर बेचते थे, ताकि वो रोज़ दो डॉलर कमा सकें और तीन बेटियों का पेट पाल सकें। आज जब मैं आप सबके बीच खड़ी हूं, तो ये सिर्फ इसलिए है क्योंकि मेरे माता-पिता मेहनती थे, और साथ ही क्योंकि किसी ने मेरी पढ़ाई में मदद की, किसी ने मुझे ईमानदार मेहनताना दिया, और किसी ने मुझे अपने देश में एक राजनीतिक आवाज़ बनने का मौका दिया।”

भारत की लाखों महिलाओं की आवाज़ बनकर, स्मृति ईरानी ने भारत की महिला कार्यशक्ति की ताकत और उसकी संभावनाओं को दुनिया के सामने रखा।

“मेरे देश में मुझ जैसी 40 करोड़ महिलाएं हैं। उनमें से 9 करोड़ महिलाएं गांवों में काम करती हैं और हर साल छोटे बिज़नेस से 37 बिलियन डॉलर का कारोबार करती हैं। मेरे देश की 15 लाख महिलाएं पंचायतों में चुनी हुई प्रतिनिधि हैं, जिन्हें आप टाउन काउंसिल कह सकते हैं। 60 लाख महिलाएं हर दिन फ्रंटलाइन हेल्थकेयर वर्कर के रूप में काम पर जाती हैं।”

अपने ग्लोबल विज़न स्पार्क द 100k कलेक्टिव को पेश करते हुए, स्मृति ईरानी ने पूरे आत्मविश्वास और उम्मीद के साथ अपना मिशन साझा किया:

“मैं यहाँ एक छोटी सी शुरुआत करने आई हूँ। भारत में, मेरे साथ एक और महिला ने ठाना कि हम 1 लाख महिलाओं तक पहुंचेंगे जो छोटे-छोटे बिज़नेस चला रही हैं। हमारा मकसद था अपने देश के लोगों की मदद करना, सिर्फ सरकार का इंतज़ार नहीं करना। इसलिए हमने तय किया कि 300 शहरों में 1 लाख महिलाओं तक पहुंचेंगे, फिर 10 लाख तक, और 100 मिलियन डॉलर का इम्पैक्ट फंड बनाएंगे और जब किसी ने पूछा, क्या इसे 56 देशों तक ले जा सकती हो? तो हमने कहा हाँ, बिल्कुल! मैं यहाँ बस एक बीज बोने आई हूँ।”

अपना भाषण खत्म करते हुए उन्होंने दुनिया भर के नेताओं से दिल छू लेने वाली अपील की —

“मेरी बस एक ही अपील है, दुनिया में महिलाएं 30 ट्रिलियन डॉलर का खर्च कंट्रोल करती हैं, लेकिन उनके पास हर तीन में से सिर्फ एक बिज़नेस है और उन्हें अब भी 20% कम वेतन मिलता है। तो जब आपके पास अपने सपनों और अमिबिशंस के लिए आगे बढ़ने का हौसला है, तो थोड़ा हौसला उन लोगों की आवाज़ बनने का भी रखिए, जिनकी कोई आवाज़ नहीं है।”

स्पार्क द 100k कलेक्टिव के ज़रिए स्मृति ईरानी सिर्फ़ महिलाओं की बात नहीं कर रहीं, बल्कि एक नई सोच जगा रही हैं। जैसे-जैसे अक्टूबर खत्म हो रहा है, ये साफ़ है कि ये महीना और ये पल पूरी तरह उन्हीं का है, चाहे बात हो भारतीय टेलीविज़न में नई जान डालने की, या असली बदलाव की शुरुआत करने की, या फिर न्यूयॉर्क के ग्लोबल मंच पर भारत की आवाज़ बनने की।

नागरिक सुरक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार, के द्वारा डीओसीडी-TA044/1/2025/3033-3051, कंपनी संख्या: E 288373, दिनांक: 31/10/2025 को सभी जिला मजिस्ट्रेट (पूर्व, उत्तर-पूर्व, शाहदरा, पश्चिम, नई दिल्ली, मध्य, उत्तर-पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण-पूर्व) को दिशा निर्देश जारी कर *श्दिल्ली में आपदा प्रबंधन/शत्रुतापूर्ण हमले और शीतकालीन कार्य योजना 2025 के लिए नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों को 01.11.2025 से 31.03.2026 तक बुलाया जाना।’ सुनिश्चित करने को कहा।

DIRECTORATE OF CIVIL DEFENCE
GOVT. OF N.C.T. OF DELHI

DoCD-TA044/1/2025/3033-3051 Dated: 31/10/2025
Comp No.: E 288373

To,
All District Magistrates
(East, North-East, Shahdara, West, New Delhi, Central, North-West, North, South, South-West, South-East)

Sub:- Call out of Civil Defence Volunteers for Disaster Management/Hostile attack and Winter Action Plan 2025 in Delhi w.e.f 01.11.2025 to 31.03.2026.

Sir/Madam,

The approval of Director Civil Defence/Secretary (Revenue) - cum - Divisional Commissioner is hereby conveyed to call out 100 Civil Defence Volunteers at each district for disaster management/Hostile attack and Winter Action Plan 2025 in Delhi from 01.11.2025 to 31.03.2026. All District Magistrates are requsted to call out 100 CDVs each accordingly as per existing SOPs/office orders/ Terms & Conditions/ instructions as issued from time to time.

The following authorization of funds is hereby made to following Controllers of Civil Defence/District Magistrates under the Major Head "2070-00-800-64-97-02-Wages" of Directorate of Civil Defence under Demand no. 10 for the Financial Year 2025-26. The concerned Districts Magistrates are hereby authorised to incur the expenditure on call out of 100 CDVs as above for 05 months, as per rules, as per authorization of funds after observing all codal formalities, GFR-2017, CVC guidelines and Govt. order/instructions issued from time to time.

Sl. No.	District	No. of CDVs	Fund requirement (Duty allowance @ 862/- & Conveyance allowance @ 40/- per head per day for 112 days)	Fund authorization from budget head 2070-00-800-64-97-02	Purpose
1	Controller (CD)/DM (East)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	Towards payment of Duty & Conveyance allowances to 100 CDVs at each District for their callout for Disaster Management /Hostile Attack/ Winter Action Plan 2025.
2	Controller (CD)/DM (West)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
3	Controller (CD)/DM (North)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
4	Controller (CD)/DM (South)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
5	Controller (CD)/DM (North-East)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
6	Controller (CD)/DM (North-West)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
7	Controller (CD)/DM (South-East)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
8	Controller (CD)/DM (South-West)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
9	Controller (CD)/DM (New Delhi)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
10	Controller (CD)/DM (Shahdara)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
11	Controller (CD)/DM (Central)	100	Rs. 1,01,02,400/	Rs. 1,01,02,400/	
	Total-	1100	Rs. 11,11,26,400/-	Rs. 11,11,26,400/-	

1, Kripa Narayan Marg, Civil Lines, Delhi-110054
Tel: 01123937202, E-mail: civildefencehq.delhi@gov.in

महारोग स्मॉग : ऐसे तो गल जाएंगे दिल्ली के फेफड़े

डॉ० घनश्याम बादल

दिल्ली में क्लाउड सीडिंग के माध्यम से कृत्रिम बारिश का सपना टूट गया है। लगातार तीन दिन तक आकाश में क्लाउड सीडिंग करने के बावजूद एक बूंद भी बारिश नहीं हुई और दिल्ली वासी 400 से ऊपर एक क्यू आई यानी हवा की बहुत ख़राब क्वालिटी के साथ सांस लेने को मजबूर हैं।

हालत इतनी ख़राब है कि 100 मीटर दूर की बिल्डिंग दिखाई नहीं दे रही है। दीपावली के बाद अक्सर दिल्ली में स्मॉग की समस्या आती रही है और इसके पीछे जहां दीपावली के पटाखों को ज़िम्मेदार ठहराया जाता है, वहीं हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा पराली जलाए जाने के आरोप लगाकर भी पल्ला झाड़ लिया जाता है जबकि असलियत यह है कि जिस तरह दिल्ली में परिवहन एवं वाहनों की स्थिति है, उसके चलते आने वाले वर्षों में पूरे साल ऐसी ही स्थिति रहने वाली है और यदि कारगर उपाय नहीं किए गए तो फिर दिल्ली के फेफड़े खराब होने तय हैं।

दिल्ली ही नहीं, दूसरे व्यस्त महानगरों में भी भारी स्मॉग और कहर बरपा रही है। हर साल दिसंबर जनवरी के महीने कोहरे व स्मॉग के शिकार होते ही हैं।

जितना बड़ा शहर, उतना ही ज़्यादा स्मॉग और उससे ज़्यादा उससे उपजा संकट। इन दिनों में स्मॉग के चलते बीमार होने के साथ-साथ सड़क दुघर्टनाओं में भी न जाने कितनी जानें जाती हैं। रोज ही लाखों यात्री समय से अपने गंतव्य पर नहीं पंहुच पाते हैं। देश भर में यातायात प्रभावित होता है। प्रतिदिन कितनी ही ट्रेन व बसें तथा हवाई जहाजों की उड़ाने भी लेट होती हैं या फिर रद्द की जाती हैं। कोहरे के प्रकोप का तोड़ ढूंढ पाने हर प्रयास नाकाम सिद्ध हो रहा है।

लगातार खतरनाक होती जा रहे ‘स्माग’ से परिचित होना भी जरूरी है जब कोहरे का धुएं के साथ मिश्रण होता है तो उसे ‘स्माग’ कहते हैं यानी ‘स्मॉक एंड फॉग’ दोनों को मिलाकर नया शब्द बना है ‘स्मॉग’। स्मॉग ज्यादातर औद्योगिक शहरी क्षेत्रो में जल कणों का कार्बन कणों तथा अन्य सूक्ष्म कणों के मिश्रण से अधिक तीव्रता से बनता है और ज्यादा देर तक बना रहता है इसमें विभिन्न रसायनों के वाष्पकण मिल जाने से इसकी प्रकृति अम्लीय भी हो जाती है जो अधिक हानिकारक है।

बेशक, कोहरा प्राकृतिक प्रक्रिया है और इसे रोका नहीं जा सकता पर, यदि थोड़ा ध्यान रखा जाए तो स्मॉग के हानिकारक प्रभावों को कम किया जा सकता है।

जब धुंआ और कोहरा यानी स्मोक और फॉग मिलकर फिजा खराब करते हैं तब स्मॉग कहर बरपाता है। और दुर्घटनाओं के माध्यम से कितनी ही जान ले लेता है जहां स्मॉग की समस्या को हल करने की ज़रूरत है वहीं जीवन की सुरक्षा के लिए बेहतर हो कि वाहन कम गति से ही चलाएं। 'एंटीफोग' लाइट का इस्तेमाल करें व प्रदूषण के स्तर को कम से कम स्तर पर लाया जाए क्योंकि प्रदूषण कम होगा तो वातावरण में धूल के कण लटके नहीं रह पाएंगें और उन पर जल वाष्प नहीं जम पाएगी और इससे स्मॉग कम होगा।

साथ ही साथ ही बढ़ते हुए ग्रीनहाउस हाउस इफेक्ट व ग्लोबल वार्मिंग पर भी ध्यान देना होगा ताकि स्मॉग का कोहराम कम हो सके।

यदि स्मॉग की समस्या से बचना है तो लगातार बढ़ रहे वायु प्रदूषण पर नियंत्रण करना बेहद ज़रूरी है चाहे वह अंधाधुंध बढ़ रहे वाहनों से हो या उद्योगों से, पराली के जलाने से हो या पटाखों के जलाने से। इस पर लगाम कसनी ही पड़ेगी। बेहतर हो कि सार्वजनिक परिवहन की हालत सुधारी जाए इससे लोगों को अनावश्यक रूप से अपने वाहन लेकर नहीं चलना पड़ेगा। व्यक्तिगत रूप से पूल सिस्टम अपनाना भी एक कारगर कदम हो सकता है। ईवन ओड सिस्टम तो दिल्ली में पहले हीअसफल रह चुका है। इन सब उपायों के अलावा वाहनों व उद्योगों से निकलने वाले धुंए के स्तर को रोकने के लिए भी सख़्त नियम लागू करने पड़ेंगे। लेकिन यदि समस्या का हल करना है तो केवल कानून बनाने शक्ति करने से बात नहीं बनेगी इसके लिए आम लोगों को भी जागरूक होकर सहयोग करना होगा।

कुदरत से छेड़छाड़ की प्रवृत्ति सबसे बड़ी वजह है स्मॉग के कहर की। हमें हर हाल में प्रकृति को संरक्षित करना होगा और राजनीति तथा निजी स्वार्थ को छोड़ते हुए ऐसी हर चीज पर सभी दलों एवं सरकारों को एक साथ प्रहार करना होगा जो प्रकृति एवं मानव जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। इनमें चाहे पराली का जलाना हो या उद्योगों से निकलने वाला धुआं हो अथवा फैक्ट्रीज और वाहनों से निकलने वाली हानिकारक गैसे हों या फिर राजनीति से निकलने वाले खतरनाक बयान और बयानवीर हों, इन सबको काबू में किए बगैर स्मॉग की समस्या से निपटना लगभग असंभव है।

यदि सचमुच ही दिल्ली एवं दूसरे शहरों के लोगों को स्मॉग की मार से बचाना है तो हमें दलीय राजनीति एवं क्षुद्र स्वार्थ सबसे पहले छोड़ने होंगें।

आज यह समय की मांग है कि हमें स्मॉग से पीड़ित शहरों एवं लोगों को राहत दिलाने के लिए उन सब कारणों को दूर करना जिनकी वजह से स्मॉग की समस्या उत्पन्न होती है। कुल मिलाकर यदि स्मॉग का हल नहीं ढूंढ पाए तो फिर यह तो तय है कि दिल्ली के फेफड़े जल्द ही ख़राब हो जाएंगे और दिल्ली ही क्यों हर उस नगर, महानगर की हालत ऐसी ही होना निश्चित है। इसलिए बेहतर हो कि समय रहते यथार्थ पारक व्यवहारिक और गहन सोच वाले कदम उठाए जाएं।

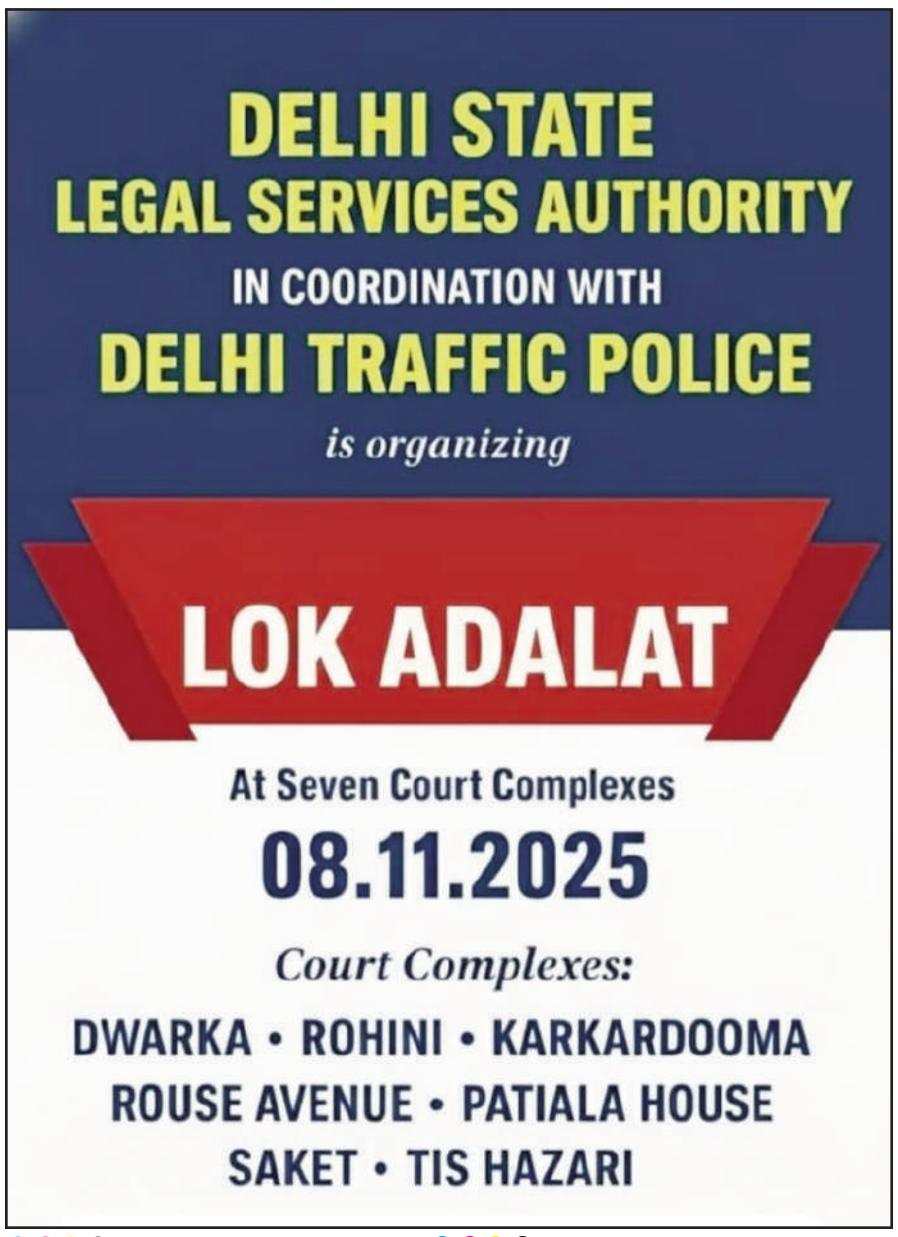

पर्यावरण पाठशाला - नदी से सीख : निरंतरता, शुद्धता और जीवन का प्रवाह

अंकुर

नदी केवल जलधारा नहीं, बल्कि एक जीवंत दर्शन है। वह हमें सिखाती है कि जीवन में सबसे बड़ा गुण है — निरंतरता। जब मैं अपने जीवन के कुछ कठिन दौरों को याद करता हूँ, तो मुझे बार-बार एक बहती हुई नदी की छवि दिखाई देती है। उस समय परिस्थितियाँ ऐसी थीं जब सब कुछ ठहर-सा गया था, पर भीतर एक आवाज़ थी — “रुको मत, बहते रहो।” शायद वही नदी की प्रेरणा थी, जिसने मुझे बार-बार गिरकर भी संभलना सिखाया।

नदी हमें बताती है कि जीवन में गति और शुद्धता का गहरा संबंध है। जब तक विचार, कर्म और लक्ष्य प्रवाहित रहते हैं, तब तक जीवन निर्मल रहता है। जैसे बहता हुआ जल सड़ता नहीं, वैसे ही जो इंसान लगातार सीखता रहता है, प्रयास करता रहता है, उसके जीवन में ठहराव नहीं आता। हमें यह भी समझना चाहिए कि नदी अपने रास्ते खुद बनाती है — पहाड़ों को काटती है, चट्टानों से लड़ती है, फिर भी अपनी धारा बनाए रखती है। यह हमें साहस और धैर्य का अद्भुत पाठ देती है — चाहे मार्ग कितना भी कठिन हो, आगे बढ़ने की चाह कभी न छोड़ो।

नदी का एक और सुंदर गुण है — निस्वार्थ देना। वह किसी से भेदभाव नहीं करती, सबको समान रूप से जल देती है। यही सच्चा सामाजिक मूल्य है — बिना अपेक्षा के योगदान देना।

आज जब हम जीवन की आपाधापी में थक जाते हैं, तो ज़रूरी है कि हम नदी की तरह अपने भीतर का प्रवाह बनाए रखें — विचारों का, प्रेम का, और सेवा का। यही प्रवाह हमें अंदर से पवित्र रखेगा और आगे बढ़ने की ऊर्जा देगा।

नदी के प्रति हमारा संकल्प

जितनी जरूरत हमें नदी की है, उतनी ही आज नदियों को हमारी है। हम पुरुष या स्त्री तो बन गए, पर अब समय है कि एक सच्चे इंसान के रूप में अपना कर्तव्य निभाएँ।

नदी हमारे जीवन की रगों में बहने वाला रक्त है — अगर उसे हमने गंदा किया, तो अपने ही अस्तित्व को कमजोर किया।

आइए, आज एक संकल्प लें — कितनी भी परिस्थिति क्यों न हो, हम कभी भी बहती धारा को गंदा नहीं करेंगे।

नदी को पवित्र रखना केवल पर्यावरण नहीं, यह हमारी संस्कृति और संस्कार की रक्षा है।

जब तक नदियाँ स्वच्छ और जीवंत रहेंगी, तब तक हमारा जीवन भी प्रवाहित और प्रकाशमय रहेगा।

indiangreenbuddy@gmail.

तुलसी विवाह : भक्ति, प्रकृति और सनातन संस्कृति का पावन संगम

देवउठनी एकादशी के पावन अवसर पर चहुंओर श्रद्धा, आस्था और उल्लास के साथ तुलसी विवाह का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर तुलसी और शालिग्राम का विवाह वेद-मंत्रों, मंगल गीतों और पारंपरिक विधियों के साथ सम्पन्न होता है। महिलाएं दीप प्रज्वलित कर घर-आँगन में दिवाली जैसा उत्सव मनाती है और भगवान विष्णु तथा तुलसी का पूजन करती है।

पौराणिक कथा : वृंदा और भगवान विष्णु का दिव्य संबंध

पुराणों के अनुसार वृंदा नामक पतिव्रता स्त्री का विवाह दानव राजा जलंधर से हुआ था। उसकी पतिव्रता की शक्ति से जलंधर अजेय बना रहा। देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने जलंधर का रूप धारण कर वृंदा की तपस्या भंग की, जिससे जलंधर की मृत्यु हुई।

दुःख और क्रोध में वृंदा ने भगवान विष्णु को पत्थर बनने का श्राप दिया। भगवान ने इसे सहर्ष स्वीकार किया और शालिग्राम बने। बाद में वृंदा ने श्राप वापस लेकर सती हो गईं। उनकी राख से उत्पन्न पौधा तुलसी कहलाया। भगवान विष्णु ने आशीर्वाद दिया कि शालिग्राम और तुलसी का विवाह होगा, और तभी से देवउठनी एकादशी को यह पावन पर्व मनाया जाने लगा।

तुलसी विवाह का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व

तुलसी विवाह केवल पूजा नहीं, बल्कि सनातन धर्म की पारिवारिक संस्कृति का प्रतीक है। इसमें श्रद्धा, विवाह संस्कार, प्रकृति पूजन और आयुर्वेदिक संतुलन का अद्भुत समावेश है।

इस दिन गन्ने का मंडप बनाकर तुलसी और शालिग्राम (विष्णु स्वरूप) का विवाह कराया जाता है। महिलाएँ मंगलगीत गाती हैं, आरती करती हैं और अपने घरों को दीपों से सजाती हैं। यह परंपरा यह सिखाती है कि सृष्टि का प्रत्येक तत्व — वृक्ष, जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी — सभी जीवंत और पूजनीय हैं।

प्रकृति और आयुर्वेद का संतुलन

इस दिन आंवला, ज्वार, अमाड़ी की भाजी, बेर आदि की पूजा की जाती है। ये सभी न केवल धार्मिक प्रतीक हैं, बल्कि ऋतु परिवर्तन के अनुरूप शरीर और मन को संतुलित रखने वाले प्राकृतिक पोषक हैं।

आंवला — अमृत समान फल, जो रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है।

ज्वार — शीत ऋतु में पाचन और ऊर्जा के लिए उत्तम अनाज।

अमाड़ी की भाजी — लौह तत्व और प्रोटीन से भरपूर, रक्तवर्धक और रोगनाशक।

बेर — शीत ऋतु का संतुलक फल, जो त्वचा व पाचन के लिए लाभकारी है।

गन्ने का मंडप — मधुरता, समृद्धि और एकता का प्रतीक।

आयुर्वेद कहता है —

"ऋतुसंधि में आहार-विहार का परिवर्तन शरीर को संतुलित करता है।"

इसी सिद्धांत पर यह उत्सव आधारित है, जहाँ पूजा, अन्न, वनस्पति और मौसम का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

सनातन धर्म की सांस्कृतिक भावना

सनातन धर्म में तुलसी केवल एक पौधा नहीं, बल्कि पवित्रता, मातृत्व और धर्मनिष्ठा की मूर्ति है। तुलसी के बिना विष्णु पूजा अधूरी मानी जाती है क्योंकि यह भक्ति और प्रकृति के मिलन का प्रतीक है।

यह पर्व हमें याद दिलाता है कि सनातन संस्कृति में प्रत्येक धर्मकर्म के पीछे एक गहरा वैज्ञानिक, पारिस्थितिक और आत्मिक भाव निहित है।

"जब मनुष्य प्रकृति से जुड़ता है, तब ही वह ईश्वर के समीप पहुँचता है।"

तुलसी विवाह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मानव और प्रकृति के सहअस्तित्व का उत्सव है। इसमें भक्ति की गहराई, आयुर्वेद का ज्ञान और सनातन संस्कृति की जड़ें एक साथ जुड़ती हैं।

यह पर्व हमें सिखाता है कि जब हम तुलसी, जल, वृक्ष और अन्न की पूजा करते हैं, तो वास्तव में हम जीवन की निरंतरता और सृष्टि के संतुलन को प्रणाम कर रहे होते हैं।

इस प्रकार तुलसी विवाह केवल देवउठनी एकादशी का पर्व नहीं, बल्कि सनातन धर्म की जीवंत परंपरा है — जहाँ श्रद्धा, विज्ञान और संस्कृति दीप की तरह साथ-साथ प्रज्वलित होती हैं।

स्वाति सिंह साहिबा राठौर महेश्वर
मध्यप्रदेश

माँ समलेश्वरी की पावन धरा पर 140 धर्मांतरित बंधुओं की हुई घर वापसी

प्रबल प्रताप सिंह जूदेव ने पैर पखारकर कराया सनातन धर्म में पुन : प्रवेश

सुनील चिंचोलकर

सारंगढ़, छत्तीसगढ़। माँ समलेश्वरी की पावन भूमि सारंगढ़ में आयोजित विराट हिन्दू सम्मेलन में आज एक ऐतिहासिक क्षण देखने को मिला, जब अखिल भारतीय घर वापसी प्रमुख एवं भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष प्रबल प्रताप सिंह जूदेव ने 140 भटके हुए भाई-बहनों का विधिवत सनातन धर्म में पुनः स्वागत कराया।

यह कार्यक्रम परम पूजनीय अजय उपाध्याय जी महाराज के सानिध्य में हुआ। जूदेव ने स्वयं सभी धर्मांतरित बंधुओं के पैर पखारकर उनका स्वागत किया और कहा — "माँ समलेश्वरी की इस पवित्र भूमि पर आज धर्म की पुनःस्थापना का गौरवशाली क्षण है। सनातन धर्म केवल आस्था नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक उत्कृष्ट पद्धति है जो प्रेम, समरसता और सत्य के मार्ग पर अग्रसर करती है।"

उन्होंने कहा कि यह आयोजन परम पूजनीय कार्तिक उराव जी को समर्पित है, जिन्होंने जनजातीय समाज की संस्कृति और अधिकारों की रक्षा हेतु अपना जीवन समर्पित किया। जूदेव ने आगे कहा — "पूज्य पिताजी कुमार दिलीप सिंह जूदेव जी द्वारा प्रारंभ किया गया घर वापसी अभियान राष्ट्र निर्माण का कार्य है, जिसे हम जीवन पर्यंत आगे बढ़ाते रहेंगे।"

कार्यक्रम में घर वापसी छत्तीसगढ़ प्रांत की संयोजिका अंजू गबेल ने युवाओं से धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए एकजुट होने का आह्वान किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संजय भूषण पांडेय, अध्यक्ष जिला पंचायत (सारंगढ़) ने की। मंच पर राजकुमार चौधरी (प्रांत प्रमुख धर्मजागरण), पूर्व विधायक केराबाई मनहर, मेहर बाई नायक (स्वाध्याय प्रमुख), ज्योति पटेल (जिलाध्यक्ष भाजपा) सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। युवा टीम में रवि तिवारी, किशन गुप्ता, इशांत शर्मा, धीरज सिंह का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन अमित गोगले ने किया। सभी वक्ताओं ने धर्म, समाज और राष्ट्र की एकता के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प लिया।

लेखक गाँव : शब्दों की साधना और सृजन का हिमालय

– डॉ. सत्यवान सौरभ

उत्तराखंड की वादियों में बसा थानो गाँव आज साहित्य और संस्कृति की नई पहचान बन चुका है। यह वही भूमि है जहाँ शब्दों की साधना और सृजन की ऊर्जा एक साथ प्रवाहित हो रही है। यहाँ स्थापित देश का पहला 'लेखक गाँव' अब केवल एक परियोजना नहीं, बल्कि एक आंदोलन बन चुका है — वह आंदोलन जो लेखकों, कवियों, विचारकों और कलाकारों को उनके सृजन के मूल स्रोत, अर्थात प्रकृति और आत्मा से जोड़ता है।

◈ शब्दों के मठ की परिकल्पना

लेखक गाँव का विचार जितना अनोखा है, उतना ही प्रेरणादायक भी। इस अवधारणा के प्रणेता हैं उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, शिक्षाविद् और सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', जिन्होंने अपने जीवन में साहित्य और समाज दोनों को समान रूप से साधा है। उन्होंने यह अनुभव किया कि आज के लेखक, कवि और विचारक भागदौड़ और शोरगुल भरी दुनिया में वह सृजनात्मक एकांत नहीं पा पाते जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है। इसी विचार से जन्म हुआ "लेखक गाँव" का — एक ऐसी जगह जहाँ शब्दों को सांस लेने की जगह मिले, विचारों को उड़ान मिले और रचनाकारों को आत्म-साक्षात्कार का अवसर। देहरादून के समीप थानो गाँव को इस अनूठे प्रकल्प के लिए चुना गया। यह स्थान हिमालय की गोद में बसा है, जहाँ हरियाली, नदी, पर्वत और शांति की छाया है। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्यता लेखकों के भीतर सोई संवेदनाओं को जगाने का सामर्थ्य रखती है।

◈ एक अद्भुत आयोजन : "स्पर्श हिमालय महोत्सव-2024"

अक्टूबर 2024 में जब स्पर्श हिमालय फाउंडेशन द्वारा "स्पर्श हिमालय महोत्सव" का आयोजन हुआ, तब थानो ने भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा। यह केवल एक महोत्सव नहीं, बल्कि साहित्य, कला और संस्कृति का विराट संगम था। इस पाँच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय आयोजन में 65 से अधिक देशों के लेखक, कवि, कलाकार और विचारक शामिल हुए। उन्होंने न केवल अपनी रचनाएँ और कलाकृतियाँ साझा कीं, बल्कि हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रति अपनी भावनाएँ भी प्रकट कीं।

यह आयोजन इस बात का प्रमाण था कि हिंदी और भारतीय संस्कृति आज भी वैश्विक स्तर पर आकर्षण का केंद्र हैं। इस महोत्सव ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पुनः प्रतिष्ठित किया। साथ ही, यह तय किया कि हर वर्ष इसी स्थान पर साहित्यिक मंथन और सांस्कृतिक संवाद का यह महोत्सव आयोजित किया जाएगा।

◈ 3 से 5 नवम्बर 2025 : नए अध्याय की तैयारी

अब एक बार फिर साहित्य प्रेमी और रचनाकार उत्सुक हैं, क्योंकि 3 से 5 नवम्बर 2025 को लेखक गाँव, थानो में "स्पर्श हिमालय महोत्सव-2025" आयोजित होने जा रहा है।

इस बार महोत्सव का दायरा और भी व्यापक होगा — देश-विदेश से और अधिक लेखकों, कवियों, अनुवादकों, चित्रकारों, फिल्मकारों और संगीतकारों की भागीदारी होगी।

थीम तय की गई है – "शब्द से विश्व तक : संस्कृति का संवाद"। यह विषय अपने आप में साहित्य की वैश्विक भूमिका को रेखांकित करता है।

इस आयोजन में हिंदी भाषा और भारतीय साहित्य के अंतरराष्ट्रीय प्रसार पर विशेष सत्र होंगे। साथ ही युवा लेखकों और डिजिटल युग की रचनात्मकता पर भी विमर्श किया जाएगा।

यह आयोजन न केवल अनुभवी लेखकों को बल्कि नई पीढ़ी के रचनाकारों को भी एक साझा मंच प्रदान करेगा।

◈ रचनाकारों के लिए स्वर्ग समान वातावरण

लेखक गाँव की संरचना पूरी तरह साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रखकर की गई है। यहाँ स्थित "लेखक कुटीर" उन रचनाकारों के निवास हेतु बनाए गए हैं जो कुछ समय के लिए प्रकृति की गोद में रहकर अपने लेखन पर केंद्रित होना चाहते हैं। हर कुटीर में आधुनिक सुविधाओं के साथ-साथ सादगी और पहाड़ी परंपरा की झलक मिलती है। इन कुटीरों के नाम प्रसिद्ध लेखकों और कवियों के नाम पर रखे जाने का प्रस्ताव है — ताकि आने वाले लेखक उनसे प्रेरणा ले सकें।

यहाँ निर्मित "हिमालयी पुस्तकालय" किसी मंदिर से कम नहीं। इसमें साहित्य, संस्कृति, इतिहास, भूगोल, दर्शन, राजनीति और विज्ञान से जुड़ी पुस्तकों का विशाल संग्रह है। विशेष रूप से हिमालयी राज्यों की लोककथाएँ, दुर्लभ पांडुलिपियाँ, सिक्के, मूर्तियाँ और पहाड़ी चित्रकला इस पुस्तकालय की पहचान होंगी।

यह पुस्तकालय पहाड़ी स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है—जहाँ खोली, छज्जा और तिवारी जैसी पारंपरिक संरचनाएँ स्थानीय पत्थर और लकड़ी से बनी हैं।

◈ प्रकृति, संस्कृति और आत्मा का त्रिवेणी संगम

थानो का यह लेखक गाँव केवल भवनों का समूह नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तंत्र है। यहाँ की संजिवनी वाटिका और नक्षत्र-नवग्रह वाटिका रचनाकारों को प्रकृति और ब्रह्मांड के साथ संवाद स्थापित करने की प्रेरणा देती हैं।

यह स्थान ध्यान, चिंतन और आत्मावलोकन के लिए आदर्श है। पहाड़ों की ताजी हवा, पक्षियों का मधुर कलरव और प्रकृति की नीरवता लेखक को भीतर तक झकझोर देती है, जिससे सृजन स्वतः प्रवाहित होने लगता है। जो भी व्यक्ति यहाँ कुछ दिन बिताता है, वह स्वयं में एक नई ऊर्जा और दृष्टि लेकर लौटता है। यह स्थान मनुष्य के भीतर संवेदना, करुणा और सृजनशीलता के बीज बोता है — ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में तपोवन साधना के केंद्र हुआ करते थे।

◈ सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण

"लेखक गाँव" केवल आधुनिक साहित्यिक प्रयोगों का मंच नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का केंद्र भी है। यहाँ स्थित गंगा और हिमालय संग्रहालय में प्राचीन मूर्तियाँ, लोक कलाएँ, सिक्के, हस्तशिल्प, और दुर्लभ दस्तावेज़ प्रदर्शित किए जाएंगे।

यह संग्रहालय युवाओं को यह समझाने का माध्यम बनेगा कि हमारी संस्कृति केवल इतिहास की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान का आधार भी है।

इस स्थान का उद्देश्य है — "साहित्य के माध्यम से संस्कृति की रक्षा, और संस्कृति के माध्यम से मानवता का विकास।"

◈ वैश्विक संदर्भ में हिंदी का विस्तार

स्पर्श हिमालय महोत्सव और लेखक गाँव की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि इसने हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाया है।

विदेशों से आए लेखकों ने न केवल हिंदी के साहित्य को समझा बल्कि उसे अपनी भाषा में अनुवादित करने का संकल्प भी लिया। इस प्रकार, ये लेखक अपने-अपने देशों में हिंदी के ब्रांड एम्बेसडर बन रहे हैं।

यह प्रयास भारत को सॉफ्ट पावर के रूप में स्थापित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है।

◈ भविष्य की राह

थानो का लेखक गाँव आज एक मॉडल बन चुका है। आने वाले समय में ऐसे और गाँव देश के अन्य हिस्सों में भी विकसित किए जा सकते हैं—जैसे लेखक धाम या कला ग्राम।

ये स्थान न केवल पर्यटन को बढ़ावा देंगे, बल्कि सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करेंगे।

लेखक, शोधकर्ता, विद्यार्थी और कला प्रेमी यहाँ आकर अपनी सृजनशीलता को नया आयाम दे सकेंगे।

◈ शब्दों का हिमालय

थानो का "लेखक गाँव" वास्तव में सृजन की तपोभूमि है। यह वह स्थान है जहाँ शब्द साधना बन जाते हैं और लेखन पूजा का रूप ले लेता है।

यह गाँव हमें याद दिलाता है कि तकनीक और प्रगति के इस युग में भी साहित्य की जड़ें प्रकृति और आत्मा से जुड़ी हैं।

आने वाले 3 से 5 नवम्बर 2025 को जब एक बार फिर स्पर्श हिमालय महोत्सव का नया अध्याय आरंभ होगा, तब यह केवल एक सांस्कृतिक आयोजन नहीं होगा, बल्कि भारत की साहित्यिक चेतना का उत्सव होगा — एक ऐसा उत्सव जो शब्दों को पर्वत की ऊँचाइयों तक ले जाएगा।

"लेखक गाँव" इस बात का प्रमाण है कि जब साहित्य और संस्कृति एक साथ चलते हैं, तो समाज केवल प्रगतिशील नहीं होता — वह प्रेरणास्रोत बन जाता है।

यह गाँव आने वाले समय में निश्चय ही भारत की सांस्कृतिक आत्मा का केंद्र बनेगा — जहाँ हर शब्द हिमालय की तरह अडिग, और हर विचार गंगा की तरह पवित्र होगा।

शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान 2025 की घोषणा

दिल्ली पुलिस की सब इंस्पेक्टर किरण सेठी, पत्रकार डॉ.शंभू पंवार, डॉ. कविता ,उमंग सरीन, एवं 13 लेखक होंगे सम्मानित

डॉ. शंभू पंवार

नई दिल्ली। राजधानी की प्रतिष्ठित संस्था सविता चड्ढा जनसेवा समिति, दिल्ली की संस्थापिका एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सविता चड्ढा ने अपनी सुपुत्री की स्मृति में प्रतिवर्ष दिए जाने वाले "शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान 2025" की घोषणा की है।

निर्णायक मंडल की बैठक डॉ. सविता चड्ढा की अध्यक्षता में चड्ढा निवास पर सम्पन्न हुई। इस बैठक में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. अंजु कवात्रा, डॉ. कल्पना पाण्डेय तथा डॉ. गीतांजलि नीरज अरोरा निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में उपस्थित रहीं।बैठक में वर्ष 2025 के लिए डॉ. कविता मल्होत्रा की पुस्तक "मां" को शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान के लिए चयनित किया गया। इस सम्मान के अंतर्गत ₹5100 की सम्मान राशि, प्रतीक-चिन्ह, अंगवस्त्र एवं सम्मान-पत्र प्रदान किया जाएगा।इसके अतिरिक्त, विशेष श्रेणी के अंतर्गत —"हीरो में हीरा सम्मान" दिल्ली पुलिस की लेडी सिंघम सब इंस्पेक्टर किरण सेठी को,"गीतकारश्री सम्मान" प्रसिद्ध कवयित्री उमंग सरीन को, तथा"श्रेष्ठश्री पत्रकारिता सम्मान" प्रेस फोटोग्राफर श्री सुभाष चड्ढा की स्मृति में, वैश्विक स्तर पर सटीक एवं सार्थक पत्रकारिता के लिए वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय लेखक एवं पत्रकार डॉ. शंभू पंवार को प्रदान किया जाएगा।

इसके अलावा, प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 13 उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों का चयन किया गया। इनमें शामिल हैं आशिमा कौल (रिश्तों के महीन रेशे), अर्चना कोचर (मां–ममता से निर्ममता तक), डॉ. यति शर्मा (संबंधों का धर्मशास्त्र), डॉ. रेखा मित्तल (नेह के धागे), नाजरीन अंसारी (जिंदगी हर पल मुस्कुराना), ज्योति स्वरूप (जीवन कैसे जिएं), कुमार सुबोध (रिपोर्ताज), मधु सक्सेना (चुटकी भर), सुनीला नारंग (मेरी आकांक्षा), सविता स्याल (प्रकृति का श्रृंगार), अमोद कुमार (आंसू की कीमत केवल आंसू है), डॉ. मेघा अग्रवाल (ख्वाबों का गलियारा) और रीटा सक्सेना (अनुभूति)।सभी चयनित विभूतियों को यह सम्मान आगामी 12 दिसंबर 2025 को नई दिल्ली स्थित हिंदी भवन में आयोजित होने वाले भव्य सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा।

श्रेष्ठ और दृढ़ इच्छाशक्ति सफ़लता की चाबी है : मज़बूत इच्छाशक्ति के आगे हर समस्या छोटी होती है

प्रबल इच्छाशक्ति मुसीबतों से लड़ने की कुंजी है – दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे खुद सफ़लताएं नतमस्तक होकर कदम चूमती है – **एड किशन भावनानी**

सृष्टि रचनाकर्ता ने मानवीय जीव के रूप में बहुत ही खूबसूरत रचना कर उसमें अनेक गुण दोषों का संयोजन उसने कर दिया है और उनका चुनाव करने के लिए श्रेष्ठ बुद्धि कौशलता रुपी एक सशक्त अस्त्र भी दिया है, बस!! अब अपने जीवन चक्र को सफलताओं या असफलताओं की ओर ले जाना मानवीय जीव के हाथ में है।

साथियों बात अगर हम माननीय जीवन ने गुणों की करें तो उनके गुणों में से एक इच्छाशक्ति महत्वपूर्ण गुण है जो सफलता की चाबी भी है! परंतु न जाने क्यों हम इसको अनदेखा कर देते हैं और हम असफल हो जाते हैं और उसका दोष किस्मत या सृष्टि रचनाकर्ता को देते हैं जबकि उसनें मनुष्य जीव में गुणों का अंबार भरा है!! बस!!जरूरत है हमें अपने बुद्धि कौशलता से उसे पहचान कर प्रयोग करने की! तो सफलता आकर हमारे कदम चूमेगी।

साथियों बात अगर हम दृढ़ इच्छाशक्ति की करें तो यह सफ़लता की चाबी है। मजबूत इच्छाशक्ति के आगे हर समस्या छोटी हो जाती है, क्योंकि प्रबल इच्छा शक्ति मुसीबतों से लड़ने की कुंजी है जिसके बल पर हम बड़ी से बड़ी पहाड़ तुल्य समस्याओं से भी यूं मुकाबला कर फ़तह हासिल कर सकते हैं।

साथियों हम सबके जीवन में कई बार ऐसी स्थितियां आती हैं, जब हमें लगता है कि सब कुछ गड़बड़ हो रहा है। ऐसी स्थिति में इच्छाशक्ति ही आपको मुसीबतों से लड़ने में मदद करती है। इस शक्ति के अंतर्गत दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास, कार्य करने की अनवरत चेष्टा और अध्यवसाय आदि गुण आ जाते हैं। यह शक्ति मनुष्य के मुखमंडल पर अपूर्व तेज उत्पन्न करती है और आंखों में सम्मोहन का जादू लाती है।

साथियों बात अगर हम इच्छा शक्ति की परिभाषा की करें तो, इच्छाशक्ति वह वृत्ति चक्र है जिसके अंतर्गत प्रत्यय, अनुभूति, इच्छा, गति या प्रवृत्ति, शरीर धर्म सबका योग रहता है। जो संकल्प को साकार करने का माध्यम बनती है वह इच्छाशक्ति कहलाती है। ऐसी बलवती इच्छा को जिसकी ज्योति अहर्निश कभी मंद न हो, उसे दृढ़ इच्छाशक्ति कहते हैं। हम सबके जीवन में कई बार ऐसी स्थितियां आती हैं, जब हमें लगता है कि सब कुछ गड़बड़ हो रहा है। ऐसी स्थिति में इच्छाशक्ति ही हमको मुसीबतों से लड़ने में मदद करती है। इस शक्ति के अंतर्गत दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास, कार्य करने की अनवरत चेष्टा और अध्यवसाय आदि गुण आ जाते हैं। यह शक्ति मनुष्य के मुखमंडल पर अपूर्व तेज उत्पन्न करती है और आंखों में सम्मोहन का जादू लाती है।

साथियों बात अगर हम दृढ़ इच्छाशक्ति के टाइमिंग की करें तो, जीवन में किसी भी चीज को पाने के लिए मेहनत से पहले मजबूत इच्छाशक्ति का होना बेहद जरूरी है। जैसे, कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति शुरुआत में किसी चीज को पाना चाहता है लेकिन धीरे-धीरे उसका हौंसला टूटने लगता है या उसका मन बदल जाता है, ऐसा कमजोर इच्छाशक्ति के कारण होता है इसलिए किसी भी चीज को पाने के लिए मजबूत इच्छाशक्ति का होना बहुत जरूरी है। ऐसे में हम आपको बता रहे हैं, ऐसी बातें जिनपर अमल करके हमारी इच्छाशक्ति मजबूत होगी।

साथियों बात अगर हम इच्छा शक्ति को मजबूत करने की करें तो, अपने काम पर दृढ रहें, अपनी इच्छा शक्ति को बहुत ज्यादा मजबूत बनाने के लिए यह भी एक बहुत ही अच्छा तरीका है कि हम अपने काम पर बहुत जबरदस्त तरीके से फोकस करें। यानें हम अपने काम पर दृढ़ रहें। कोई कुछ भी कहे अगर हमने यह मन बना लिया है कि हमको ये काम करना है तो हमको ये काम करना ही करना है। हमको किसी और बातों पर ध्यान नहीं देना है। अगर हम अपने काम पर दृढ रहेंगे तो हमारा दिमाग यह बात समझ लेगा कि यह चीज हमारे जीवन में बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है इसलिए हम इस काम को बहुत ही दिल से मन लगा कर दृढ़ प्रतिज्ञ होकर कर रहे हैं।

साथियों बात अगर हम इच्छाशक्ति के लिए लक्ष्यों की करें तो, हम अपना लक्ष्य निश्चित करें अगर हमको हमारे जीवन में सफलता चाहिए तो यह हमारे लिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि सबसे पहले हम हमारे जीवन में अपने लक्ष्य को निश्चित करें। तब ही हम किसी चीज को अपने जीवन में फॉलो कर पाओगे। नहीं तो ऐसे हम अपने जीवन में किस चीज को फॉलो करोगे, किस चीज के लिए हम विल पावर बढ़ाएंगे, तो सबसे पहले हमारे लिए जरूरी है कि हम अपने जीवन में लक्ष्य को निर्धारित करें। एक बार हम अपने जीवन में अपने लक्ष्य को निर्धारित कर लेंगे उसके बाद हमारा दिमाग लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करने लगेगा। बस हम अपने लक्ष्य पर दृढ़ रहें।

साथियों बात अगर हम इच्छाशक्ति को जगाने की करें तो, निम्न बिंदुओं पर अभ्यास कर इच्छाशक्ति को जाग्रत किया जा सकता है। इच्छाशक्ति को मजबूत बनाने के लिए शुरुआत करने के लिए सबसे पहले हमें तनाव के स्तर का प्रबंधन करने की जरूरत होती है। (1)सकारात्मक नजरिया (2)तनाव प्रबंधन करना सीखें (3) खुद पर पूरा विश्वास रखें (4)बेहतर ऊर्जा प्रबंधन करें (5) अंतःशक्तियों को केंद्रीभूत करें (6) स्वयं के प्रति ईमानदार बनें (7) सही पोषण, योग और व्यायाम।

साथिया बात अगर हम इच्छा शक्ति के टॉनिक की करें तो, जैसे हैं वैसे ही बने रहें दिखावा बिल्कुल भी मत करें हम जैसे भी हो वैसे ही बने रहें। किसी भी प्रकार का कोई शो ऑफ करने की कोई जरूरत नहीं है। अगर हम कोई एक चीज जैसे हो वैसे ही प्राप्त करते हो तो वह चीजें हमको जिंदगी भर तक हमारे साथ रहती है और हमको अच्छा रिजल्ट भी मिलता है। दरअसल यह चीज हम अपने वास्तविक परिश्रम से हासिल किए रहते हो इसलिए वह जिंदगी भर हमारे साथ रहती है और यह हमारी इच्छा शक्ति को बढ़ाता है। ना केवल हमारी इच्छा शक्ति को बढ़ाता है बल्कि हमारे आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है।

साथियों बात अगर हम इच्छा शक्ति के रोडमैप की करें तो, पेपर पर अपने लक्ष्य को लिखें इसके लिए हमको थोड़ी दिमागी कसरत भी करनी पड़ेगी। बेहतर होगा कि हम अपना लक्ष्य पेपर पर लिखकर उससे जुड़ी चुनौतियां भी लिख लें, इससे हमको उन चुनौतियों से कैसे लड़ना है, यह भी अंदाजा हो जाएगा।

आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति

जीवन में कई बार ऐसे मौके आएंगे, जब हमारा विश्वास डगमगाने लग जाएगा और हमको लगेगा कि हमारा लक्ष्य व्यर्थ है, लेकिन उस वक्त हमको इन नकरात्मकताओं से दूर रहकर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना है।

साथियों बात अगर हम इच्छाशक्ति को चिंता से दूर करने की करें तो...चिंता ना करें, चिंतन करेंः किसी भी बात की चिंता मत करें। बल्कि उसके बारे में चिंतन करें कि इसका समाधान क्या हो सकता है। इससे एक तो हमारी मानसिक शक्ति बढ़ेगी और दूसरा हमारी समस्याओं का समाधान भी होगा। यह एक ऐसा अभ्यास है, इससे धीरे-धीरे हम इतने मजबूत हो जाएंगे कि हमको हर मुश्किल एक अवसर लगेगी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि श्रेष्ठ और दृढ़ इच्छाशक्ति सफलता की चाबी है! मजबूत इच्छाशक्ति के आगे हर समस्या छोटी होती है। प्रबल इच्छा शक्ति मुसीबतों से लड़ने की कुंजी है-दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे खुद सफलताएं नतमस्तक होकर कदम चूमती है।

-संकलनकर्ता लेखक - क़र विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यम सीए (एटीसी)

पलटूराम की अवसरवादी राजनीति का अंत होना तय

(आलेख : संजय पराते)

कांग्रेस की अहंकारी राजनीति से जो झटका महागठबंधन को लगने के आसार बन गए थे, महागठबंधन की जीत के बाद तेजस्वी को मुख्यमंत्री बनाने की सहमति की घोषणा के बाद उस पर रोक लग गई है। दूसरी ओर, भाजपा ने एनडीए गठबंधन की ओर से यह साफ कर दिया है कि उसके मुख्यमंत्री का चयन चुनाव के बाद ही होगा। साफ मतलब है कि आज भले ही नीतीश के चेहरे को सामने रखकर भाजपा चुनाव लड़ रही है, लेकिन यदि एनडीए जीतता है, जिसके आसार बहुत कम नजर आ रहे हैं, तो नीतीश का मुख्यमंत्री बनना तय नहीं है। नीतीश कुमार अब जिस फंदे में फंस गए हैं, उससे बाहर निकलना अब उनके लिए संभव नहीं है और चुनाव के बाद यदि वे ऐसी कोशिश करते हैं, तो उनकी पार्टी ही उनको दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल बाहर फेंकेगी। भाजपा ने जद(यू) को निगलने की पूरी तैयारी कर ली है। तेजस्वी के मुख्यमंत्री होने की घोषणा के बाद नीतीश कुमार के पलटी मारने के मौके भी खत्म हो गए है। नीतीश का भविष्य अब भाजपा-आरएसएस ने तय कर दिया है और चुनाव के नतीजे चाहे इस ओर जाएं या उस ओर, एक नतीजा बहुत ही स्पष्ट है कि बिहार को 'सुशासन बाबू' की 'पलटूराम की राजनीति' से मुक्ति मिलने जा रही है। बिहार की आम जनता ने भी यह तय कर लिया है, जो पिछले कई सालों से नीतीश कुमार की अवसरवादी राजनीति को झेल रही है। यह वही नीतीश कुमार हैं, जिन्होंने भाजपा जैसी सांप्रदायिक, भ्रष्ट और आपराधिक पार्टी को, जिसका रथ लालू ने रोक दिया था, को बिहार में पैर जमाने का मौका दिया है।

पिछले चुनाव में महागठबंधन और एनडीए के बीच मात्र 12-13 हजार वोटों का ही अंतर था, लेकिन इस अंतर के कारण एनडीए की 15 सीटें बढ़ गई थीं। कई सीटों पर मतगणना में प्रशासन द्वारा भाजपा के पक्ष में धांधली करने के आरोप भी लगे थे। लेकिन चुनाव आयोग द्वारा बिहार में मतदाता सूची के एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) करने के आदेश के बाद जो हो-हल्ला हुआ और पूरे देश भर से जो चीजें सामने आई, उससे यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि पिछले लोकसभा चुनाव सहित अभी तक भाजपा को मिली जीतों में चुनाव आयोग और विभिन्न प्रकार की सुनियोजित धांधलियों का बड़ा योगदान रहा है। इस पोल पट्टी के खुलने से भाजपा की चमक और धमक पर बहुत असर पड़ा है और आम जनता की नजरों में, वास्तव में, भाजपा की राजनैतिक साख गिरी ही है। सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप और आम जनता में फैली जागरूकता के बाद अब सत्ता पक्ष द्वारा बिहार चुनाव में बड़े पैमाने पर धांधली किए जाने की संभावना कम ही हुई है। इसका सीधा असर भाजपा-जदयू खेमे के चुनाव नतीजों पर पड़ेगा।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी कि पांच साल पहले 12-13 हजार वोटों का अंतर इस बार महागठबंधन के पक्ष में 12-13 लाख वोटों के अंतर में बदला हुआ दिख जाएं। इन पांच सालों में गंगा में बहुत पानी बह चुका है। बिहार में गंगा नदी की लंबाई 445 किमी. है और यह नदी राज्य के बीचों बीच बहती है। जिन जिलों से होकर गंगा बहती है, उनमें राज्य के प्रमुख 12 जिले -- बक्सर, भोजपुर, सारण, पटना, वैशाली, समस्तीपुर, बेगुसराय, मुंगेर, खगड़िया, कटिहार, भागलपुर और लखीसराय -- आते हैं। इन सभी जिलों में भाजपा-जद(यू) गठबंधन की हालत खराब है। हालत इतनी खराब है कि यदि प्रधानमंत्री मोदी यहां आकर ₹मां गंगा ने बुलाया है₹ का नारा लगाए, तब भी मां गंगा शायद ही उनकी कोई मदद करने को तैयार हो। इस बार मां गंगा का आशीर्वाद महागठबंधन के साथ दिख रहा है। अब इसे प्रधानमंत्री अपनी ओछी भाषा में महाठगबंधन कहे या महालठबंधन, या उसके साथ जुड़े दलों को अटक-झटक-भटक-लटक दल, या कुछ और ही क्यों न कहें। आम जनता जानती है कि आज नीतीश-मोदी का गठबंधन ही ₹महालूटबंधन₹ है, जो दाना और जाल फैलाकर शिकार की ताक में बैठा है।

पिछली बार महागठबंधन की हार का एक बड़ा कारण यह था कि कांग्रेस ने अपनी औकात से ज्यादा 70 सीटों पर चुनाव लड़ा था, लेकिन जीत हासिल की थी सिर्फ़ 19 पर। वामपंथी दलों ने बहुत कम सीटों पर चुनाव लड़ा था और उसकी जीत की दर कांग्रेस से लगभग दुगुनी थी। संदेश साफ था कि वामपंथी दलों को यदि ज्यादा सीटें आबंटित की जाती, तो चुनाव के नतीजे महागठबंधन के पक्ष में पलट भी सकते थे। लेकिन कांग्रेस ने इस संदेश को ग्रहण नहीं किया और कुछ सीटों पर वामपंथी दलों के साथ और राजद के साथ टकराव की स्थिति बनी है। इससे भाजपा के खिलाफ लड़ने का और धर्मनिरपेक्षता के लिए लड़ने की कांग्रेस की समझदारी पर सवाल ही खड़े हुए हैं। बिहार में कांग्रेस और वामपंथ का चुनावी जनाधार लगभग बराबर है। लेकिन ज्यादा सीटों पर लड़ने की इस बार भी वामपंथ ने ललक नहीं दिखाई है और इस बार वामपंथ पहले से कहीं ज्यादा एकजुटता और मजबूती के साथ लड़ रहा है और पिछली बार की तुलना में वामपंथ की बहार और ज्यादा दिख रही है। वामपंथ की ज्यादा सफलता महागठबंधन के टिकाऊ भविष्य के लिए जरूरी है।

एसआईआर का मुद्दा चुनाव में गायब हुआ दिख रहा है, जबकि 'वोटर अधिकार यात्रा' में यही मुद्दा केंद्र में था। सुप्रीम कोर्ट द्वारा चुनाव आयोग को आधार कार्ड को स्वीकार करने का निर्देश देने और इस आधार पर काटे गए मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में जोड़ने के आयोग के फैसले के बाद यह मुद्दा पृष्ठभूमि में चला गया है। लेकिन एसआईआर के जरिए बड़े पैमाने पर पात्र मतदाताओं को, जिनमें से अधिकांश सामाजिक-आर्थिक रूप से कमजोर आदिवासी, दलित और पिछड़े समुदाय के गरीब वर्ग के लोग हैं, मतदाता सूची से बाहर धकेलने का खतरा अभी टला नहीं है। आगामी विधानसभा चुनावों के साथ पूरे देश के पैमाने पर इस मुद्दे पर चुनाव आयोग के साथ एक और संघर्ष हमें देखने को मिलेगा, क्योंकि अब चुनाव आयोग एक स्वतंत्र संवैधानिक संस्था न होकर, भाजपा-आरएसएस की जेबी संस्था के रूप में अपना कायापलट कर चुकी है। इसलिए बिहार चुनाव प्रचार के दौरान महागठबंधन को फिर से इस मुद्दे को केंद्र में लाना होगा, जिसके कारण उसने भाजपा-जद(यू) पर अपनी बढ़त हासिल की थी। बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, खेती-किसानी के मुद्दे तो हैं ही, जिसे पीछे धकेलने की भाजपाई साजिश से महागठबंधन को तो लड़ना ही है। लेकिन गठबंधन को ओछी व्यक्तिगत बातों को लेकर सत्ता पक्ष पर हमले से बचना होगा और उसे नजरअंदाज भी करना होगा, क्योंकि नीचता और ओछेपन में मोदी-शाह और पूरे एनडीए का मुकाबला नहीं किया जा सकता। उनके इस ओछेपन को और नीचे ले जाने के लिए गोदी मीडिया तो है ही।

इस बीच महागठबंधन ने अपना चुनाव घोषणा पत्र जारी कर दिया है। इस घोषणा पत्र पर वामपंथ का स्पष्ट असर देखा जा सकता है। वामपंथी पार्टियों के लिए भूमि का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण होता है और घोषणापत्र में हदबंदी से प्राप्त अतिरिक्त जमीन का बंटवारा भूमिहीनों और गरीब किसानों के बीच करने का वादा किया गया है। यह वादा नीतीश कुमार ने भी किया था और इसके लिए उन्होंने बंद्योपाध्याय कमेटी भी बनाई थी, लेकिन बाद में वे इसकी सिफारिशों को लागू करने से मुकर गए। यदि सामाजिक न्याय के वादे के प्रति महागठबंधन ईमानदार होगा, तो भूमि सुधार की नीतियों का क्रियान्वयन बिहार की सामाजिक-राजनैतिक-आर्थिक तस्वीर बदलकर रख देगा, क्योंकि भूमि सुधार कार्यक्रम से आम जनता की जो क्रय शक्ति बढ़ेगी, वह न केवल घरेलू बाजार का विस्तार करेगी, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा करेगी। भूमि सुधार के एजेंडे में बिहार को बीमारू राज्य की श्रेणी के निकालने की ताकत है। महागठबंधन ने बेरोजगारी को मुद्दा बनाया है, जो आज बिहार की जनता की सबसे बड़ी समस्या है और अपने घोषणा पत्र में उसने इसका कल्पनाशील समाधान पेश करने की कोशिश की है।

पिछले 11 सालों से जिस विकास का दावा भाजपा कर रही थी, उस विकास के मुद्दे पर चुनाव लड़ने से वह बच रही है, तो इसका कारण भी स्पष्ट है। नीति आयोग की रिपोर्ट (2021) बताती है कि बिहार में आज 6.50 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी में जी रहे हैं, 6.58 करोड़ लोग कुपोषित हैं, जिनमें 43.9% बच्चे और 60.3% महिलाएँ भी शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अनुसार, 2022 में भारत का मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) का औसत स्कोर 0.644 था, जबकि बिहार का 0.609 था। इन आँकड़ों में देश के 29 राज्यों की सूची में बिहार सबसे निचले पायदान पर खड़ा है।

यहां 41% महिलाएं ऐसी हैं, जिनकी शादी 18 वर्ष से कम उम्र में हो गयी थी। इस मानदंड पर बिहार 28वें स्थान पर है। बिहारी महिलाओं की यह स्थिति बच्चों के सेहत को भी प्रभावित करती है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, जहाँ भारत की शिशु मृत्यु दर (प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर) 35.2 है, वहीं बिहार 46.8 की दर के साथ 27वें स्थान पर है। उम्र के लिहाज से छोटे क़द वाले सबसे ज्यादा 42.9% बच्चों के साथ 27वें और क़द के हिसाब से कम वजन वाले बच्चों के मामले में 22.9% के साथ बिहार अंतिम 29वें स्थान पर खड़ा है। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि 9वीं-10वीं कक्षा में स्कूल छोड़ देने वाले (ड्रॉपआउट) बच्चों के मामले में भी बिहार 20.5% के साथ 27वें स्थान पर और 11वीं-12वीं कक्षा में कुल नामांकन अनुपात मात्र 35.9% के साथ बिहार 28वें पायदान पर खड़ा है। स्कूली शिक्षा पूरी करने वाले केवल 17.1% बच्चे ही कॉलेज शिक्षा में प्रवेश ले पाते हैं, और वह 28वीं पायदान पर है। बिहार में केवल 14.6% परिवार (अंतिम 29वां स्थान) ही ऐसे हैं, जिन्हें स्वास्थ्य बीमा की किसी योजना का लाभ मिलता है।

बिहार में सुशासन के हाल का पता चुनाव प्रचार के दौरान लगातार हो रही हिंसा से ही चल जाता है। पकौड़ा तलने के बाद अब रील बनाकर रोजगार पाने के सपने बिहारी युवाओं को भाजपा दिखा रही है। यह बताता है कि भाजपा के पास न मुद्दे हैं और न उपलब्धियां। इसलिए, अब विपक्ष के गठबंधन के पास चुनाव के बहाने वह पूरे देश की आम जनता को संबोधित करने का भी अवसर है।

लोकसभा में इंडिया ब्लॉक की एकजुटता ने भाजपा को स्पष्ट बहुमत हासिल करने से वंचित कर दिया था। इससे देश की विपक्षी ताकतों में उत्साह का जो संचार हुआ था, उस लहर को महाराष्ट्र और दूसरे राज्यों में नियोजित धांधली के जरिए भाजपाई खेमे ने ठंडा कर दिया था। अब बिहार चुनाव फिर से इंडिया ब्लॉक को राष्ट्रीय स्तर पर उभरने का मौका दे रहा है, बशर्ते कांग्रेस अपने पार्टीगत हितों पर बिहार की गरीब जनता के हितों को तवज्जो दे। नीतीश का भविष्य मोदी ने तय कर दिया है। इंडिया ब्लॉक का भविष्य वाया महागठबंधन बिहार की आम जनता तय करेगी उसकी एकजुटता और आचरण को देखकर। फिलहाल, कयास लगाने के लिए पूरे दो सप्ताह बाकी हैं।

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

'...फिलहाल दिल्ली छोड़ दें', जानलेवा हुई हवा को लेकर डॉक्टरों की सलाह

दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण के खतरनाक स्तर को देखते हुए डॉक्टरों ने लोगों को चेतावनी दी है कि वे अपने फेफड़ों को बचाने के लिए कुछ समय के लिए शहर छोड़ दें। डॉक्टरों का कहना है कि जहरीली हवा स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा है और बच्चों, बुजुर्गों और सांस के मरीजों को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

दिल्ली-एनसीआर इन दिनों खराब वायु प्रदूषण की गिरफ्त में है। राजधानी का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) 'खराब' श्रेणी में है। दिल्ली की इस बिगड़ती स्थिति पर कैलाश अस्पताल नोएडा की वरिष्ठ पल्मोनरी विशेषज्ञ डॉ. एएस संध्या और पीएसआरआई इंस्टीट्यूट आफ पल्मोनरी, क्रिटिकल केयर एंड स्लीप मेडिसिन के अध्यक्ष डॉ. गोपी चंद खिलनानी की सलाह है कि अगर इस प्रदूषण से बचना है और अगर आप सक्षम हैं तो छह से आठ सप्ताह के लिए दिल्ली से बाहर चले जाएं।

ऐसा इस लिए क्योंकि दिल्ली में वायु प्रदूषण की यह स्थिति दिसंबर के मध्य तक बनी रह सकती है। साथ ही यह भी जोड़ा कि 'हर कोई दिल्ली नहीं छोड़ सकता, लेकिन जिन्हें पुरानी बीमारी है या जो ऑक्सीजन पर हैं, अगर वह आर्थिक रूप से सक्षम हैं, तो दिसंबर के मध्य तक कम प्रदूषित जगह पर अस्थायी रूप से चले जाएं। यही इस समय उनके लिए सबसे सुरक्षित विकल्प है।'

प्रदूषण का पूरे शरीर पर असर

डॉ. एएस संध्या के अनुसार वायु प्रदूषण का असर सिर्फ फेफड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शरीर की लगभग हर प्रणाली हृदय, मस्तिष्क, गुर्दे, आंत और प्रतिरक्षा तंत्र को प्रभावित करता है। बताया कि बच्चों में फेफड़ों की वृद्धि रुक जाती है, अस्थमा तेजी से बढ़ रहा है, वयस्कों में फेफड़ों के कैंसर व क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) के मामले बढ़ रहे हैं।

डॉ. खिलनानी के अनुसार पहले जहां सीओपीडी के 90 प्रतिशत मामले धूम्रपान से जुड़े थे, वहीं अब आधे मामले इनडोर और आउटडोर प्रदूषण के कारण हो रहे हैं। बताया कि पिछले पांच दिनों में उनके अस्पताल में फेफड़े की पुरानी बीमारी वाले 50 प्रतिशत मरीजों की हालत बिगड़ी है। कई को आक्सीजन की आवश्यकता पड़ी और कुछ को आइसीयू में भर्ती करना पड़ा।

फेफड़ों पर प्रभाव को लेकर दी जानकारी

डॉ. एएस संध्या ने वायु प्रदूषण का फेफड़ों पर प्रभाव बताते हुए कहा कि PM2.5 और अल्ट्राफाइन कण (0.1 माइक्रोन से छोटे) सबसे खतरनाक हैं, जो रक्त में घुसकर हृदय और मस्तिष्क तक पहुंच जाते हैं। इसके अलावा कार्बन मोनोआक्साइड, नाइट्रिक आक्साइड और सल्फर डाइआक्साइड जैसी गैसें भी रक्त में मिलकर शरीर की आक्सीजन वहन क्षमता को घटाते हैं, जिससे हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है।

बिहार चुनाव : स्टार्स की राजनीतिक पारी का आगाज़, बदल गया चुनावी अंदाज़

प्रदीप कुमार वर्मा

देश और दुनिया में चर्चित बिहार में इन दिनों चुनावी फिजा बदली हुई है। राजनीति के दिग्गज एवं बाहुबलियों के साथ-साथ कई भोजपुरी स्टार्स भी अपनी राजनीतिक पारी का ₹आगाज₹ कर रहे हैं। इन स्टार्स के चुनावी समर में उतरने के कारण बिहार में चुनाव अंदाज़ पूरी तरह बदल गया है। बिहार में विकास की गंगा बहाने के दावों और वादों के साथ इस बार गीतों की गूंज है। वहीं, कई पुराने दिग्गज कलाकार नए रणनीतिकार एवं स्टार प्रचारक की भूमिका में भी हैं। भोजपुरी इंडस्ट्री में नामचीन कलाकारों की लोकप्रियता के चलते उनकी सभा में गजब की भीड़ है। भोजपुरी स्टार्स अब कलाकार के साथ-साथ ₹माननीय₹ के रूप में विधानसभा की दहलीज़ चढ़ने की जुगत में हैं। राजनीतिक दलों के समर्थन के साथ-साथ जनता भी इन कलाकारों को सिर आंखों पर उठा रही है।

बिहार विधानसभा चुनाव में बतौर लोक कलाकार सबसे बड़ा नाम युवा गायिका मैथिली ठाकुर का है। चुनाव से पूर्व भाजपा में शामिल होने वाली मैथिली ठाकुर लोक गीतों, शास्त्रीय और भजन गायन के लिए काफ़ी चर्चित हैं। भाजपा ने बिहार की अलीनगर सीट से लोक गायिका मैथिली ठाकुर को उम्मीदवार बनाया है। अपने गीत संगीत से लोगों का दिल जीतने वाली मैथिली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पसंद हैं तथा पीएम मोदी के विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय देश के युवाओं की राजनीति में ₹भागीदारी₹ के आह्वान पर मैथिली के राजनीति में आने की मुख्य वजह माना जा रहा है। अपने विधानसभा क्षेत्र अलीनगर में अपने लोकगीतों के जरिए मैथिली लोगों के दिल में उतरने की कोशिश कर रही हैं और अलीपुर की जनता जनार्दन का भी उनका खूब साथ मिल रहा है।

इस चुनाव में भोजपुरी गायक सुपरस्टार खेसारी लाल यादव ने भी बतौर राष्ट्रीय जनता दल उम्मीदवार के रूप में चुनावी मैदान में उतरकर सुर्खियां बटोरी हैं। भोजपुरी फिल्मों से अपने करियर की शुरुआत करने वाले खेसारी लाल यादव अपने चुनाव प्रचार के दौरान राम मंदिर के निर्माण की आवश्यकता पर दिए बयान के चलते इस समय अपने विरोधी राजनीतिक दल भाजपा के साथ-साथ भोजपुरी स्टार्स के निशाने पर हैं। गोरखपुर से भाजपा के सांसद और भोजपुरी फिल्मों के सुपरस्टार रवि किशन से लेकर भाजपा नेता मनोज तिवारी सहित अन्य ने खेसारी लाल की ₹राजनीतिक समझ₹ पर सवाल उठाते हुए उन्हें खूब खरी-खोटी सुनाई है। भोजपुरी गायक रितेश पांडेय को प्रशांत किशोर की पार्टी जन सुराज ने रोहतास जिले की करगहर विधानसभा क्षेत्र से मैदान में उतारा है।

बिहार चुनाव में पहले से राजनीति में सक्रिय भोजपुरी स्टार्स रवि किशन, मनोज तिवारी, दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' एवं पवन सिंह भी चुनावी समर में स्टार प्रचारक के रूप में उतर चुके हैं। यह कलाकार अपने भोजपुरी इंडस्ट्री के साथियों एवं अन्य पार्टी प्रत्याशियों के लिए वोट मांग रहे हैं। यह सभी स्टार्स चुनावी सभाओं में दावों ओर वादों के साथ अपने गीतों के जरिए सघन जनसंपर्क कर रहे हैं। यही वजह है कि भोजपुरी इंडस्ट्री के कलाकारों की सभा में गजब की भीड़ उमड़ रही है। पार्टी आलाकमान के निर्देश पर यह कलाकार बिहार चुनाव में मोके की नजाकत तथा जरूरत के हिसाब से प्रचार के साथ-साथ पर्दे के पीछे रणनीति भी बना रहे हैं। भोजपुरी सिनेमा से जुड़े ये चेहरे गांव-गांव तक लोकप्रिय हैं और उनकी जनमानस के बीच में उनकी यही स्वीकार्यता राजनीतिक दलों के लिए बड़ी पूंजी साबित हो रही है।

देश की चुनावी राजनीति में फिल्म कलाकारों की सहभागिता और राजनीति में जाने का यह कोई पहला मामला नहीं है। भोजपुरी फिल्म स्टार रवि किशन गोरखपुर से सांसद हैं, वहीं मनोज तिवारी दिल्ली की राजनीति में अपना खासा प्रभाव रखते हैं। इसके साथ ही निरहुआ भी भाजपा के सांसद बनकर इन दिनों राजनीति में सक्रिय है। फिल्मी दुनिया में ड्रीम गर्ल के नाम से चर्चित फिल्म स्टार हेमा मालिनी उत्तर प्रदेश के मथुरा से सांसद हैं। इससे पहले भी कई बॉलीवुड सितारे फिल्मों से राजनीतिक सफर करते हुए विधानसभा और संसद की सीढ़ियां चढ़ चुके हैं और एक मंझे हुए राजनीतिज्ञ के रूप में अपनी नई पारी बखूबी खेल चुके हैं। इन कलाकारों में मेगास्टार अमिताभ बच्चन सुपरस्टार राजेश खन्ना, धर्मेंद्र एवं उनके पुत्र सनी दिओल, शत्रुघ्न सिन्हा, राज बब्बर, गोविंदा, सुनील दत्त एवं संजय दत्त, बैजंतीमाला, शेखर सुमन जैसे कलाकार शामिल हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव में समय के साथ बदले हुए राजनीतिक परिदृश्य में अब मतदाता बालीवुड की बजाय स्थानीय कलाकारों के साथ भावनात्मक रूप से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं। यही वजह है कि विभिन्न राजनीतिक दलों ने बिहार चुनाव में स्थानीय कलाकारों पर अपना दाव लगाया है। यही वजह है कि भोजपुरी फिल्म और संगीत की दुनिया में नाम कमा चुके यह कलाकार अब जनता की सेवा और राजनीति में अपनी नई पहचान बनाने की कोशिश में जुटे हैं। फिल्मी दुनिया के एक्शन, लाइट और कैमरे से आगे बढ़कर यह सितारे अब जनता के बीच अपने नए किरदार में जनता से रूबरू हैं। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि फ़ल्मि और टीवी के रुपहले परदे पर तालियां और तारीफ बटोरने वाले यह प्रख्यात कलाकार चुनावी राजनीति में भी क्या जनता के दिल के साथ-साथ उनका बहुमूल्य वोट भी जीत पाएंगे?

व्यंग्य : चुनाव अखाड़े के घोषणा पहलवान !

कस्तूरी दिनेश

मल्लू बरेठ एकदम घबराया-हांफता पार्टी ऑफिस में घुसा। उसकी सांस बेतरह फूल रही थी ! हम सब भी किसी अनहोनी की आशंका से उसको घबराए मुंह फाड़े देखने लगे ! हमारे चेहरे प्रश्नों से भरे हुए थे ! वह हाथ के इशारे से हम लोगों को रोकते हुए, कुछ पल छाती पर हाथ रखे जोर-जोर से सांस लेता रहा फिर धौकनी जैसी सांस को थामते हुए बलि के बकरे जैसा मिमियाया— "भैया जी, मैं तुरंत अभी समता-पार्टी के प्रेस कांफ्रेंस से आ रहा हूँ. उन्होंने "दीदी-अभिनन्दन" योजना बनाई है और उसके माध्यम से चुनाव जीतने पर हर महिला को हर माह दस हजार रूपये देने देने की घोषणा कर रहे हैं !"

भैया जी अपनी कुर्सी में थोड़ा कसमसाए और पहलू बदलते हुए अपने को सेट किया ! वे पिछले कई हफ्तों से कूल्हे के पीछे उग आये सोआस फोड़े से परेशान थे ! विधानसभा चुनाव इतना नजदीक नहीं होता तो वे डाक्टर के पास या घर में बिस्तर पर आराम कर रहे होते ! कुर्सी के लिए सोआस फोड़े का दर्द क्या, वे कुंभीपाक नर्क भी भुगत सकते थे ! वे मल्लू की तरफ वेदना पूरित नजरों से कुछ क्षण देखते रहे, फिर कूल्हे के दर्द को अंदर ही अंदर जज्ब करके, धीर-प्रशांत नायक की तरह मुस्कुराते हुए बोले—मल्लू...इतना घबरा क्यों जाता है रे... ! तू गुप्त समाचार भर ला, गुप्त याने समझा न...अंदर की खबर...जो अखबारों के पकड़ के भी बाहर हों...तेरी ये सड़यिल खबर तो कल के अख़बारों और टी .वी. पर वैसे ही आ जायेगी... !"

वे कुछ पल रुके और हंसते हुए बोले—" इसमें घबराने की क्या बात है.. ? समता पार्टी दस हजार देने की घोषणा कर रही है तो हम अपनी "प्यारी बहना योजना" में पन्द्रह हजार की घोषणा करेंगे... ! वो बीस करेंगे तो हम पच्चीस करेंगे ! चुनावी घोषणायें ढपोरशंखी होती हैं रे बुद्धू राम, चुनाव के बाद ये कभी पूरी थोड़ी की जाती हैं, चुनाव खतम, पैसा हजम... !"

भैया जी की बात सुन हम सब मुस्कुरा रहे थे परन्तु मल्लू भौकवाय खड़ा था। उसे बिलकुल अनुमान नहीं था कि जिसे वह अत्यंत महत्वपूर्ण समझ रहा था, वह तो कचरे के डब्बे में डालने के काबिल भी नहीं ! तभी भैया जी का एक और खबरिया भुलवा डरा-घबराया पूंछ कटे श्वान की तरह अंदर घुसा। भैया जी उसको देखकर चेहरे पर अपनी हंसी दबाते पूछे—" हाँ रे भुलवा...अब तू भौंक, तेरा क्या समाचार है... ?" भुलवा पहले नई-नवेली दुल्हन की तरह शर्माया, फिर हम सब की तरफ नजर दौड़ाते हुए खिसियानी स्वर में बोला— "भाई साहेब जी.... "जनता जागरण पार्टी" वाले हर घर से एक आदमी को नौकरी देने की घोषणा करने वाले हैं... !"

भैया जी की त्योरियां अचानक चढ़ गईं. वे बमके—सालों तुमको विरोधी पार्टी वालों के दफ्तर में हम गुप्त रूप से इसलिए फिट नहीं किया हूँ कि तुम लोग ऐसे सड़यिल समाचार लाओ... ! वो लोग हर घर से एक आदमी को सरकारी नौकरी देंगें तो हम साले पूरी फैमिली को सरकारी नौकरी देने की घोषणा करेंगे... ! इसमें क्या बड़ी बात है... ? अबे, कुछ अंदर की खबर लाओ...अंदर की जिससे इस चुनाव के समय उनकी पार्टी को हम बदनाम कर सकें... ! स्कैंडल..स्कैंडल... ! जैसे अमुक पार्टी के नेता की बेटी फलाने के साथ भाग गई... ! अमुक नेता का बेटा होटल में रंगरेलियां करता पकड़ा गया... ! अमुक नेता शराब की बोतल और रुपिया बांट रहा था... ! कुछ समझ में आया... ? कहाँ साले ये भोंदूओं के पीछे हम बेकार में पैसा खर्च कर रहे हैं... !"वे पाँव पटकते हुए गुस्से से चीखे—"भागो सालों यहाँ से... ! दिमाग खराब कर दिया.. !"भैया जी का मुंह गुस्से और निराशा से ललमुहां बन्दर की तरह ललिया आया था !

"अजेय हैं बेटियाँ"

किसने कहा –
नारी बस आँचल की सीमाओं में बंधी है,
वह तो तूफ़ान की श्वास है,
जो चट्टानों में भी पथ बनाती है।

जेमिमा के हाथों में सूरज थरथराया,
हरमन की दृष्टि में अग्नि का रंग समाया,
वे चलीं – तो हर दिशा में उजास झर गया,
और स्वप्नों का आकाश साकार हो गया।

तीन सौ उनतालीस आँकड़े नहीं,
विश्वास की पराकाष्ठा थे –
जहाँ हर रन में माँ का आशीष था,
हर चौके में मातृभूमि की धड़कन।

आज, भारत की बेटियाँ फिर बोलीं–
"हम सीमाएँ नहीं, संभावनाएँ हैं!"
और पूरा राष्ट्र उनके संग गा उठा –
जय नारी, जय भारत!
– डॉ. प्रियंका सौरभ

भाषा बनाम भारतीयता

● विजय गर्ग

भारत, एक बहुभाषी राष्ट्र, में भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, परंपरा, और सामुदायिक अस्मिता का प्रतीक है। 'भाषा बनाम भारतीयता' का विषय भारत की इस भाषाई विविधता और राष्ट्रीय एकता की भावना के बीच के जटिल संबंध को दर्शाता है। यह विवाद मुख्य रूप से एक भाषा को राष्ट्र की पहचान के रूप में स्थापित करने की मांग और क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण की आवश्यकता के इर्द-गिर्द घूमता है।

भाषाई विविधता: भारत की शक्ति और पहचान

भारत का संविधान अपनी आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता देता है, जिनमें हिंदी, तमिल, बंगाली, मराठी, कन्नड़, तेलुगु, आदि शामिल हैं। यह भाषाई विविधता देश की सबसे बड़ी ताकत है, जो भारत की अनूठी "विविधता में एकता" की भावना को पोषित करती है।

* सांस्कृतिक प्रतीकः प्रत्येक भाषा अपने साथ एक विशिष्ट साहित्य, लोक कला, और जीवन शैली लेकर आती है, जो भारतीय संस्कृति के भव्य ताने-बाने को बुनती है।

* क्षेत्रीय अस्मिताः किसी क्षेत्र के निवासियों के लिए उनकी मातृभाषा उनकी पहचान का एक अभिन्न अंग होती है। मातृभाषा का संरक्षण उनकी क्षेत्रीय अस्मिता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा: हिंदी का दर्जा

यह बहस अक्सर हिंदी के दर्जे को लेकर केंद्रित होती हैः

* राजभाषा का दर्जाः भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिंदी को राजभाषा (Official Language) का दर्जा प्राप्त है। यह मुख्य रूप से प्रशासनिक और सरकारी कार्यों के लिए इस्तेमाल की जाती है।

* राष्ट्रभाषा नहींः भारत की कोई आधिकारिक राष्ट्रभाषा नहीं है। संविधान में सभी भाषाओं को समान सम्मान दिया गया है।

* विवादः हिंदी को पूरे देश में अनिवार्य बनाने या उसे राष्ट्रभाषा घोषित करने की मांगें समय-समय पर उठती रही हैं। हिंदी-भाषी राज्यों में इसे राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, जबकि कई गैर-हिंदी भाषी राज्यों (विशेषकर दक्षिण भारत) में इसे क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृति पर थोपने के प्रयास के रूप में देखा जाता है।

भारतीयता का सार और भाषा का रोल

भारतीयता किसी एक भाषा तक सीमित नहीं है। यह एक समावेशी विचार है जो विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और भाषाओं को गले लगाता है।

* अखंडता का आधारः भारत की एकता उसकी विविधता के सम्मान में निहित है। किसी एक भाषा को अनिवार्य बनाना या थोपना क्षेत्रीय भावनाओं को ठेस पहुँचा सकता है और यह राष्ट्रीय एकता को खतरे में डाल सकता है, जैसा कि 1950 और 60 के दशक में भाषाई विवादों के इतिहास से स्पष्ट होता है।

* संपर्क भाषाः जबकि कुछ लोग हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में देखते हैं, अन्य लोग अंग्रेजी को एक तटस्थ माध्यम मानते हैं जो विभिन्न भाषाई समूहों के बीच एक समान मंच प्रदान करता है और वैश्विक अवसरों से जोड़ता है।

* गांधी और निज भाषाः महात्मा गांधी ने कहा था कि ₹राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है₹, पर इसका तात्पर्य यह नहीं था कि यह अन्य भारतीय भाषाओं के बलिदान पर हो। कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रसिद्ध पंक्तियाँ— ₹निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।₹— मातृभाषा के महत्व को दर्शाती हैं, जो ज्ञान और प्रगति का आधार है।

निष्कर्ष: संतुलन और सह-अस्तित्व

'भाषा बनाम भारतीयता' का संघर्ष वास्तव में आत्मीयता और आत्मसम्मान का सवाल है। भारतीयता को बनाए रखने के लिए किसी एक भाषा की प्रधानता नहीं, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के सह-अस्तित्व और सम्मान की आवश्यकता है।

* बहुभाषिकता को प्रोत्साहनः शिक्षा में त्रिभाषा सूत्र जैसे नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करना, जो मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा, हिंदी (गैर-हिंदी राज्यों में), और अंग्रेजी को बढ़ावा देता है, एक संतुलित दृष्टिकोण हो सकता है।

* सांस्कृतिक संरक्षणः भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण ही भारतीयता को मजबूत करता है, इसे कमजोर नहीं करता। भारत की सच्ची पहचान उसकी अनेकता में एकता में है, जहाँ प्रत्येक भाषा और संस्कृति राष्ट्रीय चेतना में अपना विशिष्ट योगदान देती है।

आज के युग में, जब अंग्रेज़ी का प्रभाव बढ़ा है, और शहरी जीवन में क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग घट रहा है, तब यह प्रश्न उभरता है कि क्या भारतीयता को भाषा से जोड़ा जाना चाहिए? क्या अंग्रेज़ी बोलने वाला भारतीय अपनी भारतीयता से दूर हो जाता है? शायद नहीं। भारतीयता केवल भाषा में नहीं, बल्कि सोच, व्यवहार, और मूल्यों में बसती है — दूसरों के प्रति सम्मान, विविधता को स्वीकारना, और 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना ही सच्ची भारतीयता है।

फिर भी, भाषा हमारी पहचान का आधार है। जब हम अपनी मातृभाषा को सम्मान नहीं देते, तो धीरे-धीरे हमारी सांस्कृतिक जड़ें कमजोर पड़ने लगती हैं। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि एक भावनात्मक और सांस्कृतिक धरोहर है। मातृभाषा में सोचने और सृजन करने से व्यक्ति अपने परिवेश से गहराई से जुड़ता है।

इसलिए "भाषा बनाम भारतीयता" कोई संघर्ष नहीं, बल्कि एक सह-अस्तित्व का रिश्ता है। हर भारतीय भाषा अपने में भारतीयता का अंश लिए हुए है। भारतीयता किसी एक भाषा की मोहताज नहीं, बल्कि हर भाषा की धड़कनों में बसी हुई है।

अंततः, सच्चा भारतीय वही है जो हर भाषा का सम्मान करे, और यह समझे कि भारत की असली शक्ति उसकी भाषाई विविधता में ही छिपी है — वही विविधता जो हमें बाँटती नहीं, बल्कि जोड़ती है।

गहन प्रभाव: बच्चों को माँ की स्नेह से वंचित रखा गया

विजय गर्ग

बच्चे और उनके प्राथमिक देखभाल करने वाले, अक्सर मां के बीच संबंध मानव विकास में सबसे बुनियादी संबंधों में से एक है। जब स्नेह और निरंतर देखभाल का यह आवश्यक स्रोत अनुपस्थित होता है या गंभीर रूप से बाधित हो जाता है, तो बच्चों को गहरे और दीर्घकालिक परिणामों का सामना करना पड़ सकता है, जो मनोविज्ञान में मातृ वंचितता जैसी अवधारणाओं के तहत व्यापक रूप से अध्ययन की गई घटना है। मातृ वंचितता का सिद्धांत मनोवैज्ञानिक जॉन बाउल्बी द्वारा अग्रणी कार्य ने मातृ वंचितता परिकल्पना पेश की, जिसमें प्रस्तावित किया गया कि स्वस्थ मानसिक और भावनात्मक विकास के लिए माँ (चित्र) के साथ ₹गर्म, अंतरंग और निरंतर संबंध₹ महत्वपूर्ण है। बोलबी ने तर्क दिया कि महत्वपूर्ण प्रारंभिक अवधि (अक्सर पहले डेढ़ वर्षों के रूप में उद्धृत किया जाता है) के दौरान प्राथमिक देखभाल करने वाले से अलग होना या खो जाना गंभीर, और संभावित रूप से अपरिवर्तनीय, दीर्घकालिक कठिनाइयों का कारण बन सकता है। विकास के लिए परिणाम माता के स्नेह से वंचित होना - चाहे वह लंबे समय तक अलग होने, संस्थागत देखभाल या भावनात्मक अनुपलब्धता (निंदा) के कारण हो - बच्चे की वृद्धि के कई क्षेत्रों को प्रभावित करता है

भावनात्मक और सामाजिक कठिनाइयां

असुरक्षित संलग्नताः बच्चों में असुरक्षित लगाव शैली विकसित हो सकती है (अद्वितीय या बचाने वाली) क्योंकि वे लगातार आराम और सुरक्षा के लिए अपने देखभाल करने वाले पर भरोसा नहीं कर सकते। इससे उन्हें जीवन में स्वस्थ, भरोसेमंद संबंध बनाना कठिन हो जाता है।

स्नेहहीन मनोविज्ञानः बाउलबी ने इसे दूसरों के लिए अपराध या मजबूत भावनाओं का अनुभव करने में असमर्थता की पहचान की, जिसमें चिंता और सार्थक संबंध बनाने में कठिनाई होती है।

चिंता और असहायताः देखभाल में असंगति से पुरानी तनाव और चिंता हो सकती है। बच्चे सामाजिक बातचीत से पीछे हट सकते हैं, अकेलेपन को पसंद करते हैं और अपने वातावरण पर नियंत्रण रखने में असमर्थता का अनुभव कर सकते हैं।

संज्ञानात्मक और बौद्धिक विकास

अध्ययनों ने प्रारंभिक, गंभीर deprivation को बौद्धिक विकास में देरी और कम IQ स्कोर से जोड़ दिया है। वंचित वातावरण में संज्ञानात्मक उत्तेजना, भाषा और सामाजिक बातचीत की कमी से मस्तिष्क का सामान्य विकास धीमा हो जाता है।

व्यवहार संबंधी समस्याएं

माता-पिता की गर्मजोशी और स्नेह के अभाव में बच्चों का आत्मसम्मान कम होता है तथा किशोरावस्था में वे परदेसी, शत्रुता, आक्रामकता और अपराध दिखाने की अधिक संभावना रखते हैं (व्यवहार संबंधी समस्याएं)। जैविक वास्तविकताः तनाव और मस्तिष्क मनोवैज्ञानिक अवलोकन के अलावा, वैज्ञानिक अनुसंधान जैविक क्षति की पुष्टि करता है। संस्थानों जैसे वंचित वातावरण में बच्चे तनाव हार्मोन कोर्टिसोल के उच्च स्तर दिखाते हैं। विषाक्त तनाव का अनुभव - सहायक वयस्क हस्तक्षेप के बिना लगातार, तीव्र और लंबे समय तक कष्ट - मस्तिष्क विकास को मौलिक रूप से बाधित कर सकता है। यह व्यवधान जटिल संज्ञानात्मक कार्यों, कार्यकारी कौशल, भावनात्मक विनियमन और तनाव प्रतिरोध के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों को प्रभावित करता है, जिससे वयस्कता में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। दीर्घकालिक प्रभाव और उपचार माता के प्रेम से वंचित बच्चों के लिए संघर्ष शक्तिशाली है, जो अक्सर वयस्कता में विकास संबंधी आपदाएं, व्यसन, मूड विकार और रिश्तेदार आघात के रूप में प्रकट होता है। वे आलोचना की आंतरिक आवाज ले सकते हैं या यह विश्वास रखते हैं कि उन्हें प्यार नहीं किया जा सकता, जिससे उनका आत्मविश्वास और सफलता कम हो जाती है। हालांकि, मस्तिष्क उल्लेखनीय प्लास्टिकता प्रदर्शित करता है। अनुसंधान से पता चलता है कि पर्याप्त, संवेदनशील देखभाल वातावरण में प्रारंभिक हस्तक्षेप और नियुक्ति वसूली के हानिकारक प्रभावों को कम कर सकती है तथा कुछ मामलों में उन्हें उल्टा कर सकती है। एक सुरक्षित संलग्नता आंकड़ा, निरंतर गर्मी और सहायक सामाजिक वातावरण प्रदान करना इन बच्चों के लिए स्वस्थ, लचीले वयस्कों में ठीक होने का सबसे अच्छा मार्ग है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार

मेहनत, माटी अर मान–यही सै हरियाणा की पहचान

(हरियाणा – जां कर्म, धर्म अर हौंसले का परदेश सै, छोरियां तै लेकर खेतां तक – हरियाणा चमक रया सै)

हरियाणा दिवस कोई सिरफ दिन ना सै, ये तो माटी का त्योहार सै – जिथे मेहनत ने भगवान माना जावै, अर पसीना इज्जत बन जावै। खेतां तै अखाड़ां तक, छोरे-छोरियां देश का नाम ऊंचा कर रै सै। ये धरती सै वीरां की, गीता के ज्ञान की, अर एकता के मान की। हरियाणा दिवस सिखावै सादगी, स्वाभिमान अर भाईचारे की बात – कि असली तरक्की तब सै, जब माणस अपने धरती तै प्यार करे अर कर्म सै ना हटे।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

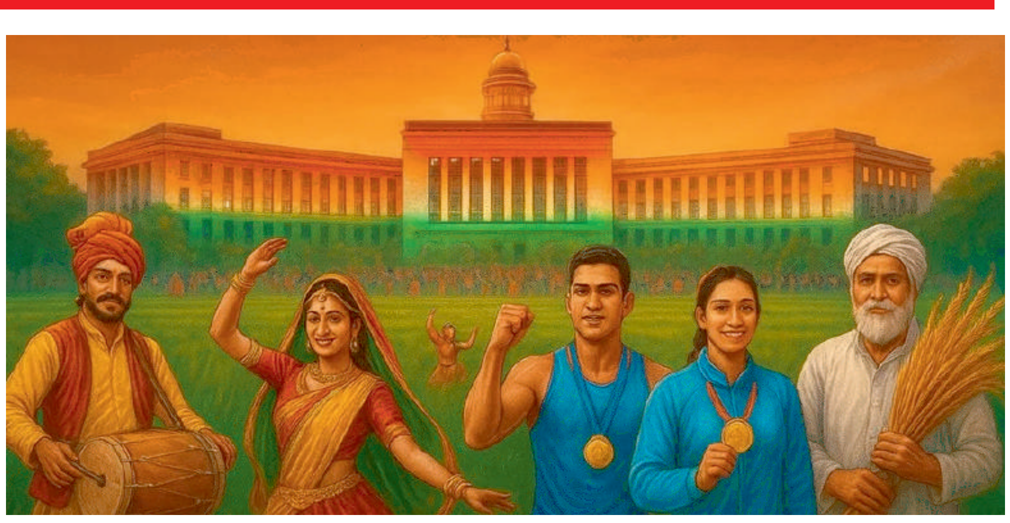

हरियाणा म्हारे लिए सिरफ एक राज्य ना सै, ये तो भावना सै, अपनापन सै, अर गर्व सै। 1 नवम्बर 1966 के दिन जब हरियाणा, पंजाब तै अलग होके एक नया परदेश बन्या, तै किसे ना पता था के ये छोटा सा इलाका एक दिन पूरे भारत मं अपनी पहचान छोड़ जावेगा। इब्ब देख लो, हरियाणा खेती तै लेके खेलां तक, फौज तै लेके कारोबार तक — हर जगह अपनी अलग छाप छोड़ै सै।

हरियाणा की मिट्टी मं कुछ बात सै भाई। यहीं कुरुक्षेत्र की धरती पर भगवान कृष्णा ने अर्जुन नै गीता का उपदेश दियो था — कर्म कर, फल की चिंता मत कर। इसी माटी की गोद मं पानीपत के रण लड़े गए, जां वीरां नै अपनी जान दाव पर लगा दी। हर कदम पर इतिहास बसै सै इस धरती का, अर इस धरती नै इतिहास रचण की आदत सै।

किसानां की बात करां त हरियाणा का किसान सबसे मेहनती सै। सूरज चढ़ण तै पहले खेत मं पहुंच जावै सै, अर सूरज डूबे तै बाद घर आवै सै। माटी नै सींचण की ताकद इब्ब भी इस परदेश के हाथां मं सै। दूध-दही की धरती कहे सै इस नै, अर सच मं, यहाँ के घर-घर मं घी की खुशबू, लस्सी की ठंडक अर सच्चाई की मिठास बसै सै।

हरित क्रांति में हरियाणा नै जो योगदान दियो, वो कोई भूल ना सकै। खेती मं नई तकनीक लाण, पानी की बचत करण अर जमीन नै उपजाऊ बनावण — ये सब इस राज्य की पहचान सै। किसान इब्ब सिरफ हल चलावण वाला ना रह्या, वो उद्यमी बन ग्या सै, तकनीक जाणन लाग्या सै, अर खेती नै इज्जत दिलावण लाग्या सै।

खेलां की बात आवै त हरियाणा सै ओ धरती, जां मिट्टी की खुशबू पसीने मं बदल जावे सै। बजरंग पूनिया, साक्षी मलिक, नीरज चोपड़ा, बबीता-विनेश फोगाट — ये सब नाम सिरफ पदक ना, परिश्रम की मिसाल सैं। गाँवां मं अखाड़े सै, पर वो सिरफ कुश्ती के मैदान ना, वो संस्कार के मंदिर सैं। छोरियां भी इब्ब कम ना — ओलंपिक तक का सफर तय कर री सैं।

पहले लोग कहतै थे "बेटा जरूरी सै", इब्ब हरियाणा कहै सै — "छोरी भी कम ना सै।" "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" सिरफ नारा ना रह्या, इस नै समाज बदल दियो। हरियाणा की छोरियां आज पढ़ लिख के फौज मं, स्कूलां मं, खेलां मं, दफ्तरां मं, हर जगह नाम कमावै सैं। ओ साबित कर रई सैं के हरियाणा की माटी मं साहस सिरफ मर्दां का ना, नारी का भी सै।

संस्कृति की बात करां त हरियाणा का लोकजीवन सादा पर रंगीन सै। यहाँ तीज-त्योहारां का मेला लागै सै — फाग गाऊं, झंझ बजाऊं, ढोलक की थाप पे नाचू। हर गीत मं अपनापन सै, हर रागनी मं कहानी सै। हरियाणवी बोली भले कड़ी लागै, पर सच्चाई की मिठास सै इस मं। यहाँ का आदमी दिल का साफ सै — बोलन मं सीधा, करन मं सच्चा।

गुरुग्राम, फरीदाबाद, पानीपत, हिसार — इब्ब उद्योग और शिक्षा के केंद्र बन चुके सैं। शहर चमक रए सैं, पर गाँवां की मिट्टी आज भी अपनापन ना छोड़ै सै। हरियाणा की प्रति व्यक्ति आमदनी देश मं सबसे ऊपर सै, अर ये मेहनत का नतीजा सै। पर चुनौतियाँ भी सैं — बेरोजगारी, प्रदूषण, पानी की कमी अर जात-पात की दीवार — इन नै मिटावण की जिम्मेदारी हम सबकी सै।

हरियाणवी लोग सीधे सैं, पर दिल के सच्चे सैं। झूठ नै नफरत करैं, मेहनत नै इबादत मानैं। ओ कहैं — "काम बोलै, आदमी ना बोलै।" यही सच्चाई इस परदेश की ताकत सै। यहाँ दिखावा ना सै, पर कर्म सै, सच्चाई सै, अर विश्वास सै।

देश की रक्षा में हरियाणा के जवान सदा आगे रहै सैं। सीमा पे खड़े होके ओ देश की आन-बान की रक्षा करैं सैं। खेत मं किसान, सीमा पे जवान, खेल मं खिलाड़ी — हर कोई इस मिट्टी का बेटा अपनी भूमिका निभा रह्या सै।

हरियाणा दिवस मनाण का मतलब सिरफ झंडा लगाण या भाषण देण ना सै, ये दिन याद करावै सै उस आत्मा नै, जां सादगी, मेहनत, अर एकता बसै सै। ये दिन याद करावै सै के हम सिरफ एक राज्य ना, पर एक परिवार सैं — जो कर्म, धर्म अर सच्चाई मं विश्वास राखै सै।

आज जरूरत सै के हम अपने गाँव, खेत, अर संस्कृति नै सहेज के रखां। आधुनिकता अपनावां, पर अपनी जड़ां नै ना भूलां। पर्यावरण बचावां, शिक्षा बढ़ावां, अर बेटां-बेटी मं फर्क मिटावां। हरियाणा नै स्वच्छ, शिक्षित, समृद्ध अर समान बनावां — यही सच्चा हरियाणा दिवस का संदेश सै।

चलो, आज के दिन सब मिलके प्रण लें —
हम इस मिट्टी की खुशबू नै ना मिटण देंगे,
हम मेहनत अर सच्चाई नै जिंदा रखांगे,
हम अपने हरियाणा नै ऐसे बनावांगे —
जां देख के दुनिया कहे —
"सच मं हरि का वास सै — हरियाणा परदेश!"

जय हरियाणा, जय भारत!

एक-नेक हरियाणवी

धरम-करम का पालन करै, गीता सै उपदेश,
सच माने तो हरि बसै, हरियाणा परदेश!

अमन-चैन की धरती सै, वेदां का ज्ञान,
मिट्टी सै वीरां की — राखे देश की आन!

हट्टे-कट्टे लोग सैं, अलग-अलग सैं भेस,
पर दिल सैं सारे एक — ना राग, ना द्वेष!

कुरुक्षेत्र की धरती सै, कर्म का परवाह,
पानीपत का मैदान — लड़े कित-कित राह!

चप्पे-चप्पे मं लिखी, बलिदान की लेख,
आंदोलन का गढ़ सै — जगा सारा देश!

मर्दां युद्ध पलट दिये, छोरियां जित ली तीर,
एक-नेक हरियाणवी — सिखा दें धीर-वीर!

त्योहारां मं मेल-जोल, गीतां का परिवेश,
मानवता का पालन — प्रेम का संदेश!

माथे इस धरती पे, सरस्वती का बास,
हरि खुद रहै इब्ब के — हरियाणा खास!

एक-नेक हरियाणवी — दिल सै नेक सैं सब,
धरती सै सोने की — मन सै दूध जैं सफेद!

(— डॉ. सत्यवान सौरभ)

हरियाणा दिवस — गौरव की धरती

हरियाणा की मिट्टी सोंधी, सुगंध बिखेरै चारों ओर,
हल चलावै किसान हंसकै, खेतां मं लहरै लोर।

जहाँ गीता का उपदेश मिल्यो, कर्म का जो सार,
कुरुक्षेत्र की पावन धरती, सिखा दे सदाचार।

पानीपत के रण में लड़ी, वीरां की ललकार,
म्हारी छोरियां भी कम ना — दुनिया करे सलाम बार-बार।

यहाँ दूध-दही की नदिया बहें, अर मन सै लोग बड़े नेक,
मेहनत, सच्चाई, हिम्मत सै — हरियाणवी रहवे एक!

त्योहारां में मेल-जोल सै, गीतां में उल्लास,
भाईचारे की सीख दे — हर घर में विश्वास।

ना जात-पात का झगड़ा, ना नफरत की बात,
हर दिल में बस एक बात — "हरियाणा मेरी मात!"

चलो आज ये प्रण लें —
इस धरती का मान बढ़ावां,
मेहनत, इमान अर एकता सै,
हरियाणा का नाम चमकावां!

हरियाणा दिवस की लाख-लाख बधाई!
जय हरियाणा — जय भारत!

(— डॉ. प्रियंका सौरभ)

तुलसी विवाह - 02 नवंबर पर विशेष
तुलसी विवाह करिए आराधना...!

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी,
सनातन परंपरा में शुभ मानी गई तिथि।
इस दिन करें सुख-सौभाग्य की
कामना,
₹तुलसी विवाह₹ करिए होगी आराधना।

तुलसीजी-शालिगराम के विवाह
परंपरा,
धन की देवी माँ लक्ष्मी प्रतीक रुप धरा।
भगवान श्री विष्णु के प्रतीक अवतरित,
शालिगराम देते आशीर्वाद मिले त्वरित।

ये तुलसी-शालिगराम का महा-
गठबंधन,
गरीब-ब्राह्मण को
वस्त्र,मिठाई,फलदान।
पावन दिन त्रिपुष्कर व सर्वार्थसिद्ध योग,
सुखमय रहें वैवाहिक जीवन हो संयोग।

संजय एम तराणेकर

ज्योतिष विज्ञान अब एक व्यवस्थित

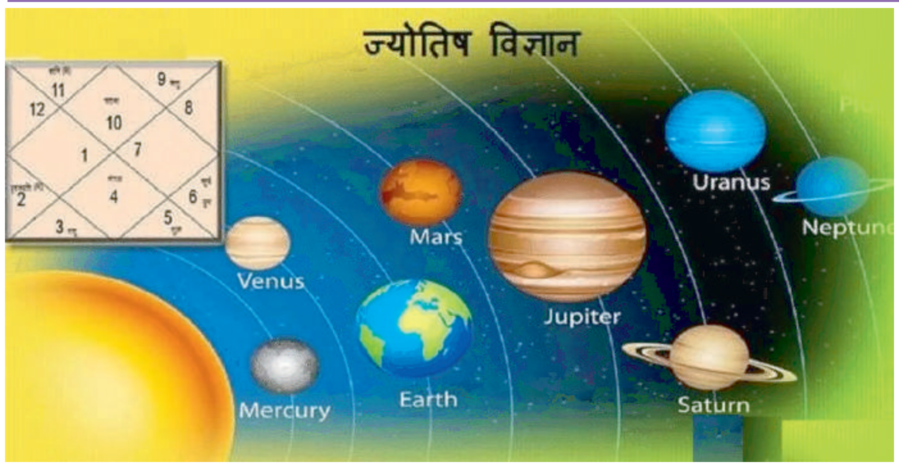

विजय गर्ग

ज्योतिष विज्ञान अब एक व्यवस्थित शैक्षणिक और व्यावसायिक कैरियर विकल्प के तौर पर उभरा है। आज ज्योतिष विद्या विश्वविद्यालयों में वैज्ञानिक अध्ययन का विषय बन गई है। जो विद्यार्थी भारतीय संस्कृति, गणित व खगोल विज्ञान में रुचि रखते हैं, उनके लिए यह सम्मानजनक कैरियर साबित हो सकता है।

ज्योतिष केवल भाग्य बताने की विद्या नहीं है, यह प्राचीन भारतीय विज्ञान की वह शाखा है जिसने हजारों वर्षों से मानव जीवन और प्रकृति के बीच के रहस्यमय संबंध को समझने का प्रयास किया है। आज यह परंपरा विश्वविद्यालयों की कक्षाओं, शोध केंद्रों और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों तक पहुंच चुकी है। भारत में अब ज्योतिष को एक व्यवस्थित अध्ययन क्षेत्र के रूप में देखा जा रहा है। इसे शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शामिल किए जाने और विश्वविद्यालयों में ज्योतिष विभागों की स्थापना के बाद यह एक सम्मानित कैरियर विकल्प बनकर उभरा है।

विज्ञान के दर्जे की वजह

वर्ष 2000 में जब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 'ज्योतिष शास्त्र' को एक वैकल्पिक शैक्षणिक विषय के रूप में मान्यता दी, तब से इस पर व्यापक चर्चा शुरू हुई। ज्योतिष हमारे वैदिक ज्ञान का अभिन्न अंग है और इसका गणितीय तथा खगोलीय आधार इसे अध्ययन योग्य विज्ञान बनाता है। दरअसल, ज्योतिष में ग्रहों की गति, नक्षत्रों की स्थिति, खगोलीय गणना, समय निर्धारण और घटनाओं की गणितीय व्याख्या सम्मिलित होती है।

प्रमुख विश्वविद्यालय और कोर्स

भारत के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में ज्योतिष विज्ञान के कोर्स सर्टिफिकेट से लेकर शोध तक उपलब्ध हैं। मसलन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) वाराणसी : ज्योतिष विभाग - संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय। कोर्सः स्नातक, स्नातकोत्तर , पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा, पीएचडी। यहां छात्रों को गणितीय ज्योतिष, भविष्यवाणी शास्त्र, फलित, प्राश्निक और मुहूर्त अध्ययन कराया जाता है। लखनऊ विश्वविद्यालय : ज्योतिष विज्ञान विभाग । कोर्सः स्नातक (ज्योतिष विज्ञान),स्नातकोत्तर (ज्योतिष विज्ञान), शोध पाठ्यक्रम। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली एवं इसके परिसर : कोर्स- सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, शास्त्री (स्नातक), आचार्य (स्नातकोत्तर) तथा वेदांग ज्योतिष में पीएचडी। इसके अलावा कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी), संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी आदि संस्थानों में ज्योतिष की शिक्षा दी जाती है।

कोर्स संरचना और अध्ययन विषय

ज्योतिष के अधिकांश विश्वविद्यालयीय कोर्स तीन भागों में विभाजित होते हैं : गणितीय ज्योतिष जिसमें ग्रहों-नक्षत्रों की गति, पंचांग निर्माण, समय गणना, ग्रहण, दशा और अंतर्दशा की गणना जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं। फलित ज्योतिष जिसमें जन्मकुंडली, राशि, भाव, योग, ग्रह दृष्टि, गोचर, विवाह, स्वास्थ्य और कैरियर से जुड़ी व्याख्याएं सिखाई जाती हैं। मुहूर्त और प्राश्निक ज्योतिष जिसमें विद्यार्थी शुभ समय निर्धारण (मुहूर्त), प्रश्न कुंडली, यात्रा, गृह प्रवेश, विवाह, व्यवसाय प्रारंभ आदि विषय पढ़ते हैं। इसके अतिरिक्त कई कोर्सों में वास्तु शास्त्र, आयुर्वेदिक ज्योतिष, खगोल विज्ञान और सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन इन ज्योतिष जैसे आधुनिक विषय भी सम्मिलित किए गए हैं।

प्रवेश हेतु योग्यता एवं अवधि

सर्टिफिकेट / डिप्लोमा हेतु 10+2 उत्तीर्ण , अवधि 6 माह से 1 वर्ष। स्नातक / शास्त्री हेतु 10+2 उत्तीर्ण तथा अवधि 3 वर्ष। स्नातकोत्तर / आचार्य हेतु स्नातक और समकक्ष, अवधि 2 वर्ष, पीएचडी हेतु स्नातकोत्तर उत्तीर्ण, अवधि 3–5 वर्ष।

कैरियर की संभावनाएं

स्वतंत्र एस्ट्रोलॉजी परामर्शदाता :आज ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म, मोबाइल ऐप्स और डिजिटल मीडिया के ज़रिए परामर्श सेवाओं की बड़ी मांग है। अनुभवी ज्योतिषी अच्छी आय अर्जित कर सकते हैं। शैक्षिक और शोध क्षेत्र : विश्वविद्यालयों में शिक्षक, शोध सहायक या विभाग प्रमुख के रूप में अवसर। ज्योतिष पर शोध, अनुवाद और तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र बढ़ रहे हैं। मीडिया : अख़बार, टीवी चैनल, वेबसाइट और यूट्यूब प्लेटफ़ॉर्म्स ज्योतिष सामग्री के लिए विशेषज्ञों को आमंत्रित करते हैं। ज्योतिष सॉफ्टवेयर और ऐप डेवलपमेंट : प्रौद्योगिकी के युग में कुंडली निर्माण, ग्रह गणना और भविष्यवाणी के लिए सॉफ्टवेयर व मोबाइल ऐप्स की भारी मांग है। जो छात्र आईटी और ज्योतिष का मिश्रण सीखते हैं, वे इस क्षेत्र में अग्रणी बन सकते हैं। वास्तु परामर्श : रियल एस्टेट, उद्योग और कॉर्पोरेट सेक्टर में वास्तु विशेषज्ञों और कॉर्पोरेट काउंसलर की मांग लगातार बढ़ रही है।

ज्योतिष ऐप्स, एआई आधारित कुंडली सॉफ्टवेयर और वीडियो परामर्श सेवाओं ने नए रोजगार सृजित किए हैं। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर ज्योतिष परामर्श सेवाओं का वैश्विक बाज़ार 2025 तक 2 बिलियन डॉलर से अधिक हो चुका है।

हालांकि ज्योतिष की वैधता पर अभी भी वैज्ञानिक समुदाय में मतभेद है, इसलिए इसे अंधविश्वास से जोड़ने के बजाय तार्किक दृष्टिकोण आवश्यक है। नैतिकता अत्यंत आवश्यक है, भविष्यवाणियां करते समय सामाजिक उत्तरदायित्व को ध्यान में रखना चाहिए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

बेटी के शव पर सौदे—यह किस सभ्यता का उत्सव है?

जब इंसानियत की अंतिम सांस भी दम तोड़ देती है, तो रिश्वतखोरी महज अपराध नहीं रह जाती—वह एक भयानक उत्सव बन जाती है, जहां मौत खुद मुनाफे की दुकान पर नाचने लगती है। बेंगलुरु की हृदयविदारक घटना कोई साधारण खबर नहीं, बल्कि हमारे समाज की आत्मा पर चस्पा वह काला धब्बा है, जो सदियों की धुलाई से भी नहीं मिटेगा। एक पिता की गोद में उसकी 34 वर्षीय बेटी की ठंडी लाश पड़ी है—उसके आंसू नदियां बनकर बह रहे हैं, गला दर्द से फट रहा है, लेकिन चारों ओर संवेदना की एक बूंद तक नहीं; सिर्फ ठंडी, निर्लज्ज सौदेबाजी की फुसफुसाहटें गूंज रही हैं। बेटी की सांसें थम चुकी हैं, मगर सिस्टम का लालच अभी भी जीवंत है—जैसे कोई राक्षस मातम के बीच भोज पर टूट पड़ा हो। यह दृश्य किसी हॉरर फिल्म का नहीं, बल्कि भारत की उस कड़वी हकीकत का क्रूर आईना है, जिसे देखकर खुद ईश्वर भी शर्म से सिर झुका लें। शर्म की सभी सीमाएं लांघ चुकी हैं—हमारा समाज अब इंसान नहीं, एक सांस लेती लाश बन चुका है, जहां हर धड़कन रिश्वत की कीमत पर खरीदी जाती है।

कर्नाटक की चमचमाती राजधानी बेंगलुरु—जिसे दुनिया 'सिलिकॉन वैली ऑफ इंडिया' कहकर गर्व करती है—वहां रहने वाले भारत पेट्रोलियम के रिटायर्ड अफसर शिवकुमार जी की जिंदगी एक पल में राख हो गई। उनकी इकलौती बेटी को अचानक ब्रेन हेमरेज ने जकड़ लिया; समय से लड़ते हुए अस्पताल पहुंचे, लेकिन मौत ने उसे छीन लिया। पिता का कलेजा फट गया, जैसे कोई आग की लपटें उसकी छाती में धधक रही हों। मगर असली नरक तो मृत्यु के बाद खुला, जब सिस्टम ने इंसानियत को कुचलकर रख दिया। लाश घर लाने के लिए एम्बुलेंस ड्राइवर ने पांच हजार लिए—मानो शव कोई माल हो, जिसकी डिलीवरी चार्ज लगता हो। पोस्टमार्टम के नाम पर दस हजार, रिपोर्ट के लिए पुलिस ने पांच हजार और वसूले; न्याय की कीमत नोटों की गड्डियों में नापी जा रही थी। नगरपालिका के क्लर्क ने मृत्यु प्रमाणपत्र के बदले दो हजार की "स्पेशल फीस" मांगी, जैसे दस्तावेज़ नहीं, कोई प्रीमियम सर्विस हो। हर मोड़ पर, हर चेहरे पर सिर्फ लालच की चमक—आंसू पोंछने की बजाय जेब टटोलने को कहा गया। पिता की गुहार को सौदेबाजी में बदल दिया गया। यह क्या है? मौत का थोक बाजार? जहां दर्द की कीमत भी चुकानी पड़ती है, और इंसानियत मुफ्त में नहीं बिकती?

सोचिए, क्या हम इतने नीचे गिर चुके हैं कि मौत भी अब नोट गिनने की मशीन बन गई है? शिवकुमार जैसे ईमानदार पिता—जिन्होंने जीवनभर पसीना बहाकर देश सेवा की—हर कदम पर रिश्वतखोरों की फौज से घिर गए। एम्बुलेंस ड्राइवर शव को तराजू पर तौल रहा था, पुलिस वाला रिपोर्ट की नीलामी कर रहा था, और नगरपालिका का क्लर्क जेब की गहराई नापकर "सेवा शुल्क" तय कर रहा था। बेटी की मौत ने पिता को तोड़ दिया, लेकिन इस सड़ांध भरे तंत्र ने इंसानियत की हत्या कर उसकी लाश को भी लूट लिया। यह किसी एक की निजी विपदा नहीं, पूरे समाज की सड़ती हुई आत्मा की कराह है। हमने सिस्टम को भ्रष्ट किया, और अपना अंतर्मन को जहर से भर लिया। हर दिल में अब करुणा की जगह लालच का कीड़ा कुलबुलाता है; हर हाथ में रिश्वत की बदबू। यही वह भारत है, जहां दिन-रात "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" के ढोल पीटे जाते हैं, मगर बेटी की अर्थी उठाने के लिए भी मोल-भाव होता है। यह दोमुंहापन नहीं, एक घिनौना पाखंड है—जो हमें आईने में अपना काला मुंह दिखाकर थूकता है।

रिश्वतखोरी अब कोई छिपा हुआ पाप नहीं रही—यह हमारी रगों में दौड़ता जहर बन चुकी है, जिसे हमने स्वीकार कर लिया है। पहले रिश्वत जिंदा लोगों के काम करवाने के लिए दी जाती थी, लेकिन अब मृतकों के अंतिम संस्कार तक के लिए भी वसूली जाती है। यह समाज की नैतिक दिवालियापन की पराकाष्ठा है। लोग मौत पर रोते नहीं, अवसर तलाशते हैं। और हम, समाज के बाकी लोग? हम चुप रहते हैं, क्योंकि "क्या करें, सिस्टम तो ऐसा ही है।" लेकिन यही चुप्पी हमें अपराधी बनाती है। हर बार जब हम जेब ढीली करके मुंह फेर लेते हैं, हम इंसानियत की लाश पर एक और कफ़न चढ़ाते हैं। हम सब इस कीचड़ के साझीदार हैं—और कीचड़ में डूबकर भी खुद को साफ़ बताते हैं।

शिवकुमार ने जब अपनी व्यथा सोशल मीडिया पर उड़ेली, तो पूरे देश में लोग गुस्से से लाल हो गए, पोस्टें वायरल हुईं, हैशटैग ट्रेंड करने लगे। दुख की लहर दौड़ी, अफसोस की बाढ़ आई। लेकिन सवाल यह है: क्या यह गुस्सा केवल स्क्रीन तक सीमित रहेगा? क्या कुछ दिनों बाद सब भूलकर फिर रोजमर्रा की जिंदगी में लौट आएंगे? नहीं, यह मौका है बदलाव का। हम सब सिस्टम का हिस्सा हैं—एम्बुलेंस चलाने वाला हममें से कोई, रिपोर्ट बनाने वाला हमारा पड़ोसी, प्रमाणपत्र देने वाला हमारा रिश्तेदार। इंसानियत बिक रही है, और खरीदार भी हम ही हैं। हर बार जब हम "चलता है" कहकर आंखें मूंद लेते हैं, हम उस व्यवस्था को ऑक्सीजन देते हैं जो आज एक पिता से उसकी बेटी की मौत पर भी टैक्स वसूलती है। यह सोच हमारी सबसे बड़ी हार है—हमने रिश्वत को सामान्य बना दिया, अब यह हमें असामान्य नहीं लगती।

क्या यही हमारा नया भारत है? हम डिजिटल इंडिया की बात करते हैं, स्मार्ट सिटी की चमक दिखाते हैं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में दुनिया को पीछे छोड़ने का दावा करते हैं—लेकिन इंसानियत की बुद्धि तो कब की दम तोड़ चुकी है। हमारी तकनीक सुपरफास्ट है, लेकिन संवेदना सुपरकोल्ड। शहरों की ऊंची इमारतें चमकती हैं, लेकिन दिलों में घना अंधेरा पसरा है। कानून की आंखें पट्टी बंधी हैं, व्यवस्था के कान बहरे हो चुके हैं—न्याय की लाश सड़क पर पड़ी सड़ रही है। बेंगलुरु की यह घटना कोई अलग थलग अपराध नहीं, बल्कि एक व्यापक नैतिक पतन की मिसाल है। मौत पर अब आंसू नहीं बहते, रेट कार्ड तैयार होते हैं। लाश पर फूल नहीं चढ़ते, नोटों की मालाएं सजाई जाती हैं। यह वह समाज है जहां दर्द को मौका माना जाता है, और मातम को मुनाफा। बेंगलुरु की यह घटना कोई अलग-थलग अपवाद नहीं, बल्कि पूरे भारत के ग्रामीण गलियारों से लेकर महानगरीय अस्पतालों तक फैले उस भयावह सत्य का आईना है, जहां मौत भी रिश्वत की भेंट चढ़ती है।

अब समय आ गया है कि हम सवाल सिर्फ सरकार से नहीं, खुद से पूछें। क्या हम सच में इतने निर्बल हो चुके हैं कि किसी की त्रासदी में भी लाभ की तलाश करते हैं? क्या हमने इंसानियत को हमेशा के लिए दफना दिया है? अगर हां, तो यह देश अब सभ्यता का केंद्र नहीं, बल्कि एक विशाल बाजार बन चुका है—जहां रिश्ते बिकते हैं, संवेदना नीलाम होती है, और नैतिकता की बोली लगती है। बेंगलुरु की इस घटना ने न केवल शिवकुमार को तोड़ा, बल्कि पूरे समाज का नकाब उतार फेंका। बेटी चली गई, लेकिन अपने साथ हमारी शर्म, हमारी करुणा और हमारी मानवता को भी ले गई। अब सवाल दोषी खोजने का नहीं, बल्कि यह है कि क्या हम अभी भी जीवित हैं—सच्चे इंसान की तरह, या सिर्फ सांस लेती हुई लाशें बनकर घूम रहे हैं? क्योंकि जब इंसानियत मर जाती है, तो समाज जिंदा रहकर भी मृत घोषित हो चुका होता है। यह बदलाव की पुकार है—अब जागो, या हमेशा के लिए सो जाओ।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

पूरी दुनिया के लिए आत्म मंथन का अवसर है, गांधी जी और शास्त्री जी की जंयती

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री वे दो व्यक्तित्व हैं जिनकी जयंती एक ही दिन 2 अक्टूबर को मनाई जाती है, और यह संयोग भारत के आदर्शों, नैतिकता और आत्मबल का जीवंत प्रतीक बन गया है। यह दिन न केवल भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए आत्ममंथन का अवसर है। गांधीजी ने अपने जीवन से सिद्ध किया कि सत्य और अहिंसा केवल विचार नहीं, बल्कि जीवन जीने की विधा हैं। उन्होंने राजनीतिक संघर्ष को नैतिकता का आधार देकर स्वतंत्रता आंदोलन को एक आध्यात्मिक दिशा प्रदान की। दक्षिण अफ्रीका से लेकर भारत तक उनके सत्याग्रह ने यह प्रमाणित किया कि बिना हिंसा के भी अत्याचार का प्रतिकार किया जा सकता है। इसी दर्शन की व्यापकता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मान्यता दी, जिससे यह भारतीय नहीं बल्कि वैश्विक चेतना का दिवस बन गया। दूसरी ओर लाल बहादुर शास्त्री ने अपने विनम्र, अनुशासित और सरल जीवन से इस बात का उदाहरण प्रस्तुत किया कि नेतृत्व का मूलाधार दिखावा नहीं, बल्कि कर्मनिष्ठा होती है। उन्होंने 'जय जवान जय किसान' का नारा देकर यह सच्चाई स्थापित की कि राष्ट्र की शक्ति उसके सीमाओं की रक्षा करने वाले जवानों और अन्नदाता किसानों में बसती है। 1965 के भारत-पाक युद्ध के समय उनका धैर्य, सादगी और दृढ़ निर्णय क्षमता देश के लिए प्रेरणा बन गई। गांधी और शास्त्री दोनों ही इस बात के प्रतीक हैं कि महानता बाहरी वैभव में नहीं, बल्कि आत्मसंयम, सेवा और सत्यनिष्ठा में निहित है। आज जब समाज भौतिक प्रगति के मोह में नैतिक संतुलन खोता जा रहा है, तो उनके विचार नयी पीढ़ी को जागरूक करते हैं कि सच्ची उन्नति केवल तकनीकी विकास में नहीं बल्कि मानवीय मूल्यों की रक्षा में है। 2 अक्टूबर का दिन केवल स्मृति का नहीं, बल्कि संकल्प का दिन होना चाहिए, संकल्प इस बात का कि हम गांधी के सत्य और अहिंसा के मार्ग तथा शास्त्री की सादगी और सेवा भावना को अपने जीवन में उतारकर भारत को नैतिक और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाएं।

स्वर्ण नीति से स्वावलंबन तक: भारत का नया आर्थिक कवच [सोना नहीं, भारत की इच्छाशक्ति चमक रही है]

एक ही सप्ताह में लगभग 3.6 अरब डॉलर की छलांग—और भारतीय रिज़र्व बैंक की तिजोरी में पहली बार स्वर्ण भंडार सौ अरब डॉलर की ऐतिहासिक सीमा पार कर गया। कुल विदेशी मुद्रा भंडार अब सात सौ अरब डॉलर के करीब है, जिसमें सोने का हिस्सा बढ़कर लगभग 15 प्रतिशत तक पहुंच गया है—यह 1996-97 के बाद का सर्वोच्च स्तर है। मात्रा के लिहाज़ से भी भारत अब आठ सौ अस्सी टन से अधिक सोने के साथ विश्व में आठवें स्थान पर है। यह कोई आकस्मिक उपलब्धि नहीं, बल्कि वैश्विक आर्थिक अस्थिरता और डॉलर-प्रभुत्व के विरुद्ध भारत की एक सुनियोजित रणनीतिक पहल है—जो उसकी आर्थिक संप्रभुता को अभेद्य कवच प्रदान कर रही है।

वैश्विक बाज़ार में स्वर्ण मूल्य 4,379 डॉलर प्रति औंस तक उछल गया—साल भर में लगभग 65 प्रतिशत की वृद्धि। भौतिक खरीदारी सीमित रही, मात्र चार टन, परंतु मूल्यांकन लाभ ने भंडार को अभूतपूर्व ऊंचाई पर पहुंचा दिया। विदेशी मुद्रा भंडार में सोने का अनुपात भी सात प्रतिशत से दोगुना होकर लगभग 15 प्रतिशत तक पहुंच चुका है। भारतीय रिज़र्व बैंक ने हाल ही में सौ टन सोना विदेशी तिजोरियों—मुख्यतः बैंक ऑफ इंग्लैंड—से भारत वापस लाकर भू-राजनीतिक जोखिमों को कम किया है, साथ ही अमेरिकी ट्रेज़री बॉन्ड्स में निवेश घटाकर पोर्टफोलियो को अधिक संतुलित बनाया है। इज़राइल–ईरान संघर्ष और अमेरिका–चीन व्यापार तनावों के बीच जहाँ डॉलर इंडेक्स 110 के नीचे फिसला, वहीं सोने ने अपनी चमक बरकरार रखी। विश्व स्वर्ण परिषद की ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक केंद्रीय बैंकों ने पिछले वर्ष एक हज़ार टन से अधिक सोना खरीदा—और भारत इस सूची में दूसरा सबसे बड़ा संस्थागत खरीदार रहा। आईएमएफ की हालिया बैठक में आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने इसे स्पष्ट रूप से रेखांकित किया: "स्वर्ण संचय वैश्विक अनिश्चितता में स्थिरता का स्रोत है—यह चिंता नहीं, आत्मविश्वास का संकेत है।"

भारत की यह मजबूती केवल संख्याओं की नहीं, बल्कि रणनीति की विजय है। रुपये की गिरावट के दौर में भी सोने ने मूल्य संरक्षण का कवच बनकर अर्थव्यवस्था को स्थिर रखा। ब्रेंट क्रूड के साठ डॉलर प्रति बैरल के आसपास रहने के बावजूद विदेशी मुद्रा भंडार डगमगाया नहीं। आज भारत का सकल घरेलू उत्पाद 4 ट्रिलियन डॉलर है, जिसमें लगभग 89 प्रतिशत मूल्य स्वदेशी स्वर्ण संपदा से जुड़ा है—यह अनुपात इक्विटी निवेश के मुकाबले तीन गुना अधिक है। रिसाइक्लिंग में वृद्धि से आयात पर निर्भरता घटी और व्यापार घाटा नियंत्रित हुआ। डी-डॉलरीकरण की रणनीति ने ठोस परिणाम दिए—युआन और रूबल में व्यापार बढ़ा, जिससे विदेशी मुद्रा प्रवाह का संतुलन सुधरा और निवेशकों का विश्वास फिर से लौटा। वैश्विक मंदी के बीच यह स्वर्ण भंडार एक सुरक्षात्मक कवच, एक 'इकोनॉमिक बफर' के रूप में कार्य कर रहा है। विदेशी तिजोरियों से सोना वापस लाना न केवल आर्थिक विवेक का प्रतीक है, बल्कि राष्ट्रीय गौरव की पुनर्स्थापना भी है।

परंतु इस चमकदार सफलता के पीछे कुछ गहरी छायाएँ भी हैं। सोना एक निष्क्रिय संपत्ति है—न ब्याज देता है, न लाभांश। अमेरिकी बॉन्ड्स से मिलने वाली 4–5 प्रतिशत रिटर्न की तुलना में यह प्रतिफलहीन है। विदेशी मुद्रा भंडार में लगभग 15 प्रतिशत हिस्सा सोने का होना तरलता को सीमित करता है—आपातकाल में यही अनुपात नकदी संकट को जन्म दे सकता है। मूल्य अस्थिरता का खतरा भी कायम है: यदि अमेरिकी फेड दरें बढ़ाए या चीन अपने भंडार की बिक्री शुरू करे, तो सोने की कीमतें तेज़ी से गिर सकती हैं।

भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा स्वर्ण उपभोक्ता है; कीमतों में उछाल से व्यापार घाटा बढ़कर 32 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। भंडारण लागतें भी बढ़ रही हैं—सुरक्षित तिजोरियों और बीमा की कीमतें अब पहले से कहीं अधिक हैं। विश्व बैंक के मानक के अनुसार, उभरती अर्थव्यवस्थाओं में विदेशी भंडार का दस प्रतिशत हिस्सा सोने में होना आदर्श माना जाता है—जबकि भारत अब लगभग 15 प्रतिशत पर है। साथ ही, निजी क्षेत्र के पास 25,000 टन से अधिक सोना निष्क्रिय पड़ा है—जो अर्थव्यवस्था की परिसंचारी पूंजी से बाहर है। सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड जैसी योजनाएँ इस जड़ता को तोड़ने में अपेक्षित सफलता नहीं पा सकीं।

भारतीय रिज़र्व बैंक का यह दांव जितना साहसिक है, उतना ही संतुलित भी। स्वर्ण संचय की रफ्तार जानबूझकर संयमित रखी गई—वैश्विक औसत पंद्रह टन प्रति माह से कम—ताकि भौतिक खरीदारी से अधिक मूल्यांकन लाभ पर भरोसा किया जा सके। घरेलू नियंत्रण तंत्र को भी अभूतपूर्व रूप से सुदृढ़ किया गया है। नई स्वर्ण मोनेटाइजेशन योजनाएँ इस दिशा में अगला कदम हैं—जिनका लक्ष्य है निजी स्वर्ण संपत्ति को औपचारिक अर्थव्यवस्था का सक्रिय हिस्सा बनाना। तरलता के लिए विदेशी मुद्रा भंडार के पचासी प्रतिशत को बैकअप के रूप में सुरक्षित रखा गया है, जिससे स्वर्ण निवेश की आक्रामकता के बावजूद वित्तीय संतुलन कायम रहे। लेकिन आगे की राह सरल नहीं। चुनौती यह है कि स्वर्ण संचय की गति सीमित रहे, निजी स्वर्ण को व्यवस्थित रूप से शामिल किया जाए, और सुरक्षा व तरलता के बीच सही संतुलन बनाए रखा जाए।

यह न तो मजबूती की अंतिम कथा है, न जोखिम का समापन। यह एक परिपक्व राष्ट्र की आर्थिक दूरदर्शिता का प्रमाण है—जहाँ प्राचीन धरोहर को आधुनिक रणनीति का हथियार बनाया जा रहा है। वैश्विक वित्तीय तूफानों के बीच भारत का स्वर्ण भंडार केवल कवच नहीं, बल्कि एक सक्रिय रणनीतिक ढाल बन चुका है। सवाल यह नहीं कि भंडार ने सौ अरब डॉलर का आंकड़ा पार कर लिया; असली प्रश्न यह है—क्या भारत इस सुनहरे सफर को दो सौ अरब डॉलर तक ले जा सकेगा, वह भी बिना तरलता खोए, और निजी सोने को आर्थिक प्रवाह में शामिल कर बीस प्रतिशत हिस्सेदारी तक पहुँचते हुए?

इसका उत्तर समय देगा। पर आज की सच्चाई यह है—यह स्वर्णिम छलक भारत की आर्थिक संप्रभुता का सबसे प्रखर संदेश है: डॉलर प्रभुत्व के युग के क्षरण की शुरुआत, और एक आत्मनिर्भर, स्वर्ण-आधारित भविष्य की ओर पहला निर्णायक कदम। हर टन सोना अब केवल धातु नहीं—यह भारत की अटूट इच्छाशक्ति का प्रतीक है। यह कहानी है उस राष्ट्र की, जो न टूटता है, न झुकता है—बस निखरता है, जैसे तपकर सोना।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत जैन",

निर्णायक होगी महिला वोटरों की भूमिकाएं

डॉ. रमेश ठाकुर

बीते कुछ दशकों से बिहार की आधी आबादी पुरुष मतदाताओं के मुकाबले सर्वाधिक मतदान कर रही हैं। अपने बूते जिसे चाहें, उसे सत्ता सौंपने का मादा रखती हैं। हालिया, कुछ चुनावी सर्वेक्षण रिपोर्टस संकेत इस बार भी ऐसे ही दिखा रही हैं। सर्वे बताते हैं कि बिहार चुनाव में महिलाएं लैंगिक सियासत की बदलती गतिशीलता की नई तस्वीर पेश करेंगी। हिंदी पट्टी वाले राज्यों में चुनावी समर में पुरूषों के मुकाबले महिला ज्यादा बढ़चढ कर हिस्सा लेती हैं जिनमें बिहार सबसे अव्वल है। चुनाव चाहे सांसदी के हों या विधानसभा के या फिर पंचायत के, सभी में महिलाओं का वोटिंग प्रतिशत सर्वाधिक रहा है। पूर्व के इन आंकड़ों को देखते हुए जारी बिहार चुनाव में तकरीबन सभी सियासी दल महिला वोटरों पर ही ज्यादा दांव लगा रहे हैं।

इतना तय है कि महिलाएं इस बार चुनावी गच्चा खाने के मूड में नहीं हैं? झूठे वादों में नहीं फंसेगी। पिछले चुनाव में एनडीए के खाते में 40 फीसदी वोट पड़ने वाला समूह शांत दिखाई पड़ता है। चुनावी वायदों को महिलाएं अपने नज़रिए से परख रही हैं। बिहार के चुनावी उत्सव में चाहे महिला वोटर हों या विधायक, एकाध दशकों में इनकी भागेदारी सरकारों में भी रही हैं। विधानसभा-२०१० में महिला उम्मीदवारों ने रामनगर, धमदाहा, प्राणपुर, कोढ़ा, गौराबौराम, गोपालगंज, राजापाकर, महनार, कटोरिया, मोकामा, मसौढ़ी, संदेश, नोखा, नरकटियागंज, बेतिया, केसरिया, परिहार, बाबूबरही, फुलपरास, त्रिवेणीगंज, शेरघाटी, बाराट्टी, हिसुआ, बारसलीगंज और जमुई में विजयी पताका लहराई थी। महिलाओं के लिए मौजूदा विधानसभा-२०२५ चुनाव यह निर्धारित करेगा कि जनकल्याण के माध्यम से सशक्तिकरण वास्तिवक स्वायतता में तब्दील होता है या सिर्फ चुनावी सुविधा ही बनकर रह जाएगा। पिछले आंकड़ों को देखकर भाजपा का पूरा फोकस महिलाओं पर है। तभी तो उन्होंने चुनाव तारीखों की घोषणा से पूर्व ही 'मुख्यमंत्री महिला रोजगार' स्कीम के तहत लगभग 75 लाख महिलाओं के बैंक खातों में दस-दस हजार रूपए की नगद धनराशि पहले ही भेज दी हैं। पैसा पाकर महिलाएं खुश जरूर हैं, लेकिन इस बात की गारंटी नहीं कि वह 'नोट के बदले वोट' देंगी या नहीं? इस स्कीम पर महिलाओं को संशय इसलिए है कि ये घोषणा नीतीश कुमार ने नहीं, बल्कि दिल्ली से प्रधानमंत्री द्वारा हुई क्योंकि दिल्ली विधानसभा चुनाव में भी एक घोषणा उन्हीं के द्वारा की गई थी, जो अभी तक लागू नहीं हुई है। इन सभी तथ्यों की समीक्षाएं महिलाएं इस बार कर रही हैं। महिला वोटरों को रिझाने में कोई भी सियासी दल पीछे नहीं हैं? सभी अपनी-अपनी हैसियत अनुसार वादा कर रहे हैं जबकि, बिहार में दूसरे सबसे मजबूत दल आरजेडी ने तो प्रत्येक परिवार के एक-एक सदस्य को नौकरी देने की भी घोषणा की है। कुल मिलाकर, बिहार का मौजूदा चुनावी गणित आधी आबादी के इर्द -गिर्द ही घूम रहा है।

चुनाव आयोग के मुताबिक बिहार में 100 में 48 फीसदी वोटर आंकड़ा महिलाओं का है। पिछले चुनाव में रिकॉर्ड 40 फीसदी मतदान महिलाओं ने एनडीए के पक्ष में किया था। इतनी वोटिंग इस बार भी जिस दल के पक्ष में होगी, वही बाजी मारेगा हालांकि पिछले विधानसभा-२०२० के चुनाव में जब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शराबबंदी का ऐलान किया था तो उस ऐलान को महिलाओं ने हाथों-हाथ लिया था। वोटरों के अलावा उम्मीदवार के तौर भी दर्जनों महिला इस बार भी मैदान में हैं। 11 विधानसभाओं में 10 पुरुष वोटरों की तुलना में 9 महिला मतदाता हैं। 11 विधानसभा क्षेत्रों से ही लिंगानुपात ठीक होने पर महिला विधायक निर्वाचित हुई जिनमें त्रिवेणीगंज, धमदाहा, कोढ़ा, राजापाकर, कटोरिया, संदेश, शेरघाटी, बाराचट्टी, हिसुआ, वारसलिगंज और जमुई विधानसभा शामिल हैं।

विधानसभा चुनाव-२०१० में एनडीए के लिए शराबबंदी का वादा तुरुप का पत्ता साबित हुआ था। महिलाओं ने खुलकर जेडीयू का समर्थन किया था हालांकि वह वादा धरातल पर उतना कारगर साबित नहीं हुआ जितने की उम्मीद महिलाएं लगाकर बैठी थीं क्योंकि लोग शराब अब पी रहे हैं। ऐसा भी नहीं हुआ कि शराबबंदी के बाद बिहार में शराब का कहीं कोई टोटा दिखा हो। जितनी चाहो, उतनी शराब तस्कर शराब मुहैया करवा देते हैं। चोरी छिपे धड़ल्ले से शराब की तस्करी जोरों पर है। शराबबंदी में शराब माफिया चांदी काट रहे हैं। प्रशासनिक मिलीभगत से अवैध शराब का धंदा खूब फलफूल रहा है। इसलिए इस बार महिलाओं का रुझान नीतीश के पक्ष में एकतरफा नहीं दिखाई देता। किधर मूव करेगा, ये भी कहना जल्दबाजी होगा। युवा आबादी तेजस्वी की ओर आर्कर्षित है, ऐसी तस्वीर उनकी रैलियों में भारी मात्रा में उमड़ती भीड़ बताती है।

महिलाएं निर्णायक भूमिका में होंगी, ये बात नीतीश से लेकर प्रधानमंत्री, तेजस्वी यादव भी जानते हैं। गुजरे २० वर्षों से कुर्सी पर बैठे नीतीश कुमार को बदलकर नया चेहरा लाने को भी महिलाएं आतुर दिखती हैं। नीतीश के पीछे सत्ता विरोधी मुद्दे भी कई हावी हैं। वहीं, महाराष्ट्र की तरह इस चुनाव से भाजपा अपना स्वयं का प्रभुत्व स्थापित करना चाहती है। इस दिशा में उन्होंने जेडीयू और अपने लिए बराबर-बराबर सीट बांटकर पहला कदम बढ़ा भी दिया है। इसलिए ये चुनाव नीतीश के २० वर्ष का सुशासन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राष्ट्रीय प्रदाता छवि से अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा भी कह सकते हैं। पिछले विधानसभा में भाजपा ने 74 सीटें जीती थी जबकि, जेडीयू मात्र 43 पर सिमट गई थी. बावजूद इसके अनुकूल परिस्थितियों को भांपकर भाजपा ने दूसरे नंबर पर रहने का समझौता किया था लेकिन इस बार की स्थिति पहले से जुदा है। दोनों दल 101-101 सीटों पर लड़ रहे हैं। चुनाव परिणाम में अगर भाजपा की एक भी सीट इस दफे ज्यादा आई तो उनका मुख्यमंत्री किसी भी सूरत में बनेगा। अगर ऐसा हुआ तो नीतीश कुमार फिर से पलटने में देर नहीं करेंगे।

33 वर्षों बाद अमेरिका के परमाणु परीक्षण आदेश से कांपा विश्व- क्या शुरू होगी नई "न्यूक्लियर रेस'?

वैश्विक परमाणु निरस्त्रीकरण नीति ज़रूरी – 'न्यूक्लियर रेस' शुरू हो गई, तो मानव सभ्यता को ख़ुद अपने बनाए हथियारों से मिटने में देर नहीं लगेगी?– एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के राजनीतिक गलियारों में इन दिनों सबसे ज्यादा चर्चा जिसमुद्दे पर हो रही है, वह है अमेरिका का 33 वर्षों के बाद पुनः परमाणु परीक्षण शुरू करने का आदेश। जिस देश ने दशकों तक पूरी दुनियाँ को परमाणु हथियारों से दूर रहने की नसीहत दी, आज वही देश फिर से न्यूक्लियर बमों की गूंज सुनना चाहता है राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अमेरिकी सेना को परमाणु परीक्षण तुरंत शुरू करने का आदेश देने के बाद वैश्विक समुदाय में एक प्रकार की हलचल मच गई है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूंकि रूस से लेकर चीन, उत्तर कोरिया से लेकर ईरानतक हर देश की निगाह अब वॉशिंगटन की ओर है। सवाल यह है कि क्या यह कदम दुनियाँ को एक बार फिर से 'न्यूक्लियर रेस' में धकेल देगा? दुनियाँ यह देख रही है कि अमेरिका का दोहरा मापदंड "दूसरों को रोको, खुद करो" नीति का परिणाम क्या निकलेगा, अमेरिका दशकों से वैश्विक राजनीति में 'न्यूक्लियर नैतिकता' का सारथी बनकर बैठा रहा है। उसने हमेशा अन्य देशों पर परमाणु हथियार न बनाने का दबाव बनाया। चाहे वह ईरान हो, उत्तर कोरिया हो या कभी भारत, अमेरिकी नीतियों ने हमेशा यह कहा कि परमाणु हथियार मानवता के लिए खतरा हैं। लेकिन अब वही अमेरिका, जो खुद को "ग्लोबल पीस कीपर" कहता है, नए परीक्षणों के आदेश जारी कर चुका है। यह कदम न केवल उसकी विदेश नीति की विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा करता है, बल्कि उसके "डबल स्टैंडर्ड" की अंदरुनी नीति भी ओपन करता है। अमेरिका की यह नीति इतिहास में कई बार देखी जा चुकी है, जब वह अंतरराष्ट्रीय संधियों से खुद को अलग कर लेता है और दूसरों पर उसका पालन थोपताहै, उदाहरण के लिए, ट्रंप प्रशासन ने 2018 में ईरान न्यूक्लियर डील से बाहर निकलकर वैश्विक स्थिरता को बड़ा झटका दिया था। आज 2025 में, वही नीति एक नए रूप में फिर लौट आई है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग सेइस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, 33 वर्षों बाद अमेरिका के परमाणु परीक्षण आदेश से कांपा विश्व-क्या शुरू होगी नई "न्यूक्लियर रेस"?

साथियों बात अगर हम 33 वर्षों के बाद क्यों? ट्रंप की सामरिक रणनीति के संकेत को समझने की करें तो, यह सवाल सबसे अहम है कि आखिर अमेरिका ने अब ऐसा कदम क्यों उठाया? आखिरी बार अमेरिका ने 1992 में नेवादा परीक्षण स्थल पर परमाणु परीक्षण किया था। उसके बाद उसने अंतरराष्ट्रीय दबाव और "कंप्रीहेंसिव न्यूक्लियर टेस्ट बैन ट्रीटी" के तहत परीक्षण रोक दिए थे। लेकिन अब ट्रंप का यह आदेश बताता है कि वाशिंगटन का इरादा वैश्विक सैन्य वर्चस्व को दोबारा स्थापित करने का है। अमेरिकी खुफिया एजेंसियों और रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार, चीन और रूस की तेज़ी से बढ़ती परमाणु क्षमता ने ट्रंप प्रशासन को यह कदम उठाने के लिए प्रेरित किया। रूस ने अपने हाइपरसोनिक न्यूक्लियर मिसाइल "एवंगार्ड" और "सरमाट" की घोषणा कर दी है, जबकि चीन भी "डोंगफ़ेंग-41" जैसी लंबी दूरी की मिसाइलों का परीक्षण कर चुका है। ट्रंप शायद यह दिखाना चाहते हैं कि अमेरिका अब भी 'मिलिट्री टेक्नोलॉजी' में सर्वश्रेष्ठ है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक प्रतिक्रिया, रूस का जवाब और दुनिया की चिंता को समझने की करें तो, जैसे ही अमेरिका के परमाणु परीक्षण के आदेश की खबर फैली, सबसे पहले रूस ने इसका कड़ा जवाब दिया। रूसी विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट कहा कि यदि अमेरिका परीक्षण शुरू करता है, तो रूस भी "तुरंत जवाबी परमाणु परीक्षण" करेगा। यह बयान सीधे संकेत देता है कि दुनियाँ फिर से "कूल्ड वॉर" जैसे दौर की ओर बढ़ सकती है। रूस की इस प्रतिक्रिया के बाद चीन ने भी अपनी सैन्य प्रयोगशालाओं में "सुरक्षा और क्षमता वृद्धि" के नाम पर तैयारी शुरू कर दी है। वहीं, यूरोप के देशों, विशेषकर फ्रांस, जर्मनी और ब्रिटेन ने संयुक्त बयान? जारी कर कहा कि यह फैसला "वैश्विक स्थिरता के लिए घातक" साबित हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने भी गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि "33 वर्षों की शांति को तोड़ने वाला यह कदम, दुनियाँ को एक और हथियारों की दौड़ में झोंक सकता है।"

साथियों बात अगर हमन्यूक्लियर रेस, क्या इतिहास खुद को दोहरा रहा है? को समझने की करें तो, यदि हम इतिहास पर नज़र डालें तो यह समझना कठिन नहीं कि हर बार जब किसी शक्ति ने अपने हथियारों की ताकत दिखाने की कोशिश की है, तो उसका परिणाम "वैश्विक अस्थिरता" के रूप में सामने आया है। 1945

में हिरोशिमा और नागासाकी पर अमेरिका द्वारा किए गए दो बम विस्फोटों ने मानव सभ्यता की दिशा ही बदल दी थी। उसके बाद 1945 से अब तक लगभग 2,000 से अधिक परमाणु परीक्षण दुनिया भर में किए गए हैं। इनमें से आधे से अधिक परीक्षण अमेरिकाने अकेले किए, आंकड़े बताते हैं कि अमेरिका ने करीब 1,030 परमाणु परीक्षण, रूस (पूर्व सोवियत संघ) ने 715, फ्रांस ने 210, चीन ने 45, ब्रिटेन ने 45, भारत ने 6, पाकिस्तान ने 6, और उत्तर कोरिया ने 6 परीक्षण किए हैं। यह सूची बताती है कि परमाणु शक्ति केवल "रक्षा" का माध्यम नहीं रही, बल्कि यह देशों के "राजनीतिक दबाव" और "वैश्विक पहचान" का उपकरण बन चुकी है।

साथियों बात अगर हम भारत की स्थिति, संयमित शक्ति, जिम्मेदार नीति को समझने की करें तो, भारत का नाम जब भी परमाणु शक्ति वाले देशों में लिया जाता है, तो एक "जिम्मेदार शक्ति" के रूप में लिया जाता है। भारत ने कभी भी "पहले इस्तेमाल" की नीति नहीं अपनाई। उसने केवल "नों फर्स्ट यूज़ पालिसी" के सिद्धांत पर चलते हुए कहा कि परमाणु हथियार केवल "रक्षा" के लिए हैं, "आक्रमण" के लिए नहीं। भारत ने अब तक केवल दो बार परमाणु परीक्षण किए (1) 1974 में "स्माइलिंग बुद्धा" नाम से, जब इंदिरा गांधी सरकार ने दुनियाँ को भारत की क्षमता दिखाई (2) 1998 में "पोखरण-II" परीक्षण, जब भारत ने आधिकारिक रूप से खुद को परमाणु शक्ति घोषित किया। इसके बाद भारत ने किसी भी प्रकार का नया परीक्षण नहीं किया है। बल्कि, उसने "सीटीबीटी" पर हस्ताक्षर न करने के बावजूद उसका "स्वैच्छिक पालन" जारी रखा है। 2017 के बाद से, जब उत्तर कोरिया ने अपना आखिरी परीक्षण किया था, तब से लेकर अब तक किसी देश ने कोई नया परमाणु परीक्षण नहीं किया। इस दृष्टि से भारत की नीति अत्यंत संतुलित मानी जाती है।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय समझौते और उनका भविष्य को समझने की करें तो, अमेरिका का यह कदम न केवल अंतरराष्ट्रीय राजनीति को झकझोरता है, बल्कि दशकों से चले आ रहे परमाणु निरस्त्रीकरण समझौतों पर भी प्रश्नचिह्न लगा देता है। (1) कंप्रेहंसिव नुक्लियर टेस्ट बैन ट्रिटी (सीटीबीटी)- यह संधि 1996 में तैयार हुई थी, जिसका उद्देश्य विश्व में सभी प्रकार के परमाणु परीक्षणों को रोकना था। अमेरिका ने इसे साइन तो किया, लेकिन कभी रैटिफाई नहीं किया। (2) नॉन - प्रॉलीफेरेशन ट्रिटी (एनपीटी) -1970 में लागू हुई इस संधि के तहत देशों को परमाणु हथियार न फैलाने की जिम्मेदारी दी गई। अमेरिका इसका बड़ा समर्थक रहा है, पर अब वही नियम तोड़ रहा है। (3) स्टार्ट (स्ट्रेटेजीकआर्म्सरिडक्शनट्रिटी)-अमेरिका और रूस के बीच हुआ यह समझौता हथियारों की संख्या घटाने के लिए था, लेकिन अब दोनों ही देश इस संधि को लगभग निष्क्रिय बना चुके हैं, अमेरिका का ताज़ा फैसला इन संधियों के लिए "मौत की घंटी" साबित हो सकता है।

साथियों बात अगर हम विश्व के लिए संभावित खतरे, शांति से युद्ध की ओर? को समझने की करें तो, अगर अमेरिका ने वाकई में अपने परमाणु परीक्षण फिर शुरू किए, तो यह डोमिनो इफ़ेक्ट की तरह काम करेगा। रूस, चीन, उत्तर कोरिया और शायद ईरान भी अपनी क्षमता बढ़ाने में जुट जाएंगे। यह न केवल हथियारों की दौड़ को तेज़ करेगा, बल्कि "न्यूक्लियर एक्सीडेंट्सऱ, "रेडिएशन लीकेजऱ, और "आर्थिक दबाव" जैसी समस्याओं को भी जन्म देगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति बनाए रखने के लिए अब तक जो संस्थाएं काम कर रही हैं, जैसे आईएईए (इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी), उनकी भूमिका भी चुनौती में पड़ जाएगी।

साथियों बात अगर हम इस फैसले को ट्रंप की राजनीति या वैश्विक रणनीति? को समझने की करें तो, विश्लेषक मानते हैं कि ट्रंप का यह फैसला केवल सैन्य दृष्टि से नहीं, बल्कि राजनीतिक उद्देश्य से भी प्रेरित है। 2025 की अमेरिकी राजनीति में ट्रंप "मजबूत राष्ट्रवाद" और "अमेरिका फर्स्ट" के नारे को पुनर्जीवित कर रहे हैं। न्यूक्लियर टेस्ट का आदेश उसी एजेंडा का हिस्सा हो सकता है, जिससे वे अमेरिका को फिर से "अजेय शक्ति" के रूप में पेश कर सकें। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह "अजेयता" वास्तव में शांति की ओर ले जाएगी या दुनिया को एक नए संकट में धकेलेगी?

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि यह वक्त शांति की परीक्षा का दौर हैं, अमेरिका द्वारा 33 साल बाद परमाणु परीक्षण दोबारा शुरू करने का आदेश एक "ऐतिहासिक मोड़" है, ऐसा मोड़ जो या तो दुनियाँ को शांति के नए रास्ते पर ले जाएगा या उसे तीसरे विश्व युद्ध जैसी अंधकारमय स्थिति में झोंक देगा? भारत जैसे देशों के लिए यह एक गंभीर चुनौती है कि वे अपनी "जिम्मेदार न्यूक्लियर नीति" को बनाए रखते हुए विश्व शांति की दिशा में नेतृत्व करें।

आज विश्व समुदाय को यह तय करना होगा कि वह हथियारों की दौड़ में शामिल होगा या विवेक और संवाद की राह चुनेगा। क्योंकि एक बार यदि यह "न्यूक्लियर रेस" शुरू हो गई, तो मानव सभ्यता को खुद अपने बनाए हथियारों से मिटने में देर नहीं लगेगी? यानें "जब शक्ति विवेक के बिना चलती है, तो विनाश निश्चित होता है। अमेरिका का यह कदम केवल शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि मानवता की परीक्षा है।"

पर्यावरण पाठशाला : एक पेड़ हमें क्या सिखाता है?

– अंकुर

कभी किसी पेड़ के नीचे बैठिए, उसकी छांव में कुछ देर आंखें बंद कीजिए —

आप पाएँगे कि वह मौन रहते हुए भी हमें जीवन के सबसे गहरे सबक सिखाता है।

पेड़ केवल प्रकृति का हिस्सा नहीं, बल्कि एक दार्शनिक गुरु है जो हमें धैर्य, संतुलन और सेवा का भाव सिखाता है।

आइए जानते हैं पेड़ हमें कौन-कौन सी 5 महत्वपूर्ण बातें सिखाता है:

1. जड़ों से जुड़े रहना — विनम्रता का पाठ

पेड़ चाहे कितना भी ऊँचा क्यों न हो जाए, उसकी ताकत उसकी जड़ों में होती है।

वह हमें बताता है कि जीवन में ऊँचाई पाने के बाद भी अपने मूल से जुड़े रहना जरूरी है। विनम्रता ही सच्ची स्थिरता है।

2. धैर्य रखना — समय के साथ बढ़ना

पेड़ कभी जल्दबाज़ी नहीं करता।

वह मौसम बदलने की प्रतीक्षा करता है, धीरे-धीरे बढ़ता है, और एक दिन विशाल बन जाता है।

वह हमें सिखाता है कि जो इंतज़ार करना जानता है, वही वास्तव में बढ़ता है।

3. देना सीखना — बिना स्वार्थ के सेवा करना

पेड़ हमें बिना कुछ मांगे सब कुछ देता है — ऑक्सीजन, फल, लकड़ी और छांव।

उसकी निस्वार्थ सेवा हमें सिखाती है कि सच्चा सुख "लेने" में नहीं, बल्कि "देने" में है।

4. हर परिस्थिति में स्थिर रहना

बारिश हो या तूफ़ान, पेड़ अपनी जगह डटा रहता है।

वह झुकता है, पर टूटता नहीं — यह हमें सिखाता है कि जीवन की मुश्किलें हमें मजबूत बनाने आई हैं, गिराने नहीं।

5. दूसरों को आश्रय देना — साझा जीवन का भाव

पेड़ अपनी शाखाओं पर पक्षियों को घर देता है, अपने नीचे इंसानों और जानवरों को ठंडक देता है।

वह हमें सिखाता है कि सच्ची प्रगति तभी है जब हमारे विकास से दूसरों को भी लाभ हो।

पेड़ केवल पर्यावरण नहीं बचाता, वह चरित्र निर्माण भी करता है। अगर हम पेड़ के जैसे धैर्यवान, दयालु और संतुलित बन जाएँ, तो समाज में हरियाली सिर्फ बाहर नहीं, हमारे भीतर भी खिल उठेगी।

विशेष पहल – "मेरा वृक्ष, मेरा साथी"

हर नागरिक अपने नाम का एक पेड़ लगाए, उसे परिवार के सदस्य की तरह अपनाए।

याद रखिए, एक पेड़ लगाना भविष्य को सांसें देना है।

indiangreenbuddy@gmail.com

झारखंड के 25 वां स्थापना दिवस पर होगें बडे कार्यक्रम : बंदना डाडेल ,गृह सचिव

डादेल के नेतृत्व में उच्चाधिकारियों टीम पहुंचा मोहराबादी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड की प्रधान सचिव गृह विभाग वंदना दादेल ने कहा कि राज्य सरकार ने इस वर्ष 15 नवंबर को राज्य स्थापना दिवस को वृहत पैमाने पर मनाने का निर्णय लिया है । यह आयोजन झारखंड की गौरवशाली विरासत, संस्कृति एवं विकास यात्रा का प्रतीक होगा ।इसे भव्य एवं यादगार बनाने को ध्यान में रख कर सभी तैयारियाँ की जा रही हैं। इस वर्ष 2025 को राज्य गठन के 25 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर 11 नवंबर से ही सभी जिलों,प्रखंडों,पंचायतों,स्कूलों, कॉलेजों में विभिन्न तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे । उन्होंने कहा कि 15 नवंबर को स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का शिलान्यास, उद्घाटन किया जाएगा । वे आज मोरहाबादी मैदान में 15 नवंबर को राज्य स्थापन दिवस के अवसर पर होने वाले भव्य समारोह की तैयारियों का जायजा ले रही थीं।

श्रीमती वंदना दादेल ने पदाधिकारियों को निदेश दिया कि समारोह से जुड़ी सभी तैयारियाँ समयबद्ध एवं सुनियोजित तरीक़े से पूरी की जायें । कार्यक्रम के विभिन्न आयामों जैसे मंच व्यवस्था, सुरक्षा, यातायात प्रबंधन, स्वच्छता, विद्युत व्यवस्था, अतिथि सत्कार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी, पार्किंग एवं आपातकालीन प्रबंधन आदि के लिए प्रत्येक पदाधिकारी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन पूर्णनिष्ठा एवं दक्षता से करेंगे तथा किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि मुख्य कार्यक्रम के लिए मंच निर्माण, बैठने की व्यवस्था, सुरक्षा घेराबंदी, प्रवेश-निकास द्वार, स्वागत कक्ष, मीडिया सेंटर, चिकित्सा व्यवस्था एवं अन्य सुविधाओं को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए हैं।

निरीक्षण के दौरान सचिव वाणिज्य कर अमिताभ कौशल , कल्याण सचिव कृपानंद झा , ख़ान निदेशक राहुल कुमार सिन्हा,आदिवासी कल्याण आयुक्त कुलदीप चौधरी, विशेष सचिव सह निदेशक आईपीआरडी राजीव लोचन बख्शी ,उपायुक्त रांची मंजू नाथ भजंत्रीसहित रांची जिला प्रशासन के अन्य सभी वरीय पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

नुआपाड़ा के नतीजे ओडिशा की राजनीति को एक नया चेहरा दिखाएंगे: प्रसाद हरिचंदन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: जिस तरह बिहार चुनाव के नतीजे आने वाले दिनों में भारतीय राजनीति को प्रभावित करेंगे, उसी तरह नुआपाड़ा उपचुनाव के नतीजे ओडिशा की राजनीति को एक नया चेहरा दिखाएंगे। नुआपाड़ा में भाजपा और बीजद के बीच कड़ी टक्कर चल रही है। लेकिन जनता पहले ही फैसला कर चुकी है, जनता का फैसला कांग्रेस के पक्ष में है, ऐसा वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रसाद हरिचंदन ने आज कांग्रेस भवन में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में कहा।

उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार ने सरकारी मशीनरी और कर्मचारियों को काम पर लगा दिया है। उनका नुआपाड़ा की जनता से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए जनता उन्हें आसानी से स्वीकार नहीं करती। नुआपाड़ा जिला कांग्रेस कार्यालय पर पुलिस ने छापा मारा। लेकिन क्या मिला? क्या पुलिस कभी बीजद और भाजपा कार्यालयों में घुसी है? इसलिए, सरकारी कर्मचारियों और पुलिस के ज़रिए चुनाव प्रचार भाजपा के लिए कारगर नहीं होगा। 71 नुआपाड़ा विधानसभा क्षेत्र 70 कांटाबांजी विधानसभा क्षेत्रों के बगल में हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में 24 वर्षीय मुख्यमंत्री नवीन बाबू ने कांटाबांजी से चुनाव लड़ा था और बड़े अंतर से हार का स्वाद चखा था। नुआपाड़ा में मौजूदा चुनावों में बीजद को कांटाबांजी जैसा ही परिणाम देखने को मिलेगा। बीजद पार्टी का उम्मीदवार उस निर्वाचन क्षेत्र या उस जिले से नहीं है। उम्मीदवार बरगढ़ जिले से आता है। इसीलिए नवीन बाबू को नुआपाड़ा चुनाव के लिए प्रचार करने के लिए मजबूर होना

पड़ा है। यह सच है कि नवीन बाबू प्रचार करेंगे, प्रभाव निश्चित रूप से होगा, लेकिन प्रभाव ध्यान देने योग्य नहीं होगा, श्री हरिचंदन ने कहा। बीजद के पास पुराने संगठन हैं, जिन्हें पिछले चुनावों में राज्य की जनता ने खारिज कर दिया था। कांग्रेस ने एक स्थानीय आदिवासी शिक्षित व्यक्ति को मैदान में उतारा है। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़कर, उन्होंने अपने काम से लोगों में मजबूत विश्वास पैदा किया है। पिछले तीन चुनावों के परिणामों को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि उनका वोट शेयर लगातार बढ़ रहा है। 2014 में उन्हें 26 प्रतिशत और 2019 में 27 प्रतिशत वोट मिले थे, जबकि 2024 के चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में गाजीराम माझी को 51,000 से ज़्यादा वोट मिले थे। नुआपाड़ा में एक नया नारा बुलंद हो रहा है: ₹बाहरी भगाओ, अपना लाओ₹।

इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में श्री हरिचंदन ने पूछा कि स्वर्गीय राजेंद्र ढोलकिया किसके हैं? भाजपा या बीजद। क्योंकि दोनों ही पार्टियाँ अपने बैनर और पोस्टरों पर स्वर्गीय ढोलकिया की तस्वीर लगा रही हैं। इससे साफ़ है कि बीजद और भाजपा मिलकर चुनाव लड़ रही हैं। कौन कह रहा है कि दिल्ली में उनके बीच कोई डील हुई है? हम लीक से हटकर बात कर रहे हैं। अब हमें पूरा यकीन है कि नुआपाड़ा की जागरूक जनता कांग्रेस उम्मीदवार का समर्थन ज़रूर करेगी। इसलिए गाजीराम माझी की लोकप्रियता ने दोनों पार्टियों को डरा दिया है।

श्री हरिचंदन ने नुआपाड़ा ज़िले में कांग्रेस के योगदान की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अकाल के दौरान इंदिरा गांधी यहाँ आई थीं। जब वह प्रधानमंत्री थे, राजीव गांधी सोनिया गांधी के साथ कोमना ब्लॉक आए और आदिवासियों के लिए काम किया। माडा योजना और केबीके योजना के माध्यम से कांग्रेस की मदद से नुआपाड़ा में कई विकास कार्य हुए हैं। कांग्रेस के शासनकाल में बने पोतारा बांध की जल भंडारण क्षमता को पिछले 25 वर्षों में पिछली भाजपा और बीजद सरकारों ने नहीं बढ़ाया। अगर इसे बढ़ाया जाता, तो क्षेत्र के सिंचाई और कृषि क्षेत्र में सुधार होता। जिससे नुआपाड़ा के लोगों को फायदा होता। जब पीसीसी अध्यक्ष भक्त चरण दास केंद्र में रेल मंत्री थे, तो खोरधा और बलांगीर रेलवे परियोजनाओं को प्रशासनिक स्वीकृति दी गई थी, लेकिन अभी तक काम पूरा नहीं हुआ है। अब रेल मंत्री ओडिशा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और नुआपाड़ा जिला मुख्यालय में कोई एक्सप्रेस ट्रेन की सुविधा नहीं दी गई है। अब वह कह रहे हैं कि वह 1100 करोड़ देंगे। यह समुद्र के समान है। सरकार ने छात्रों, युवाओं, किसानों और महिलाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया है बीजद और भाजपा के शासन में नुआपाड़ा ने भूख, बीमारी और आव्रजन की एक नई पहचान बनाई है। कांग्रेस उम्मीदवारों के नामांकन दाखिल करने के दिन से ही उत्साह था। नामांकन दाखिल करने के दिन, भाजपा उम्मीदवार वाहनों पर यात्रा कर रहे थे और भाजपा नेता वाहनों के अंदर यात्रा कर रहे थे। इससे साफ पता चलता है कि भाजपा में नीचे उतरने और लोगों को अपने साथ जुलूस निकालने की हिम्मत नहीं है। हम अपने उम्मीदवारों के साथ चल रहे थे। इससे साफ पता चलता है कि लोग किसके साथ हैं और उत्साह है। मुख्यमंत्री की बैठक में कोई लोग नहीं थे। भोजन खराब हो गया था, निवासियों द्वारा भोजन खाने के बाद 17 गायों की मौत हो गई। श्री हरिचंदन ने कहा कि भाजपा आगामी नुआपाड़ा चुनावों में इसका प्रभाव देखेगी। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपने उद्घाटन भाषण में, पीसीसी प्रवक्ता दा देबाशीष भुयान ने कहा कि हालांकि मानसून हमारे राज्य से लौट गया है और हल्की सर्दी शुरू हो गई है प्रेस कॉन्फ्रेंस में पूर्व विधायक और पीसीसी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष ललातेन्दु महापात्रा और पीसीसी मीडिया समन्वयक दीपक कुमार महापात्रा सहित अन्य लोग मौजूद थे।

आईएसआई एजेंट के लिए फर्जी पासपोर्ट तैयार करने वाला जमशेदपुर का मोनाजिर खान गिरफ्तार

पांच वर्ष के दरम्यान अर्जित संपत्ति व कारोबार देख मुंबई पुलिस स्थम्भिभूत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर , मुंबई पुलिस की स्पेशल सेल ने बड़ी कार्रवाई करते हुए मानगो चौक स्थित 'एशियन इंटरनेशनल' कार्यालय के संचालक मोनाजिर खान को गिरफ्तार किया है. आरोप है कि उसने पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के एक एजेंट के लिए फर्जी पासपोर्ट तैयार कराया था.

पुलिस सूत्रों के अनुसार, 26 अक्तूबर को गिरफ्तार किए जाने के बाद मोनाजिर को मानगो थाना लाया गया और 27 अक्तूबर को कोर्ट में पेश कर ट्रांजिट रिमांड पर मुंबई ले जाया गया. पुलिस ने उसके कार्यालय से चार हार्ड डिस्क, एक लैपटॉप, सीपीयू और कई संदिग्ध दस्तावेज जब्त किए हैं.

मोनाजिर खान का पुराना आपराधिक इतिहास रहा है. वर्ष 2017 में उसने एमएनएसी कार्यालय में घुसकर कंप्यूटर तोड़ने और हार्ड डिस्क चोरी करने की वारदात को अंजाम दिया था. उस मामले में उलीडीह थाना पुलिस ने उसे गिरफ्तार

कर जेल भेजा था, जहां से वह बाद में जमानत पर बाहर आया था.

पूरे नेटवर्क का खुलासा तब हुआ जब दिल्ली पुलिस ने आदिल हुसैन को और मुंबई पुलिस की स्पेशल सेल ने उसके भाई अख्तर हुसैन को गिरफ्तार किया. पूछताछ में दोनों ने मोनाजिर खान का नाम बताया. जांच में खुलासा हुआ कि मोनाजिर ने अख्तर हुसैन के लिए 'एलेक्जेंडर' नाम से फर्जी पासपोर्ट और वीजा तैयार कराया था.

सूत्रों का कहना है कि अख्तर हुसैन का नाम वर्ष 2004 के परमाणु जासूसी प्रकरण में भी सामने आया था, जिसमें उस पर भारत के परमाणु रहस्यों को बेचने का आरोप लगा था.

मोनाजिर चार भाइयों में सबसे छोटा है. उसका भाई दानिश खान मानगो स्थित 'स्काई वर्ल्ड ऑफिस' से लोगों को विदेश भेजने का काम करता है. बताया जाता है कि मोनाजिर विदेशी कंपनियों की भर्ती से जुड़ी जानकारी जुटाता था, जिसे दानिश नौकरी दिलाने के नाम पर लोगों से पैसे वसूलने में उपयोग करता था. स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, दोनों भाई पिछले 15 वर्षों से पासपोर्ट और वीजा का नेटवर्क चला रहे थे.

पुलिस जांच में यह भी सामने आया है कि जिस बिल्डिंग में मोनाजिर का कार्यालय है, वहीं उसके पिता और एक अन्य भाई की मोबाइल दुकान भी है. वहां से भी पुलिस ने कई दस्तावेज जब्त किए हैं. बताया जा रहा है कि दानिश ने पिछले पांच वर्षों में करोड़ों रुपये की संपत्ति अर्जित की है, जबकि मोनाजिर डिजिटल तकनीक और ऑनलाइन फर्जीवाड़े में माहिर था. इसी के जरिये उसने महंगी कारें, मकान और अन्य संपत्तियां खरीदी थीं

जमशेदपुर के जाकिरनगर क्षेत्र में मोनाजिर की गिरफ्तारी की जानकारी लोगों को नहीं थी. परिजनों ने भी किसी को कुछ नहीं बताया. यहां तक कि गिरफ्तारी के अगले दिन भी उसके कर्मचारी कार्यालय खोलने पहुंचे ताकि किसी को शक न हो. मुंबई पुलिस की स्पेशल सेल अब मोनाजिर से पूछताछ कर रही है कि उसके संपर्क किन-किन लोगों से थे और आईएसआई एजेंट के लिए पासपोर्ट बनवाने की साजिश में और कौन-कौन शामिल था.

प्रो . डॉ . रामदरश मिश्र जी (श्रद्धांजलि)

वो स्वर्णिम कलम जितने उकेरा हर एहसास
को शब्दों में पिरोकर,
लिखा बदलते हुए भारत के रंग-रूप को
भावों की स्याही में डूबो कर,
सृजन किएं कई भाषाओं व विधाओं में गीत
कविताएं ग़ज़लें उपन्यास,
महसूस किया हर मन को ज़मी से फलक
तक साथ- साथ में बहकर ।

चलाई कलम हर विषय पर भयहीन और
कहीं हर बात खुलकर,
पढ़ा ज्ञान चक्षुओं से मन की छुपी वेदना को
मातृभूमि से जुड़कर,
वो अंबर की छाया मिट्टी की सुंगध प्रकृति का
कण-कण उल्लास,
आ. प्रो. डॉ. रामदरश मिश्र जी ने की साहित्य
सेवा तन मन अर्पण कर ।

निर्मित किया व जिया एक युग रूपांतरण
धैर्यशील विनम्र रहकर,
101 वर्ष की आयु को सूर्य सम जिया विश्व
में प्रकाश पुंज बनकर,
दे गए ऐतिहासिक साहित्यिक विरासतें यादें
और किस्से बहुत खास,
पद्म श्री और अनेक श्रेष्ठ साहित्यिक
पुरस्कारों से विभूषित होकर ।

उनका अतुलनीय योगदान चिरकाल तक
गूँजता रहेगा संगीत बनकर,
ली 31 अक्टुबर 2025 को आख़िरी श्वास
प्रभु को धन्यवाद कहकर,
सिखा गये वो मत छोड़ना तुम मेहनत लग्न
साहस और आत्मविश्वास,
आ. मिश्र जी अमर हो गए सभी साहित्य
प्रेमियों के दिलों में बसकर ।

पदचिन्हों पर हम उनके चल पाएं हे माँ शारदा
हम तटस्थ होकर,
उपासना करें तुम्हारी सत्य की सशक्त दिव्य
ज्योत मन में जलाकर,
शब्द नहीं मिटेगें वो दास्तां कहेंगे वो
₹आनन्द₹ भाव भरेगें आस-पास,
कल छोड़ कुछ यादें विलीन हो जायेगें हम भी
मृत्यु की गोद में सोकर ।

- मोनिका डागा 'आनंद' , चेन्नई, तमिलनाडु

इसे बनें रहने दो यारों..।

मोती की माला बन
समर्पित रहूं
मेरी यही कामना है
संवाद से रिश्ते बने हुए
इसे बनें रहने दो यारों।
नाकारात्मक विचारों को
मत जगह दो मन में
निष्पक्ष व सच के लिए बोलो
रिश्ते जो है इसे बनें रहने दो यारों।
बातें तो बातें हैं कभी चुभती है
कभी स्नेह और प्यार के धागे में
बंधी हुई रिश्तों की मीठी बातें
इसे बनें रहने दो यारों।
हर समय अपनों का साथ रहे
छोटे हो यह बड़े हो रिश्ते खत्म ना हो
बोलचाल चलती रहेगी तो मन का मैल भी कट
जाएगा
मैत्रीपूर्ण संबंध बनें रहने दो यारों।।

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

कौशल विकास और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओज़ और PHE एजुकेशन ट्रस्ट की संयुक्त पहल

परिवहन विशेष न्यूज

आज के समय में जब सामाजिक परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण और मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता बढ़ती जा रही है, ऐसे में Global Confederation of NGOs और PHE Education Trust ने एक संयुक्त पहल शुरू की है। इस पहल का उद्देश्य है— समाज में कार्यरत युवाओं, स्वयंसेवकों और शिक्षार्थियों को कौशल आधारित शिक्षा, सामाजिक जागरूकता और नेतृत्व के माध्यम से सशक्त बनाना।

पहल के मुख्य उद्देश्य

सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में कार्यरत लोगों को नवीनतम कौशल और ज्ञान से सशक्त बनाना

पर्यावरण, कला, डिजिटल साक्षरता और भारतीय मूल्यों को एक समग्र मंच पर लाना

समाज में शिक्षा के माध्यम से सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन लाना

युवाओं में सामाजिक उत्तरदायित्व और नेतृत्व की भावना विकसित करना

विशेष पहलें

Paryavaran Paathshala – यह पहल पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, और स्वच्छता के लिए समुदायों को प्रेरित करती है। इस प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से नागरिकों में "Nature Learning" की भावना जगाई जाती है, ताकि वे पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें और अपनाएँ।

Rhythmshala – कला, संगीत और रचनात्मकता को जीवन की लय से जोड़ने वाली यह पहल युवाओं को "Art of Rhythm" सिखाती है। यह बताती है कि जीवन की हर सफलता एक संतुलित और लयबद्ध प्रयास का परिणाम होती है।

Cybershala – डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा और जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। यह कार्यक्रम बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों को Cyber Ethics, Online Safety और डिजिटल जिम्मेदारी के प्रति जागरूक बनाता है।

Sanskarshala – भारतीय संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों का उत्सव मनाने वाली यह पहल वर्कशॉप्स और अभियानों के माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का कार्य करती है। यह बताती है कि आधुनिकता में भी संस्कार ही हमारी पहचान हैं।

साझा दृष्टिकोण: शिक्षा से समाज, समाज से परिवर्तन

Global Confederation of NGOs और PHE Education Trust मिलकर एक ऐसे प्लेटफ़ॉर्म का निर्माण कर रहे हैं, जहाँ शिक्षा, कौशल और संवेदनशीलता के माध्यम से समाज में गहरा परिवर्तन लाया जा सके। इसके अंतर्गत ट्रेनिंग प्रोग्राम, वर्कशॉप्स, सामुदायिक परियोजनाएँ और युवा अभियानों का आयोजन किया जाएगा।

यह पहल न केवल कौशल विकास को प्रोत्साहित करेगी, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी और मानवीय मूल्यों के संरक्षण की दिशा में एक नई शुरुआत होगी।

"कौशल तभी सार्थक है जब वह समाज के उत्थान में योगदान दे।"

यही विचार इस संयुक्त पहल की आत्मा है — एक शिक्षित, कुशल, संवेदनशील और सशक्त भारत का निर्माण।

कोल्हान रक्षा संघ के संस्थापक स्व0 के सी हेम्ब्रम की पत्नी वेलमती से मिले अध्यक्ष डीबार जोंकों

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला ,कोल्हान की आवाज को तीन दशक पूर्व सात समंदर पार जेनेवा तक पहुंचाने वाले अपने समय के अद्वितीय पराक्रमी आदिवासी नेतृत्वकर्ता स्व के सी हेम्ब्रम की पत्नी से कोल्हान रक्षा संघ के वर्तमान अध्यक्ष डीबार जोंकों उनके आवास पर जाकर मिले । जहां उनको पुष्पगुच्छ तथा शोल ओढ़ाकर स्वागत किया गया वहीं पाच हजार की धनराशि प्रति माह देने की पेशकश की ।

कोल्हान रक्षा संघ के संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय के हेंब्रम की धर्म पत्नी श्रीमती बेलमती हेंब्रम ग्राम टेंटसरा प्रखंड टोटो पहुंचकर उनकी कुशल-क्षेम पुछा ।

सम्मान में उन्हें पुष्प गुछ एवं अंग वस्त्र देखकर सम्मानित किया । विदित हो कि स्वर्गीय हेम्बरम नेअपने जीवन मे कोल्हान क्षेत्र के लोगों के हक और अधिकार के लिए जागरूक करने का काम करते रहे । श्रीमती वेलमती हेम्बरम ने कोल्हान रक्षा संघ के पदाधिकारियों को कहा कि स्व के सी हेम्बरम के अधुरे कार्य एवं सपने को पूर्ण करने का आशीर्वाद उन्हें सदा मिले । इस अवसर पर श्रीमती हेम्बरम को कोल्हान रक्षा संघ के पदाधिकारियों तत्काल पाँच हजार रुपये सहायता दी साथ ही यह धनराशि हर माह संगठन की तरफ से उन्हें मिलता रहे इसका मार्ग प्रशस्त किया । इस अवसर संगठन के सचिव नुनाराम मांझी , रविंद्र मंडल , मानसिंह हेम्रम तथा उनकी पत्नी आदि साथ थे ।

ओडिशा में कई डेटा कंपनियां आएंगी: केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने पहली सेमीकंडक्टर निर्माण इकाई की आधारशिला रखी। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कहा, ₹डबल इंजन सरकार के तहत ओडिशा का विकास हो रहा है। सरकार का सपना ओडिशा में उच्च गुणवत्ता वाले उद्योग लाना था और यह सपना साकार हो रहा है।₹आने वाले वर्ष में सेमीकंडक्टर क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। राज्य सरकारें इलेक्ट्रॉनिक्स कारखाने लगाने के लिए आक्रामक रूप से तैयार रहें, केंद्र सरकार हर संभव सहयोग देने को तैयार है।केंद्रीय मंत्री अश्विनी बैष्णब ने आगे कहा, ₹राज्य सरकार से अनुरोध है कि वह डेटा सेंटर नीति लाए। इसमें सस्ती बिजली, परिवहन के लिए सड़कें और आवश्यक बुनियादी ढाँचा उपलब्ध कराने की

व्यवस्था करें। इस तरह, कई डेटा कंपनियाँ ओडिशा आएंगी।₹ केंद्रीय आईटी मंत्री अश्विनी बैष्णब ने जानकारी दी है कि उनके सम्मान में आईआईटी भुवनेश्वर में एक सेमीकंडक्टर लैब की स्थापना की गई है। आईआईटी भुवनेश्वर में 'नमो' सेमीकंडक्टर लैब की स्थापना की गई है। उद्योग और शिक्षा जगत को जोड़ने के उद्देश्य से इसे 5 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित किया गया है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी बैष्णब ने कहा कि इसके माध्यम से सेमीकंडक्टर क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाया जा सकता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023